

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी

वार्षिक प्रतिवेदन

ICAR – National Agricultural Research Management Academy

Annual Report

2016-17

भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी

वार्षिक प्रतिवेदन

2016 – 17

भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी

राजेन्द्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगाना, भारत

ICAR – National Academy of Agricultural Research Management

(ISO 9001 : 2008 Certified)

Rajendranagar, Hyderabad – 500 030, Telangana, India

<http://www.naarm.org.in>

उद्धरण :

नार्म, 2017. एनुअल रिपोर्ट (2016–17), भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM),
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद – 500 030, तेलंगाना

सम्पादन

रंजीत कुमार

डी. थम्मी राजू

पी. कृष्णन

फोटोग्राफी

एम. रवि

द्वारा प्रकाशित

निदेशक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM)

फोन : 040–24015070, फैक्स : 040–24015912, ई-मेल : director@naarm.org.in

डिजाइन

कृतिका क्रिएशन, हैदराबाद

प्रिन्टिड

वामसी आर्ट प्रिन्टर्स प्रा. लि. रेडहिल्स, लकडी का पुल, हैदराबाद

प्रस्तावना

कार्यकारी सारांश

1. नार्म – एक नजर में
2. क्षमता निर्माण
3. शैक्षणिक
4. अनुसंधान एवं परामर्शी परियोजनाएं
 - 4.1 अनुसंधान परियोजनाओं का विहंगावलोकन
 - 4.2 संस्थान द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं
 - 4.3 बाह्य वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं
 - 4.4 अनुबंधीय/परामर्शी अनुसंधान परियोजनाएं
5. नई पहल
 - 5.1 CAI
 - 5.2 TELAgE
6. नार्म में आयोजन
 - 6.1 विशिष्ट आयोजन
 - 6.2 किसानों तक पहुंच
 - 6.3 कृषि में महिलाओं का सशक्तिकरण
 - 6.4 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता अभियान
 - 6.5 खेलकूद, योग एवं ध्यान
 - 6.6 नार्म द्वारा की गई अन्य गतिविधियां
 - 6.7 नार्म में आगन्तुक
7. प्रकाशन एवं मान्यताएं
 - 7.1 प्रकाशन
 - 7.2 पुरस्कार
 - 7.3 मान्यताएं
 - 7.4 मीडिया में नार्म
8. कार्मिक

निदेशक की कलम से

डॉ. **Ch.** श्रीनिवास राव
निदेशक



मुझे, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) की वर्ष 2016–17 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है। अकादमी द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में मानव संसाधन की दक्षता और क्षमताओं को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। वर्ष 2016–17 के दौरान अकादमी द्वारा की गई पहलों का फोकस इन प्रयासों को आगे बढ़ाने पर केन्द्रित रहा।

मैं, डॉ. डी. रामा राव एवं डॉ. आर. कल्पना शास्त्री को बधाई देता हूँ जिन्होंने वर्ष 2016–17 के दौरान अकादमी के निदेशक के रूप में अपने नेतृत्व में विभिन्न पहलों को साकार रूप दिया। साथ ही मैं अकादमी के विजन और मिशन को आगे बढ़ाने में दर्शाए गए उत्साह व उमंग के लिए सभी संकाय सदस्यों, स्टाफ एवं छात्रों की सराहना करता हूँ।

जैसा कि हम शीघ्र ही 42वें वर्ष में प्रवेश करने वाले हैं, मैं नार्म परिवार के सभी सदस्यों के लिए सर्वाधिक मंगलमय वर्ष की कामना करता हूँ।

साभार,

सिएच श्रीनिवास राव

दिनांक : 10 जुलाई, 2017

स्थान : हैदराबाद

डॉ. कल्पना शास्त्री
संयुक्त निदेशक एवं
निदेशक (कार्यकारी) (31 मार्च, 2017 तक)



प्रस्तावना

इस वार्षिक प्रतिवेदन के माध्यम से पिछले वर्ष के दौरान अकादमी द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों को आपके साथ साझा करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। अकादमी ने अपनी सेवा के 41वें वर्ष में कदम रखा और अपने हितधारकों की जरूरतों की पूर्ति के लिए वैज्ञानिकों, संकाय सदस्यों, छात्रों तथा अनुसंधान नेतृत्व को कहीं अधिक संवेदी, अनुकियाशील एवं उत्तरदायी मानव संसाधन के रूप में विकसित करने के साथ-साथ राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के हितधारकों के विकास में उल्लेखनीय योगदान को जारी रखा । यह पिछली उपलब्धियों को बनाये रखने और अपनी प्रतिबद्ध गतिविधियों को जारी रखने का वर्ष था।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, अकादमी में क्षमता निर्माण गतिविधियां अपने शीर्ष स्तर तक पहुंचीं जैसा कि 60 से भी अधिक कस्टमाइज्ड क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के माध्यम से 2,798 कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अकादमी द्वारा नवोन्मेषी युक्तियों को विकसित करने और उन्हें प्रारंभ करने में अपने प्रयासों को जारी रखा गया यथा मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स (MOOCs); प्रशिक्षण प्रबंधन सूचना प्रणाली (TMIS) आदि; वार्षिक प्रशिक्षण योजनाएं; प्रौद्योगिकी संवर्धित प्रशिक्षण केन्द्र; कृषि नवोन्मेष के लिए केन्द्र; डाटा विश्लेषण; भाकृअनुप की प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन; जमीनी स्तर पर कृषि नवोन्मेष की स्काउटिंग; तथा कृषि-प्रसार प्रक्रियाओं एवं कृषि उद्यमशीलता को उत्प्रेरित करने के लिए विशिष्ट कार्यक्रमों का विकास करना । संबंधित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों में क्षमता निर्माण पहल के क्रियान्वयन को भाकृअनुप संस्थानों के सभी मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए कार्यक्रम को क्रियान्वित करके मजबूती प्रदान की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संस्थान ईएफसी की मौजूदा तैयारी के साथ मिलकर अपनी वार्षिक प्रशिक्षण योजनाओं को तैयार करने में मदद करना है। इन सभी युक्तियों का अभिप्राय कृषि अनुसंधान, शिक्षा तथा प्रौद्योगिकी प्रबंधन में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के संस्थानों और निजी जनों की क्षमताओं में संवृद्धि करना है।

अकादमी में अनुसंधान गतिविधियों का फोकस अनेक विशिष्ट एवं विषय आधारित परियोजनाओं पर केन्द्रित था जिनमें अनेक बाह्य वित्तीय सहायता प्राप्त कार्यक्रमों का अनुदानमाध्यम भी शामिल था। वर्ष 2016-17 के दौरान आठ बाह्य वित्तीय सहायता प्राप्त परियोजनाओं और प्रतिस्पर्धी मोड में तीन परामर्शी मोड परियोजनाओं पर कार्य किया गया जिससे जानकारी के विकास, नीतिगत पेपर, तथा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के लिए थिंक टैंक के रूप में अपनी भूमिका को बढ़ाने वाले अपने अनुसंधान प्रयासों में अकादमी की पहचान प्रमाणित होती है। गुणवत्तापूर्ण प्रकाशनों के माध्यम से योगदान करते हुए अकादमी का संकाय एवं परियोजना टीम वैज्ञानिक परिदृश्य में अपनी

उल्लेखनीय छाप छोड़ने में सफल रहीं। गुणवत्ता प्रकाशनों का अकादमी के क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में यथार्थ समय वाले मामला अध्ययन के रूप में उल्लेखनीय महत्व है जिससे ज्ञान संस्थान के रूप में अपने हितधारकों तक अकादमी की दृश्यता एवं पहुंच में सुधार आया।

अकादमी के उच्चतर शिक्षा कार्यक्रमों जैसे कि कृषि प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA) एवं कृषि में प्रौद्योगिकी प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDTMA) को उत्साहवर्धक मान्यता मिलना जारी रहा जो कि 100 प्रतिशत रोजगार प्राप्ति से प्रमाणित हुआ। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान जहां PGDMA को AICTE के अंतर्गत मान्यता मिली वहीं PGDTMA को यूजीसी मान्यता प्रदान की गई। शिक्षा प्रौद्योगिकी प्रबंधन पर स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGD - ETM) पर एक नए पाठ्यक्रम की भी डिजाइन विकसित की गई और निकट भविष्य में इसे प्रारंभ करने की अपेक्षा की जाती है।

गांव अंगीकरण और मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रमों जैसी अपनी आउटरिच गतिविधियों के माध्यम से अकादमी द्वारा प्रसार कार्यप्रणालियों को लागू करके कृषि ग्रामीण जीवन को रूपांतरित करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया गया। अंगीकृत गांवों में प्रैक्टिकल के साथ खेत अनुभव प्रशिक्षण पर एक कस्टम डिजाइन माड्यूल को फोकार्स प्रशिक्षण में एक अनिवार्य माड्यूल बनाया गया है और 92 से भी अधिक युवा वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स को अकादमी द्वारा अंगीकृत किए गए दो गांवों में कार्य करने का अवसर मिला है। अनुसंधान कार्यक्रमों को तैयार करते समय कहीं अधिक वास्तविक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु एफईटी माड्यूल में गांव कार्रवाई विकास योजना (VADP) को शामिल करने की एक अन्य नई पहल की गई जिसे जमीनी स्तर पर अपनाया जा सकता है।

रिपोर्टाधीन अवधि में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) अनेक प्रमुख घटनाओं का साक्षी बना जिसमें शामिल है : माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह का दौरा; भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति बैठक जोन IV की मेजबानी; संसदीय समिति का सफल दौरा; भाकृअनुप प्रायोजित फार्मर्स फर्स्ट परियोजना का शुभारंभ, आदि। बुनियादी पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों के वार्षिक पुनःमिलन (Reunion) की एक नई पहल की गई जो कि अकादमी के वार्षिक कार्यक्रमों का हिस्सा बन चुकी है। वर्ष 2016–17 भी 38वें एवं 39वें फोकार्स बैच की रजत जयंती समारोह का साक्षी बना जिसमें 50 से भी अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इसके अलावा, अकादमी के एक प्रमुख हितधारक के रूप में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) एल्मुनी की भूमिका को स्वीकार करते हुए अकादमी के स्थापना दिवस समारोह के भाग के रूप में एक एल्मुनी बैठक का आयोजन किया गया। यह आने वाले वर्षों में पुनः मिलन कार्यक्रमों के साथ-साथ एक वार्षिक कार्यक्रम होगा।

मुझे यह बताते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि अकादमी की स्टेट ऑफ दि आर्ट आधारभूत सुविधाएं यथा पुस्तकालय, TELAGE प्रयोगशाला, वीडियो लैब, जीआईएस लैब, ARIS लैब, मल्टीमीडिया लैब, कृषि नवोन्मेष के लिए केन्द्र तथा अतिथि गृहों के रूप में लॉजीस्टिक सेवाएं, सम्मेलन हॉल, एवं प्रशिक्षण सुविधाएं, खेलकूद परिसर आदि की एक विशिष्ट पहचान स्थापित है। अकादमी की सुविधाओं को लगातार समुन्नत किया जाता है और इन्हें उच्च स्तर का बनाये रखने के लिए प्रयास किए जाते हैं। अकादमी के वृक्षों से सराबोर हरे-भरे वातावरण के साथ-साथ पेशेवर माहौल ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनेक पड़ोसी संस्थानों और हैदराबाद के आसपास स्थित अन्य विभागों को इन सुविधाओं का उपयोग करने के प्रति आकर्षित किया है।

अकादमी द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में बेहतर शासनी प्रणाली प्रदान करने में अनेक नई पहलों का अनुपालन करना जारी रखा गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की नई स्थानान्तरण एवं तैनाती नीति में शामिल पारदर्शिता एवं प्रतिष्ठापित उद्देश्यपरकता को वैज्ञानिकों-प्रशिक्षुओं के बुनियादी पाठ्यक्रम हेतु हालिया विकसित ऑन-लाइन तैनाती प्रणाली का अंगीकरण करके लागू किया गया। इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के कार्मिक प्रभाग के साथ मिलकर 105वें फोकार्स वैज्ञानिक – प्रोबेशनर्स की तैनाती के दौरान सफलतापूर्वक लागू किया गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान प्रणाली के विभिन्न स्तरों से प्राप्त सुझावों को शामिल करते हुए वार्षिक प्रदर्शन आकलन रिपोर्ट (APAR) के अंतिम संशोधन को पूरा किया गया और उसे अनुमोदन व क्रियान्वयन के लिए प्रस्तुत किया गया। M & E प्रणालियों को सुचारु रूप देने के प्रशासन के प्रयासों के फलस्वरूप FMS/MIS प्लेटफार्म के अंतर्गत सभी रिकॉर्ड को अद्यतन बनाने में मदद मिली। इस वर्ष संस्थान में लगभग 20 नए वैज्ञानिकों, संभागाध्यक्ष तथा 12वीं योजना के दौरान सृजित पदों पर अन्य कार्मिकों की नियुक्ति हुई। यह बताते हुए संतोष का अनुभव हो रहा है कि अपनी स्थापना के बाद से अकादमी में अब तक के सबसे अधिक 35 वैज्ञानिकों की तैनाती है। यह अपेक्षा की जाती है कि शेष पदों पर भी तैनाती शीघ्र ही कर ली जाएगी। पुनः वर्ष 2016-17 के दौरान विभिन्न पदानुक्रम स्तरों व संवर्गों के लगभग 20 प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्मिकों को सफलतापूर्वक अगले उच्चतर पदों में पदोन्नत किया गया और लगभग सभी लम्बित पदोन्नति एवं एमएसीपी के मामलों को निपटाया गया। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि पेंशन एथारिटी इकाई जिसे अप्रैल, 2016 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) में स्थानान्तरित किया गया था, ने पूरी तरह से कार्य करना प्रारंभ कर दिया है और इससे लगभग 700 भाकृअनुप पेंशनभोगियों को लाभ पहुंचाया जा रहा है।

अकादमी द्वारा भारत सरकार के नए सुधारों और अग्रणी कार्यक्रमों की नवीन पहलों जैसे कि स्वच्छ भारत, मेरा गांव – मेरा गौरव, डिजिटल इण्डिया एवं स्टार्ट-अप इंडिया को सफलतापूर्वक लागू किया गया। नकदरहित लेन-देन को बढ़ावा देने की दिशा में अकादमी द्वारा की गई पहल को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने मान्यता प्रदान करते हुए भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (NAARM) को रुपये दो लाख का नकद पुरस्कार प्रदान किया। अकादमी द्वारा नए क्षेत्रों यथा आरटीआई के लिए ई-गवर्नेंस, खरीद एवं वित्तीय प्रबंधन में जागरूकता कार्यक्रमों की भी पहल की गई।

डॉ. सत्य नारायण जटिया, माननीय सांसद, राज्य सभा की अध्यक्षता में संसदीय राजभाषा समिति ने अकादमी की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों की सराहना की। अकादमी को वर्ष 2016 के लिए TOWLIC पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

अकादमी में दिनांक 3 दिसम्बर, 2016 को कृषि शिक्षा दिवस मनाया गया जिसमें स्कूल व कॉलेज के 300 से भी अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और इस अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं व आयोजन में भागीदारी की। डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

अकादमी को पूरे वर्ष परिषद से बाधारहित एवं सकारात्मक सहयोग प्राप्त हुआ। उभरती चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में अकादमी को कहीं अधिक जीवंत एवं उत्तरदायी बनाने में प्रचुर सहयोग एवं निरन्तर प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन देने के लिए हम, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप); तथा श्री छबिलेन्द्र राऊल, अपर सचिव (डेयर) एवं सचिव (भाकृअनुप) के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही हम अकादमी की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग देने के लिए डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप के आभारी हैं। 30 सितम्बर, 2016 तक निदेशक के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान अकादमी की गतिविधियों को प्रेरक नेतृत्व प्रदान करने के लिए हम डॉ. डी. रामा राव के हार्दिक आभारी हैं।

इस वार्षिक प्रतिवेदन को मूर्तरूप प्रदान करने में किए गए अथक प्रयासों के लिए मैं, सम्पादन मण्डल के सदस्यों डॉ. रंजीत कुमार, डॉ. डी. थम्मी राजू एवं पी. कृष्णन की सराहना करती हूं। इस संबंध में सभी संभागों व अनुभागों के अध्यक्षों द्वारा दिया गया सहयोग सराहनीय रहा।

मुझे आशा एवं विश्वास है कि इस वार्षिक प्रतिवेदन में प्रस्तुत सूचना हितधारकों के लिए उपयोगी होगी। आने वाले वर्षों में कृषि विकास की दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मिशन को हासिल करने में अकादमी द्वारा एक चुनौतीपूर्ण भावी भूमिका निभाने के संबंध में मैं पूरी तरह आशान्वित हूँ।

दिनांक : 10 जुलाई, 2017

स्थान : हैदराबाद

(आर. कल्पना शास्त्री)

संयुक्त निदेशक

कार्यकारी सारांश

परिवर्तनशील वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) को गतिशीलता प्रदान करने के कार्य में अकादमी उत्कृष्टता के पांचवें दशक की देहरी पर है। अकादमी की सुदृढ़ता प्रशिक्षण, अनुसंधान तथा शिक्षा और परामर्शी गतिविधियों के अनूठे मिश्रण में निहित है जो कि एक-दूसरे से परस्पर जुड़ी हुई हैं। अकादमी द्वारा नेतृत्व क्षमता एवं शासन प्रणाली में सुधार लाने; नवोन्मेष एवं टिकाऊ विकास हेतु विज्ञान व प्रौद्योगिकी को गतिशीलता प्रदान करने; नवोन्मेष एवं शासन प्रणाली के प्रोत्साहन हेतु सूचना एवं संचार का प्रबंधन करने; बाजार चालित वातावरण में प्रसार प्रणाली का निर्माण करने; संकाय उत्कृष्टता एवं शिक्षण प्रदर्शन में सुधार करने और उच्चतर सम्यक प्रगति के लिए कृषि व्यवसाय प्रणाली को उत्प्रेरित करने हेतु राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) की क्षमताओं को मजबूती प्रदान करने की रणनीतियां अपनाई जाती हैं। अकादमी द्वारा लगातार स्वयं को नयापन प्रदान किया जाता है और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) तथा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के संस्थानों की बदल रही जरूरतों के अनुसार स्वयं को तेजी से अनुकूल बनाया जाता है।

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में तथा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के अन्य संस्थानों में वैज्ञानिकों एवं अनुसंधान लीडरों और कृषि व्यवसाय प्रबंधकों की नई पीढ़ी के विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया गया है। साथ ही अकादमी द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में क्षमताओं को बढ़ाने हेतु अनेक नई नीतियों, संस्थागत क्रियाविधियों और पहल की सुविधा प्रदान की गई जैसे कि अनुसंधान, शिक्षा तथा प्रसार प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, सूचना प्रबंधन, बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन, प्रौद्योगिकी प्रबंधन, शिक्षा प्रौद्योगिकी एवं ई-लर्निंग, तथा अनेक अन्य क्षेत्र जिनका विकास के लिए कृषि अनुसंधान पर प्रभाव पड़ता है।

भावी मांग को पूरा करने और शेष विश्व के साथ गति बनाये रखने के लिए प्रशिक्षण, मानव प्रगति का एक प्रमुख संघटक रहा है। वर्ष 2016-17 के दौरान अकादमी द्वारा 60 क्षमता विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनसे राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के कुल 2,798 प्रोफेशनल लाभान्वित हुए। इन कार्यक्रमों में शामिल थे : अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम; कृषि अनुसंधान प्रणाली (ARS) प्रोबेशनर्स और कृषि विश्वविद्यालयों (AUs) के नव-नियुक्त शिक्षकों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के प्रशासनिक अधिकारियों (AOs) व वित्त व लेखा अधिकारियों (F&AOs) के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम; नेतृत्व विकास; प्रबंधन विकास; पुनश्चर्या पाठ्यक्रम; कार्यशालाएं; ऑफ-कैम्पस कार्यक्रम और ई-लर्निंग पाठ्यक्रम।

बांग्ला देश कृषि विश्वविद्यालय के पांच अधिकारियों के लिए बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन पर एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के प्रवेश स्तरीय संकाय और अधिकारियों के लिए कुल चार बुनियादी पाठ्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें शामिल हैं :- (i) 92 एआरएस वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स के लिए कृषि अनुसंधान सेवा हेतु दो बुनियादी पाठ्यक्रम (फोकर्स); (ii) कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए एक बुनियादी पाठ्यक्रम (FOCFAU) जिसमें 57 प्रवेश स्तरीय शिक्षकों ने भाग लिया; एवं (iii) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 32 नव-नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों/वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए एक बुनियादी पाठ्यक्रम। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 25 नव-नियुक्त निदेशकों/सहायक महानिदेशकों के लिए भी नेतृत्व विकास पर दो कार्यकारी विकास कार्यक्रम चलाए गए। प्रशिक्षण नीति के भाग के तौर पर, भाकृअनुप संस्थानों के 97 मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों और भाकृअनुप के 128 तकनीकी अधिकारियों के लिए दक्षता संवर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अकादमी को ई-कोर्स की सुविधा प्रदान करने के संबंध में उल्लेखनीय सफलता मिली है। प्रभावी शिक्षण के लिए दक्षता संवर्धन पर दूसरे मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स (MOOC) को राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) से रिकॉर्ड 1006 सदस्यों का पंजीकरण हासिल हुआ।

अकादमी द्वारा पूर्णतया आवासीय प्रबंधन (कृषि) में दो वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा – पीजीडीएमए की सुविधा प्रदान की जाती है। वार्षिक रिपोर्ट अवधि के दौरान, 22 छात्रों को शिक्षा पूरी होने के उपरान्त अनेक बहुराष्ट्रीय कृषि उद्योगों में सफलतापूर्वक रोजगार मिला। कुल 31 छात्रों को पीजीडीएमए (2016-18) के आठवें बैच के लिए पंजीकृत किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, विभिन्न संगठनों द्वारा आयोजित शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में अनेक छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार जीते।

क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के साथ-साथ, अनुसंधान भी अकादमी की प्रमुख गतिविधियों में से एक है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, 20 परियोजनाएं प्रचालन में थीं जिनमें 9 परियोजनाएं संस्थान वित्त पोषित और 8 परियोजनाएं बाह्य वित्त पोषित, भाकृअनुप तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित थीं। इसके अलावा, तीन परामर्शी परियोजनाएं यथा तम्बाकू बोर्ड, RGMVP- बरेली और RIS तथा MoEFCC प्रत्येक द्वारा एक-एक परियोजना प्रायोजित की गई थी। अकादमी द्वारा सहकर्मी द्वारा समीक्षित कुल 106 पेपर, लेख तथा बुलेटिन प्रकाशित किए गए। वैज्ञानिकों की संख्या के संदर्भ में प्रकाशनों की संख्या का अनुपात 1.56 था। पिछले वर्ष की तुलना में 57 प्रतिशत अधिक प्रकाशन थे। अकादमी के संकाय द्वारा प्रकाशित 50 प्रतिशत से भी अधिक अनुसंधान पेपर अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर प्रकाशित कराए गए।

अकादमी द्वारा भारत सरकार की विभिन्न पहलों को साकार करने की दिशा में अनेक प्रयास किए गए और बहु आयामीय रणनीतियों को अपनाया गया।

- भारत सरकार के निर्देशों के अनुसरण में, अकादमी द्वारा 'डिजिटल भारत सप्ताह', 'राजभाषा पखवाड़ा (हिन्दी पखवाड़ा)', 'सतर्कता सप्ताह', 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस', 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस', 'सद्भावना दिवस', राष्ट्रीय एकता दिवस', 'संविधान दिवस' एवं 'कृषि शिक्षा दिवस' आदि मनाया गया।
- दिनांक 5 दिसम्बर, 2016 को विश्व मृदा दिवस का आयोजन अकादमी द्वारा अंगीकृत किए गए गांवों यथा तलासिंगारम एवं एस. लिंगोटम में मनाया गया जहां किसानों को प्राकृतिक प्रणाली के एक प्रमुख संघटक के रूप में मृदा का महत्व बताते हुए उन्हें मृदा स्वास्थ्य आधारित परामर्श सेवाएं प्रदान की गईं।
- स्टार्ट-अप इंडिया अभियान पहल के भाग के रूप में पूर्वोत्तर क्षेत्र सहित देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनेक उद्यमशीलता विकास/आधारीय कैम्प एवं जागरूकता कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इच्छुक कृषि उद्यमियों को अकादमी में कृषि नवोन्मेष केन्द्र के तत्वावधान के अंतर्गत इनक्यूबेशन सहयोग प्रदान किया गया।
- अकादमी के सभी हितधारकों को शामिल करते हुए पूरी लग्न एवं उत्साह के साथ स्वच्छता गतिविधियां चलाई गईं। स्टाफ, पीजीडीएमए और निकटवर्ती स्कूलों के छात्रों के लिए तथा साथ ही क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों के लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ताकि सभी में 'स्वच्छता' संदेश का प्रसार हो सके।
- सरकार की ई-मार्केटप्लेस (GeM) की पूर्ण क्षमता को महसूस करते हुए अकादमी को ई-मार्केटप्लेस (GeM) के साथ पंजीकृत किया गया और अपनी नियमित खरीद में इसके उपयोग को बढ़ाने के लिए जरूरी कदम उठाए गए।
- भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) द्वारा अकादमी में नकदरहित/डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए अनेक कदम उठाए गए। अकादमी के अतिथि गृहों में स्वाइप मशीनें लगाई

गई। नकदरहित लेन-देन को लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अकादमी को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का दो लाख रूपये का नकद पुरस्कार मिला।

अकादमी के विजन 2050 के अनुसरण में अपने अग्रणी कार्यक्रमों का पुनर्गठन करने के भाग के तौर पर, पहला 'फोकर्स की पुनः संरचना' एवं दूसरा 'वर्ष 2030 के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन रणनीतियां' विषयों पर दो ब्रेनस्टॉर्मिंग सत्र आयोजित किए गए और साथ ही इन्हें अकादमी के चालू कार्यक्रमों में भी आपस में जोड़ा गया।

नार्म- एक अवलोकन

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR- NAARM) की स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा सन् 1976 में हैदराबाद में की गई थी। अकादमी के प्रमुख अधिदेशों में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के लिए कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा प्रणालियों में क्षमता निर्माण करना और नीतिगत परामर्श प्रदान करना शामिल है। इन अधिदेशों को पूरा करने के लिए, अकादमी द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में अनुसंधानकर्मियों, शिक्षाविदों, प्रसार कर्मिकों, स्कॉलरों तथा अन्य हितधारकों के लिए अनेक क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। अकादमी का प्रयास राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में नवोन्मेष के लिए वैयक्तिक एवं संस्थागत क्षमता को बढ़ाना है। राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा एवं आर्थिक प्रगति में कृषि अनुसंधान की रणनीतिपरक महत्ता पर विचार करते हुए कहीं अधिक बहुलवादी नवोन्मेष प्रणाली के रूप में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के रूपान्तरण हेतु नेतृत्व, शासन एवं नवोन्मेष जैसे विषय एक पहली आवश्यकता के रूप में उभर रहे हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखकर, अकादमी द्वारा अपने विजन, मिशन एवं अधिदेश को विकसित किया गया है।

1.1 विजन एवं मिशन

विजन

निरन्तर नवोन्मेष अथवा इनोवेशन करते हुए बदलाव के प्रति अनुकूल बनाने में राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) को समर्थ बनाने वाला एक ग्लोबल जानकारी वाला संस्थान ।

मिशन

क्षमता सुदृढीकरण, शिक्षा, अनुसंधान, परामर्शी सेवा एवं नीतिगत सहयोग के माध्यम से राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) की नेतृत्व, शासन एवं इनोवेशन क्षमताओं को बढ़ाना ।

1.2 संगठन एवं प्रबंधन

विजन, मिशन और अधिदेशों के अनुरूपण में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) को छः संभागों में संगठित एवं व्यवस्थित किया गया है।

1. कृषि व्यवसाय प्रबंधन (ABM)
2. शिक्षा प्रणाली प्रबंधन (ESM)
3. प्रसार प्रणाली प्रबंधन (XSM)
4. मानव संसाधन प्रबंधन (HRM)
5. सूचना एवं संचार प्रबंधन (ICM)
6. अनुसंधान प्रणाली प्रबंधन (RSM)

अधिदेश

1. क्षमता विकास, अनुसंधान एवं नीतिगत परामर्श द्वारा इनोवेशन प्रबंधन में वैयक्तिक एवं संस्थागत क्षमताओं में वृद्धि करना;
2. राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) एवं मानव पूंजी के रणनीतिपरक प्रबंधन की सुविधा प्रदान करने के लिए थिंक टैंक के रूप में सेवा करना

संस्थान प्रबंधन समिति (IMC)	निदेशक		अनुसंधान परामर्श समिति (RAC)
संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC)	संयुक्त निदेशक		
संभाग	लॉजीस्टिक सहयोग	प्रशासन	वित्त
कृषि-व्यवसाय प्रबंधन	अकादमिक सेल	प्रशासन अनुभाग	वित्त व लेखा परीक्षा अनुभाग
शिक्षा प्रणाली प्रबंधन	प्रेस व प्रकाशन इकाई	राजभाषा सेल	पेंशन सेल
प्रसार प्रणाली प्रबंधन	केन्द्रीय सेवा इकाई		
मानव संसाधन प्रबंधन	वीआईपीएल		
सूचना व संचार प्रबंधन	अतिथि गृह		
अनुसंधान प्रणाली प्रबंधन	पुस्तकालय		
	कम्प्यूटर एवं नेटवर्क सेवाएं		

चित्र 1.1 : अकादमी का संगठनात्मक चार्ट

1.2.1 अनुसंधान परामर्श समिति (RAC)

वर्ष 2013-2016 के लिए भाकृअनुप - राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) की अनुसंधान परामर्श समिति (RAC) का संयोजन तालिका 1.1 में प्रस्तुत है।

तालिका 1.1 : दिनांक 19 दिसम्बर, 2016 तक नाम की अनुसंधान परामर्श समिति (RAC)

डॉ. मृत्युंजय पूर्व राष्ट्रीय निदेशक एनएआईपी, जी-502, एनसीसी अर्बन मीडोज-II , येलाहंका - डोड्डाबल्लापुर रोड, बंगलुरु - 560 064	अध्यक्ष
डॉ. के. सुधा राव पूर्व निदेशक एवं सदस्य सचिव कर्नाटक ज्ञान आयोग एस-2, स्टैनबरी कोर्ट अपार्टमेंट्स, 60 फीट रोड, संजय नगर, बंगलुरु - 560 094	सदस्य
डॉ. तालम वी. राव अध्यक्ष, TVRLS एवं सहायक प्रोफेसर आईआईएम अहमदाबाद, 603, पार्श्व भवन, एसजी रोड, बोडकदेव, अहमदाबाद - 380 015	सदस्य
डॉ. एम.बी. चेट्टी सहायक महानिदेशक (मानव संसाधन विकास) शिक्षा प्रभाग, भाकृअनुप., कैब-2, पूसा परिसर, नई दिल्ली - 110 012	सदस्य
डॉ. ए.एस. राव अध्यक्ष, इंडियन इनोवेटर्स एसोसिएशन, नई दिल्ली फ्लैट नं. 12, ब्लॉक नं. 11, केन्द्रीय विहार, मियांपुर, हैदराबाद - 500 049	सदस्य
मेजर जनरल डॉ. आर. सिवा कुमार (सेवानिवृत्त) जीसी मनिक्कांथा इस्टेट, गौतम नगर,	सदस्य

मल्काजगिरी, हैदराबाद – 500 047	
डॉ. डी. रामा राव निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) हैदराबाद – 500 030	सदस्य
डॉ. आर. कल्पना शास्त्री संयुक्त निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) हैदराबाद – 500 030	सदस्य सचिव

ख) वर्ष 2016–2019 के लिए भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM)की अनुसंधान परामर्श समिति (RAC) का संयोजन तालिका 1.2 में प्रस्तुत है।

तालिका 1.2 : दिनांक 20 दिसम्बर, 2016 से भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) की अनुसंधान परामर्श समिति का संयोजन

प्रो. सुधीर कुमार सोपोरी पूर्व कुलपति, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय	अध्यक्ष
डॉ. के.सी. बंसल पूर्व निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR - NBPGR), पूसा, नई दिल्ली – 110 012	सदस्य
डॉ. पी.के. जोशी निदेशक, दक्षिण एशिया इंटरनेशनल खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI), नई दिल्ली	सदस्य
डॉ. सी. शम्भू प्रसाद प्रोफेसर, ग्रामीण प्रबंधन संस्थान, आणंद, गुजरात	सदस्य
डॉ. ईश्वर मूर्ति प्रोफेसर, निर्णय विज्ञान एवं सूचना प्रणालियां, आईआईएम – बंगलुरु	सदस्य
डॉ. आर.के. सामन्त पूर्व निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) हैदराबाद	सदस्य
निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) हैदराबाद	सदस्य
उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि भवन, नई दिल्ली	सदस्य
श्री वेंकटेश्वरु वसन्थापु राजेन्द्रनगर, हैदराबाद	सदस्य

श्री एम. धर्म राव पूर्व विधायक, हस्तिनापुर कॉलोनी हनुमाकोण्डा जिला, तेलंगाना	सदस्य
डॉ. एस.के. सोम अध्यक्ष, आईसीएम संभाग, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) हैदराबाद	सदस्य सचिव

1.2.2 संस्थान प्रबंधन समिति (IMC)

दिनांक 1 सितम्बर, 2016 से भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) की संस्थान प्रबंधन समिति में निम्नलिखित अधिकारियों को नामित किया गया।

तालिका 1.3 : संस्थान प्रबंधन समिति (IMC)

निदेशक भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) हैदराबाद	अध्यक्ष
कृषि निदेशक कृषि विभाग, तेलंगाना सरकार	सदस्य
कृषि निदेशक कृषि विभाग आन्ध्र प्रदेश सरकार	सदस्य
अनुसंधान निदेशक पीजेटीएसएयू, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद	सदस्य
श्री वेंकटेश्वर्लू वसन्थापु बीएसएन रेड्डी कॉम्प्लेक्स, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद, तेलंगाना	सदस्य
श्री एम. धर्म राव पूर्व विधायक, हस्तिनापुर कॉलोनी, जिला – हनुमाकोण्डा तेलंगाना	सदस्य
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) राजेन्द्रनगर, हैदराबाद – 500 030	सदस्य सचिव

1.3 सम्पर्क/नेटवर्किंग/सहयोग

अकादमी के रूप में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के 108 अनुसंधान संस्थानों तथा 75 कृषि विश्वविद्यालयों (AUs) का एक मजबूत नेटवर्क है और अकादमी द्वारा इन संस्थानों, कृषि-व्यवसाय उद्योगों, वैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों का क्षमता निर्माण करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। अकादमी का नेटवर्क विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ स्थापित है।

राष्ट्रीय संस्थान/संगठन

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थान, केन्द्रीय एवं राज्य कृषि विश्वविद्यालय;
2. कृषि विज्ञान केन्द्र (KVKs)

3. भारत सरकार के विभिन्न विभाग यथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग (DST); जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (DBT); राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता विकास बोर्ड (NSTEB); BIRAC एवं नीति (नेशनल इंस्टिट्यूशन फॉर ट्रांसफार्मिंग इंडिया) आयोग
4. हैदराबाद विश्वविद्यालय; उस्मानिया विश्वविद्यालय; जवाहर लाल नेहरू प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय (JNTU); EEI, तथा वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) एवं हैदराबाद में स्थित भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (ICMR) के संस्थान
5. MoEF & CC, NBA, पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV & FRA); एवं राज्य जैव-विविधता बोर्ड
6. हैदराबाद में स्थित प्रबंधन संस्थान यथा एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया (ASCI); इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (ISB); राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन मैनेजमेंट) (MANAGE); राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (NIRD & PR); एवं सार्वजनिक उद्यम संस्थान (IPE); तथा देश के अन्य हिस्सों में स्थित आईआईएम-अहमदाबाद; आईआईएम – लखनऊ एवं एनआईएम
7. राज्य कृषि विभाग (तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश)
8. सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन (कृषि इनपुट कम्पनीज, सेवा कम्पनीज, आदि)
9. गैर सरकारी संगठन (NGOs)
10. अन्य संगठन यथा राष्ट्रीय इनोवेशन फाउण्डेशन, फिक्की, CII, आदि

अंतर्राष्ट्रीय संगठन

1. सीजीआईएआर संस्थान (IFPRI, CIMMYT, ICRISAT, IRRI, आदि)
2. विश्व बैंक, एफएओ, संयुक्त राष्ट्र संगठन के अन्य विभाग
3. डिपार्टमेंट ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेन्ट (DFID, UK)
4. सार्क कृषि केन्द्र (SAC)
5. दक्षिण एशियन देशों के NARS यथा बांग्लादेश एग्रीकल्चरल रिसर्च काउन्सिल (BARC); नेपाल एग्रीकल्चरल रिसर्च काउन्सिल (NARC); पाकिस्तान एग्रीकल्चरल रिसर्च काउन्सिल (PARC); एवं अफगानिस्तान, श्रीलंका एवं अन्य एशियाई देशों में स्थित अन्य एनएआरएस संस्थान
6. अन्य अफ्रीकन एवं दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों यथा केन्या, माली, तंजानिया, नाइजीरिया, मलावी, लाइबेरिया, एवं फिलिपाइन्स में एनएआरएस
7. संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) में अग्रणी लैण्ड ग्रांट एवं राज्य विश्वविद्यालय तथा यूरोप, ऑस्ट्रेलिया व अन्य विकासशील एवं विकसित देशों में अन्य विश्वविद्यालय

1.4 अवसंरचना एवं सुविधाएं

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM), हैदराबाद शहर से 18 किलोमीटर दूर राजेन्द्रनगर में (17° 18' 49" N अक्षांश तथा 78° 24' 42" E देशान्तर) स्थित है। अकादमी लगभग 50 हेक्टेयर के हरे-भरे एवं शांत, पेड़-पौधों से आच्छादित विशाल परिसर में स्थित है जो अन्य प्रसिद्ध सरकारी संस्थानों यथा राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), NIRD & PR एवं PJTSAU से घिरा हुआ है।

अकादमी में आधुनिक ऑडियो-वीडियो सहायता से युक्त Wi-Fi की उत्कृष्ट सुविधाओं वाले व्याख्यान हॉल, सभागार, सम्मेलन हॉल के साथ बहु-सुसज्जित बुनियादी सुविधाएं हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, सेन्टर फॉर एग्री-इनोवेशन, टेक्नोलॉजी इनवैन्स्टिगेशन लैबोरेट्री, तथा कम्प्यूटर लैबोरेट्रीज का सुदृढीकरण किया गया।

अकादमी में चार अतिथि गृह यथा हॉल्स ऑफ रेजिडेन्स, वैज्ञानिक आवास, संकाय हाउस तथा अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह हैं जिनमें लगभग 400 व्यक्तियों के रहने की क्षमता है। अकादमी के स्पोर्ट्स स्टेडियम में बड़ा मैदान, महिलाओं व पुरुषों के लिए दो इंडोर बैडमिंटन कोर्ट, इंडोर टेबल टेनिस कक्ष, योग कक्ष तथा जिम्नेजियम है। इसके साथ ही यहां आउटडोर वॉलीबाल, टेनिस एवं बॉस्केट बॉल कोर्ट भी उपलब्ध है। इन सुविधाओं के अलावा, संस्थान परिसर में एक बहु सुसज्जित स्वास्थ्य केन्द्र भी है जिसमें कैम्पस में रहने वालों, प्रशिक्षुओं और भाकृअनुप के 600 से भी

अधिक पेंशनधारकों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाती है। संस्थान में समय-समय पर स्वास्थ्य कैम्प और रक्तदान कैम्प का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2016-17 में, आठ बहु विशेषता स्वास्थ्य कैम्प और एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रिपार्टाधीन अवधि के दौरान, जागरूकता अभियान के भाग के रूप में और बेहतर जीवनचर्या प्रबंधन के लिए शहर में स्थित प्रतिष्ठित सुपर स्पेशलिटी हस्पतालों के विशेषज्ञ डॉक्टरों को आमंत्रित करके समय समय पर स्वास्थ्य संबंधी वार्ता आयोजित की गई ।

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM) के पुस्तकालय में 30,585 से भी अधिक पुस्तकों, 74 विदेशी पत्रिकाओं (हार्ड प्रति), 18 अंतर्राष्ट्रीय ऑन-लाइन पत्रिकाओं, 78 भारतीय पत्रिकाओं तथा 13 ऑन-लाइन डाटाबेस यथा EBSCO, ABI-Inform, इंडियास्टैट (Indiastat), कम्प्यूटिटीज एवं इकोनॉमिक आउटलुक का संग्रहण है। पुस्तकालय के अनेक प्रकाशन सीडी, वीसीडी जैसे डिजिटल प्रारूप में हैं और इसकी अपनी डिजिटल रिपोजिट्री (Eprints@naarm) भी है। अकादमी, CeRA की सदस्य भी है और इसकी पहुंच CSIRO, स्प्रिंजर तथा Open-Jate आदि के माध्यम से पत्रिकाओं व डाटाबेस तक है। ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर 'कोहा (Koha)' की मदद से पूरी तरह से डिजिटल प्रारूप में पुस्तकालय का प्रबंध किया जाता है। अकादमी के पास ऑन-लाइन पेटेंट सर्च प्रदाताओं, जीआईएस सॉफ्टवेयर एवं अन्य सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर की समृद्ध रिपोजिट्री है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के आदेश संख्या एफआईएन/1/153/88/पेंशन दिनांक 25 अगस्त, 2015 द्वारा दिनांक 16 मार्च, 2017 से पेंशन प्राधिकृत इकाई का स्थानान्तरण भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA) से भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM), हैदराबाद में किया गया है। इस इकाई द्वारा हैदराबाद में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों नामतः भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA); भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR); भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIMR); भाकृअनुप – भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOR); भाकृअनुप – राष्ट्रीय मीट अनुसंधान केन्द्र (ICAR - NRC on Meat); भाकृअनुप – पोल्ट्री अनुसंधान संस्थान (ICAR - DPR); भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR-NAARM); तथा भाकृअनुप – अटारी जोन-5 के सभी वर्गों के कर्मचारियों एवं परिवारों के संबंध में मृत्यु/सेवानिवृति लाभ प्राधिकृत किया जाता है।

भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद से अकादमी में कुल 550 पेंशन फाइलें प्राप्त की गईं। वर्ष 2016-17 के दौरान, अकादमी द्वारा 42 नए पेंशन मामलों को और 2006 से पहले वाले कुल 26 पेंशनधारकों की संशोधित पेंशन मामलों को आगे बढ़ाया गया।

1.5 मानव संसाधन (दिनांक 31.03.2017 के अनुसार)

विभिन्न श्रेणियों में दिनांक 31 मार्च, 2017 के अनुसार संवर्ग संख्या को तालिका 1.4 में दर्शाया गया है।

तालिका 1.4 : अकादमी में मानव संसाधन

श्रेणी	स्वीकृत संख्या	तैनाती	रिक्त पद
वैज्ञानिक – आरएमपी	02	01	01
वैज्ञानिक – संकाय	60	34	26
तकनीकी	43	37	06
प्रशासनिक	49	39	10
कुशल सहायी स्टाफ	39	33	06
कुल	193	144	49

1.6 बजट आवंटन एवं व्यय

बजट आवंटन एवं व्यय (दिनांक 31.03.2017 के अनुसार) को तालिका 1.5 एवं 1.6 में दर्शाया गया है।

तालिका 1.6 : योजना आकलन एवं व्यय विवरण (लाख रुपये में)

लेखा शीर्ष	अंतिम आकलन	व्यय
क. अनुदान सहायता – पूंजी		
वर्क्स	279.24	279.24
उपकरण	286.56	286.56
सूचना प्रौद्योगिकी	69.09	69.09
फर्नीचर एवं फिक्सचर	52.61	52.61
पुस्तकें एवं पत्रिकाएं	62.50	62.50
कुल पूंजी	750.00	750.00
ख. अनुदान सहायता – वेतन (राजस्व)		
स्थापना प्रभार		
1.स्थापना प्रभार	218.50	218.50
2.मजदूरी	0	0
3.समयोपरि भत्ता (OTA)	0	0
कुल वेतन	218.50	218.50
अनुदान सहायता – सामान्य (राजस्व)		
पेंशन एवं अन्य लाभ	0	0
यात्रा भत्ता	48.50	48.48
अनुसंधान एवं ऑपरेशनल व्यय	124.65	124.62
प्रशासनिक व्यय	289.80	289.76
मानव संसाधन विकास	23.50	23.50
विविध व्यय	38.55	38.51
कुल अनुदान सहायता – सामान्य	525.00	524.87
समग्र योग (पूंजी + वेतन + सामान्य)	1493.50	1493.37

1.7 संसाधन सृजन

अपने ऑफ-कैम्पस एवं प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा अन्य गतिविधियों के माध्यम से अकादमी द्वारा सृजित राजस्व का विवरण तालिका 1.7 – 1.12 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1.7 : ऑफ-कैम्पस एवं प्रायोजित कार्यक्रमों से संसाधन सृजन (सकल प्राप्तियां)

कार्यक्रम का नाम	राशि (रूपये में)
दिनांक 26 – 30 अप्रैल, 2016 से पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में एमडीपी	232,000
दिनांक 20 – 23 नवम्बर, 2016 से वीसीआरआई, तिरुनलवेली में डीडब्ल्यूआरपी	232,000
दिनांक 2 – 30 नवम्बर, 2016 को कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम	1,080,000
भाकृअनुप – राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (ICAR - NDRI) के संकाय एवं वैज्ञानिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	241,000
कुल	1,785,800

तालिका 1.8 : शिक्षा कार्यक्रमों से संसाधन सृजन (सकल प्राप्तियां)

कार्यक्रम का नाम	वर्ष	राशि (रूपये में)
पीजीडीएमए	2014–16	6,100
पीजीडीएमए	2015–17	6,233,800

पीजीडीएमए	2016-18	9,500,000
पीजीडीटीएमए	2015	29,400
पीजीडीटीएमए	2017	13,000
कुल		15,782,300

तालिका 1.9 : प्रायोजित परियोजना बजट (2016-17)

परियोजना का नाम	बजट परिव्यय (रूपये)	प्राप्त निधि* (रूपये)	व्यय (रूपये)
आरकेवीवाई – तेलंगाना राज्य सरकार विकासशील एसएआईडीपी परियोजना	2,471,920	1,555,785	209,775
आरकेवीवाई – तेलंगाना राज्य सरकार अनुसंधान परियोजना का प्रभाव आकलन	2,713,440	1,498,037	1,498,037
आरआईएस, नई दिल्ली (एलएमओ का सामाजिक आर्थिक)	500,000	467,580	467,580
आईएफपीआरआई – एसटीआई परियोजना	2,100,000	879,577	879,577
नार्म – मैनेज सहयोगात्मक परियोजना	330,000	330,000	229,853
डीबीटी – नार्म परियोजना – भारत में रागी का सामाजिक आर्थिक विश्लेषण	1,599,000	885,335	747,044
एसईआरबी, विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग के तहत अनुसंधान एवं विकास रणनीतियां एवं नीतियां	1,242,000	670,000	99,404
कुल	10,956,360	6,286,314	4,131,270

* प्रारंभिक शेष सहित

तालिका 1.10 : प्रायोजित परियोजनाओं से शुद्ध प्राप्तियां

प्रायोजक का नाम	शुद्ध प्राप्ति राशि (रूपये)
एलएमओ परियोजना की सामाजिक-आर्थिकी	106,394
आरकेवीवाई, एपी परियोजना	303,252
“प्रभाव मूल्यांकन” पर आरकेवीवाई (टीएस) परियोजना	612,318
एसटीआई – आईएफपीआरआई परियोजना	299,100
कुल	1,321,064

तालिका 1.11 : अन्य गतिविधियों से संसाधन सृजन

विवरण	शुद्ध प्राप्तियां (रूपये)
पीजीडीएमए 2013-15	70,040
पीजीडीएमए 2014-16	3,100,000
प्रायोजित कार्यक्रमों से संचित प्राप्तियां	186,504
फार्म उत्पाद से प्राप्तियां	199,895
प्रकाशनों की बिक्री से प्राप्तियां	17,300
अतिथि गृह एवं क्वार्टरों से प्राप्तियां	4,766,183
संस्थान प्रशिक्षण कार्यक्रमों से प्राप्तियां	853,930
आवेदन शुल्क से प्राप्तियां	104,200
प्रदान की गई सेवाओं से प्राप्तियां	196,835
विविध प्राप्तियां	5,889,948

कुल	15,384,835
-----	------------

तालिका 1.12 : योजना स्कीमें (2016-17)

क्र.सं.	स्कीम का नाम	बजट परिव्यय (रूपये)	उपलब्ध/प्राप्त निधि (रूपये)	व्यय (रूपये)
1.	एनएआईएफ – जेडटीएमसी	750,000	750,000	750,000
2.	एनएआईएफ – एबीआई	3,000,000	2,250,000	2,236,208
3.	एनआईवीईडीआई	70,200	70,200	70,200
4.	NICHE – TELAgE परियोजना	8,750,000	5,375,005	4,592,438
5.	KRISHI परियोजना	4,976,000	5,665,815	3,370,774
6.	एकस्ट्रा मुराल अनुसंधान परियोजना (ICT)	1,170,000	1,170,000	1,143,868
7.	एकस्ट्रा मुराल अनुसंधान परियोजना (ESM)	1,020,000	1,020,000	1,018,963
8.	एफएफपी परियोजना	1,225,000	1,225,000	1,222,840
	कुल	20,961,200	17,526,020	14,405,291

*प्रारंभिक शेष सहित

1.8 संस्थान अनुसंधान परिषद/अनुसंधान परामर्श समिति/संस्थान प्रबंधन समिति की बैठकें

1.8.1 संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC)

संस्थान अनुसंधान परिषद (IRC) की 19वीं बैठक का आयोजन भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद स्थित प्रशासनिक भवन के समिति हॉल में दिनांक 6-7 मार्च, 2017 को किया गया ताकि पूर्ण हो चुकी परियोजनाओं की उपलब्धियों और चालू परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जा सके और संकाय सदस्यों द्वारा प्रस्तावित नई परियोजनाओं पर विचार किया जा सके और उनका अनुमोदन किया जा सके।

1.8.2 अनुसंधान परामर्श समिति (RAC)

दिनांक 1 सितम्बर, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह के सभा कक्ष में एक विशेष अनुसंधान परामर्श समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली; डॉ. मृत्युंजय, अध्यक्ष, अनुसंधान परामर्श समिति और समिति के अन्य सदस्य नामतः डॉ. ए.एस. राव; डॉ. टी.वी. राव; डॉ. सुधा राव; एवं डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, नार्म व डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, सदस्य सचिव, अनुसंधान परामर्श समिति शामिल हुई। पिछली बैठक में चर्चा किए गए मुद्दों के बारे में महानिदेशक महोदय को अवगत कराया गया।

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर, एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नार्म के अनुसंधान परामर्श समिति सदस्यों के साथ परस्पर बातचीत करते हुए

1.8.3 संस्थान प्रबंधन समिति (IMC)

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद की 53वीं संस्थान प्रबंधन समिति की बैठक का आयोजन डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद की अध्यक्षता में दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को निदेशक कार्यालय के समिति हॉल में किया गया। समिति सदस्यों के रूप में डॉ. आर.एन. चटर्जी, डॉ. सरला नीलमराजू, डॉ. डी. राजी रेड्डी और श्री वेंकेश्वर्लू वसन्थापु बैठक में उपस्थित थे। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद से विशेष आमंत्रित सदस्यों में डॉ. आर. कल्पना शास्त्री; डॉ. एस.के. सोम; डॉ. आई सेकर; डॉ. बी.एस. सोन्ताकी; डॉ. आर.वी.एस. राव; डॉ. बी. गणेश कुमार; डॉ. पी. रमेश और श्री आशीष राय शामिल थे। मुख्य कार्यसूची मद के तहत दिनांक 15

दिसम्बर, 2015 से 25 सितम्बर, 2016 की अवधि के दौरान गतिविधियों की प्रगति पर चर्चा करना था। समिति सदस्यों को मुख्य उपलब्धियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और ईएफसी 2017-20 में प्रस्तावित नई पहल और पिछली बैठक में चर्चा किए गए मुद्दों के बारे में जानकारी दी गई ।

चित्र : नार्म की संस्थान प्रबंधन समिति

क्षमता निर्माण

क्षमता निर्माण, अकादमी का प्रमुख अधिदेश है और 2016-17 भी एक घटनापूर्ण वर्ष रहा है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान रिकॉर्ड संख्या में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया यथा कुल 71 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें कुल 3706 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से 959 (25.88 प्रतिशत) महिला प्रतिभागी थीं। अकादमी द्वारा अपने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों से भी आगे भिन्न हितधारकों तक अपनी पहुंच को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया गया।

वर्ष 2009 से अपनी क्षमता निर्माण गतिविधियों के भाग के तौर पर, अकादमी शैक्षणिक कार्यक्रमों की डिजाइन एवं उनका निष्पादन करने में सम्बद्ध रहा है जिसके परिणामस्वरूप इसकी क्षमता निर्माण पहल में वृद्धि हो रही है। वर्तमान में, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा सम्पूर्ण राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के कार्यरत प्रोफेशनल के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं। अकादमी द्वारा पीजीडीएमए डिग्री हेतु युवा स्नातकों के लिए एक दो वर्षीय आवासीय कार्यक्रम चलाया जाता है। इसके अलावा, अकादमी द्वारा दूरस्थ शिक्षण मोड एवं ऑन-लाइन प्लेटफार्म के माध्यम से विशेष कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं। अकादमी द्वारा प्रस्तुत शैक्षणिक कार्यक्रमों का विवरण अध्याय-3 में उपलब्ध कराया गया है।

2.1 राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के हितधारकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

अकादमी द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के भिन्न हितधारकों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम यथा बुनियादी पाठ्यक्रम; पुनश्चर्या पाठ्यक्रम; प्रायोजित कार्यक्रम, ऑन-लाइन पाठ्यक्रम, प्रबंधन विकास कार्यक्रम (MDP), कार्यकारी विकास कार्यक्रम (EDP) सहित जरूरत आधारित कार्यक्रम; और कार्यशालाएं एवं सेमिनार भी शामिल हैं, का आयोजन किया जाता है (जैसा कि चित्र 2.1 में दर्शाया गया है)। तालिका 2.1 में आयोजित कार्यक्रमों को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2.1 : वर्ष 2016-17 के दौरान आयोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्यक्रम	आयोजित कार्यक्रमों की संख्या	कुल कार्यक्रमों का प्रतिशत	प्रतिभागियों की संख्या	महिला प्रतिभागी	प्रतिभागी / प्रशिक्षु
1.	कार्यकारी विकास कार्यक्रम	2	2.82	25	0	12.50
2.	बुनियादी पाठ्यक्रम	4	5.63	181	70	45.25
3.	प्रबंधन विकास कार्यक्रम	4	5.63	89	6	22.25
4.	जरूरत आधारित कार्यक्रम	29	40.85	769	166	26.52
5.	ऑफ कैम्पस कार्यक्रम	2	2.82	50	16	25.00
6.	ऑन-लाइन पाठ्यक्रम	2	2.82	1023	303	511.50
7.	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	1	1.41	13	2	13.00
8.	प्रायोजित कार्यक्रम	10	14.08	228	55	22.80
9.	कार्यशालाएं, सेमिनार आदि	17	23.94	1385	366	81.47
	कुल	71	100.00	3706	959	52.19

क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का प्रकार (प्रतिशत)

चित्र 2.1 : क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का प्रकार (प्रतिशत)

क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की अवधि में 2 से 90 दिनों की भिन्नता थी (तालिका 2.2)। अधिकांश कार्यक्रम अल्पावधि वाले थे यथा 6–10 दिन (49 प्रतिशत) एवं तदुपरान्त 5 दिन (35 प्रतिशत) (चित्र 2.2)। कुल मिलाकर, राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के क्षमता निर्माण हेतु 704 प्रशिक्षण दिवसों का उपयोग किया गया।

तालिका 2.2 : क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की अवधि

क्र.सं.	कार्यक्रम की प्रकृति	<5 दिन	6–10 दिन	10–30 दिन	>30 दिन	कुल
1.	कार्यकारी विकास कार्यक्रम	1	1	0	0	2
2.	बुनियादी पाठ्यक्रम	0	0	2	2	4
3.	प्रबंधन विकास कार्यक्रम	0	0	4	0	4
4.	जरूरत आधारित कार्यक्रम	14	15	0	0	29
5.	ऑफ-कैम्पस कार्यक्रम	2	0	0	0	2
6.	ऑन-लाइन पाठ्यक्रम	0	0	0	2	2
7.	पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	0	1	0	0	1
8.	प्रायोजित कार्यक्रम	2	7	1	0	10
9.	कार्यशालाएं, सेमिनार	6	11	0	0	17
	कुल	25	35	7	4	71

चित्र 2.2 : क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की अवधि

2.1.1 बुनियादी पाठ्यक्रम

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के लिए बुनियादी पाठ्यक्रमों का आयोजन करने में अकादमी मेरूदण्ड बना हुआ है। अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष कृषि अनुसंधान सेवा के नव नियुक्त वैज्ञानिकों के लिए जो कि फोकार्स (FOCARS) के नाम से प्रचलित है और साथ ही कृषि विश्वविद्यालयों के नव नियुक्त संकाय (कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम) (FOCFAU) के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। इसके साथ ही अकादमी द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नव नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों एवं वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए भी बुनियादी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। इन पाठ्यक्रमों का विवरण तालिका 2.3 में प्रस्तुत है। इन पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु, अवधि, अपनाई गई कार्यप्रणाली आदि का विवरण आगे दिया गया है।

कृषि अनुसंधान सेवा के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम (FOCARS)

फोकार्स, अकादमी का अग्रणी कार्यक्रम है और यह एक वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है। बुनियादी पाठ्यक्रम का उद्देश्य कृषि अनुसंधान सेवा के वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स की क्षमता का निर्माण करना है ताकि पेशेवर चुनौतियों का सामना करने के लिए उनमें जरूरत कौशल का पोषण एवं विकास किया जा सके। फोकार्स के दक्षता फ्रेमवर्क में प्रमुख विषय अनुसंधान कौशल, व्यक्तिगत प्रभावशीलता, सूचना प्रबंधन और व्यवसाय उन्मुखता का विकास करना शामिल है। दक्षता की परिवर्तनशील जरूरतों सात माह की अवधि में कुल तीन तीन चरणों में पाठ्यक्रमों के विकास एवं संगठन का आधार तैयार करती हैं। डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में "फोकार्स की पुनःसंरचना पर आयोजित ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र" के परिणामों के अनुरूपण में अनुवर्ती फोकार्स को समृद्ध बनाया गया।

तालिका 2.3 : आयोजित बुनियादी पाठ्यक्रम

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	समन्वयक	*प्रतिभागियों की कुल संख्या
1.	कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए तीसरा बुनियादी पाठ्यक्रम (FOCFAU)	2 – 31 मई, 2016	बी.एस. सोन्ताकी एवं जी.आर.के. मूर्ति	57 (25)
2.	कृषि अनुसंधान सेवा के लिए 104वां बुनियादी पाठ्यक्रम (FACARS)	5 जुलाई – 4 अक्टूबर, 2016	एस.के. सोम एवं पी. वेंकटेशन	67 (30)
3.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नव नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों एवं वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम	1 – 29 अगस्त, 2016	आशीष राय एवं एस. जॉर्ज	32 (07)
4.	कृषि अनुसंधान सेवा के लिए 105वां बुनियादी पाठ्यक्रम (FOCARS)	5 जनवरी – 4 अप्रैल, 2017	के. करीमुल्ला एवं एस. रविचन्द्रन	25 (8)

*कोष्ठक में इंगित आंकड़े महिला प्रतिभागियों की संख्या दर्शाते हैं।

चरण – 1 : अकादमी में तीन माह की अवधि का बुनियादी पाठ्यक्रम

चरण – 2 : तैनाती वाले संस्थान एक माह की अवधि का अभि-उन्मुखता प्रशिक्षण कार्यक्रम

चरण – 3 : देशभर में प्रासंगिक उत्कृष्ट प्रयोगशालाओं में तीन माह की अवधि का पेशेवर सम्बद्धता प्रशिक्षण

प्रथम चरण के अंतर्गत तीन माह के प्रशिक्षण को तीन अवस्थाओं में आयोजित किया जाता है यथा 1) अभि-उन्मुखता एवं क्षमता निर्माण; 2) खेत अनुभव प्रशिक्षण एवं 3) बहु-विषयी परिप्रेक्ष्य। इनमें से जहां पहले एवं तीसरे चरण अथवा अवस्था का आयोजन अकादमी में किया गया वहीं दूसरी अवस्था का आयोजन 21 दिनों के लिए चिन्हित किए गए पैन इंडिया केन्द्रों पर किया गया। ऑन-कैम्पस क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के दौरान, विषयों यथा 'कृषि नीति परिप्रेक्ष्य', बौद्धिक सम्पदा अधिकार एवं प्रौद्योगिकी प्रबंध', 'मानव संसाधन प्रबंधन', 'प्रलेखन, प्रस्तुतिकरण एवं संचार प्रबंधन', भागीदारी प्रौद्योगिकी विकास एवं प्रसार', 'सफल होने वाले अनुसंधान प्रस्तावों को तैयार करना', 'भावी एवं बहु-विषयी परिप्रेक्ष्य' तथा 'वित्तीय एवं प्रशासनिक प्रबंधन' आदि के बीच परस्पर जुड़ी माड्यूलर युक्तियों पर विशेष बल दिया गया।

चित्र : दिनांक 5 जुलाई – 4 अक्टूबर, 2016 के दौरान आयोजित 104वें फोकार्स की समूह फोटो

चित्र : श्री छबिलेन्द्र राऊल, अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, भाकृअनुप "सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु पुरस्कार" देते हुए

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान प्रारंभ किए गए प्रमुख बदलावों/नवोन्मेष में शामिल हैं : VADP (ग्राम कृषि विकास योजना) के अलावा अन्य विषय यथा ऑन-लाइन सहयोग टूल्स, सोशल मीडिया, नेटिक्वेट्स; जमीनी स्तरीय नवोन्मेष; साइन्स ब्लॉगिंग; पीडीएफ के माध्यम से कैरियर योजना तथा प्रगति; फेलोशिप; स्थानान्तरण दिशानिर्देश, कार्यालय संचार आदि। पहली बार 105वें फोकार्स के दौरान, विषयी क्षेत्रों यथा सफल होने वाली अनुसंधान परियोजनाओं का विकास करना, अनुसंधान परियोजना प्रस्ताव तथा एफईटी में सर्वश्रेष्ठ टीम को टीम प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। प्रशिक्षुओं की सुगम पहुंच के लिए अद्यतन पाठ्य सामग्री के साथ अलग से एक वेबपेज का सृजन किया गया।

चित्र : 105वें फोकार्स के वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप 'सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु पुरस्कार' प्रदान करते हुए

वर्ष 2016-17 के दौरान, दो बुनियादी पाठ्यक्रम आयोजित किए गए और 92 नव नियुक्त वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण दिया गया। तीन माह के समग्र प्रदर्शन के आधार पर सुश्री गौरी जयरथ (पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी) एवं सुश्री रेखा बलोडी (पादप रोगविज्ञान) को क्रमशः 104वें एवं 105वें फोकार्स बैच में 'सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु' चुना गया।

चित्र : वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स का खेत प्रशिक्षण

चित्र : स्थानीय आदिवासी वेशभूषा में वैज्ञानिक प्रशिक्षु

फोकर्स का पुनर्गठन

अकादमी द्वारा क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में अपने प्रदर्शन में सुधार लाने की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, इसके अग्रणी कार्यक्रम यथा कृषि अनुसंधान सेवा के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम (फोकर्स) के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस संबंध में, डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में दिनांक 3 दिसम्बर, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में “फोकर्स का पुनर्गठन” विषय पर एक ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संगठनों के निदेशकों एवं वैज्ञानिकों ने भाग लिया। तीन चरणीय फोकर्स के वर्तमान मॉडल और संगठनात्मक जरूरतों के अनुरूपण में इसमें सुधार लाने से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। एक ऑन-लाइन सर्वे के माध्यम से 94वें से 102वें फोकर्स बैच के कुल 225 वैज्ञानिकों का डाटा हासिल किया गया और ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र के लिए परिणाम तैयार किए गए।

चित्र : डॉ. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र को सम्बोधित करती हुई

चित्र : भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबादमें आयोजित ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र में भाकृअनुप संस्थानों के निदेशक

प्रमुख सिफारिशें

चरण – 1 : भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में बुनियादी अथवा फाण्डेशन कार्यक्रम (3 माह)

1. फोकर्स के इष्टतम कक्षा आकार पर चर्चा की जाए और उसे सुचारु रूप दिया जाए। संसाधनों की प्रभावी उपयोगिता और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता के लिए लगभग 80 प्रशिक्षुओं के बैच आकार का सुझाव दिया गया।
2. 'A' ग्रेड हासिल करने वाले वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स के लिए प्रोत्साहन पर कार्य करने की जरूरत है।
3. अनुसंधान परामर्श समिति के कार्यवृत्त के अनुसार परामर्श करके संकाय सदस्यों के लिए मानदेय पर कार्य किया जाए।
4. विद्यमान नियम प्रावधानों की परिधि में रहकर पाठ्यक्रम को महिला अनुकूल बनाना।
5. सरकारी कर्तव्य का पालन करते समय सुचारु कार्यप्रणाली के लिए प्रतिभागियों को वित्तीय एवं प्रशासनिक प्रबंधन के बारे में कहीं अधिक जानकारी दी जाए।
6. जहां कहीं संभव हो, प्रख्यात संकाय के व्याख्यान को शामिल किया जाए।
7. खेत अनुभव प्रशिक्षण (FET) के लिए तीन सप्ताह की अवधि अनुकूल है। खेत अनुभव प्रशिक्षण के लिए पीआरए एक महत्वपूर्ण टूल है और पाठ्यचर्या में प्रासंगिक पीआरए को शामिल करने की दिशा में प्रयास करने की जरूरत है। खेत अनुभव प्रशिक्षण द्वारा किसानों की समस्याओं को समझने के लिए नीतिगत निर्देश दिए जाने चाहिए।
8. नार्म संकाय का उन्नयन नियमित रूप से किया जाए। अकादमी एक रोडमैप के साथ आगे आए।

चरण – 2 : भाकृअनुप संस्थान जहां नव नियुक्त वैज्ञानिक की तैनाती की गई, में अभि-उन्मुखता प्रशिक्षण (एक माह)

9. अभि-उन्मुखता प्रशिक्षण के लिए एक माह की समय अवधि अनुकूल है।
10. संस्थान के निदेशकों द्वारा एक बहु संरचित तरीके में अभि-उन्मुखता प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए ताकि इसे कहीं अधिक अर्थपूर्ण बनाया जा सके और विशिष्ट प्रशिक्षण परिणामों के साथ वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स द्वारा समय का बेहतर उपयोग किया जा सके।

11. इसमें वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स को संस्थान के अधिदेश के आधार पर भावी अनुसंधान कार्यक्रमों के लिए क्षेत्रों की पहचान करने की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।
12. निदेशकों द्वारा समुचित कार्रवाई करने और समय पर नार्म, हैदराबाद को रिपोर्ट उपलब्ध करानी चाहिए ताकि समय से वैज्ञानिकों के प्रोबेशन की घोषणा की जा सके।

चरण – 3 : पेशेवर सम्बद्धता प्रशिक्षण (3 माह)

13. पेशेवर प्रशिक्षण तीन माह से कम की अवधि का नहीं होना चाहिए और यह वास्तविक जरूरतों पर आधारित होना चाहिए। इसे अधिकतम 6 माह तक बढ़ाया जा सकता है।
14. वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स के लिए अपनी तैनाती वाले संस्थान से अन्यत्र किसी अन्य सस्थान में पेशेवर सम्बद्धता प्रशिक्षण में जाना अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।
15. संस्थान के निदेशकों द्वारा पेशेवर सम्बद्धता प्रशिक्षण के लिए भारत में प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और निजी संगठनों की संभावना तलाशी जाए।
16. निदेशकों द्वारा वैज्ञानिकों को यथाशीघ्र लेकिन तीन माह के उपरान्त पेशेवर प्रशिक्षण में भेजा जाए। इसे अधिकतम 2 चरणों में किया जा सकता है जहां प्रशिक्षण जरूरी हो।

सम्यक फोकर्स

17. सभी चरणों में उत्कृष्टता का उद्देश्य रखा जाए जैसा कि अन्य चरणों की तुलना में तीसरे चरण में कहीं अधिक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया गया।

बुनियादी पाठ्यक्रमों में नवोन्मेष

1. पाठ्यक्रम सामग्री की अद्यतन डिजिटल रिपोजिट्री
2. फोकर्स के लिए (<https://naarm.org.in/focarsrepository/FREB.php>)
3. खेत अनुभवजन्य प्रशिक्षण के भाग के तौर पर "किसानों की आय को दोगुना करना" पर फोकस करने हेतु VADP – गांव कृषि विकास योजना की शुरुआत
4. नए सत्र – सोशल मीडिया, नेटिवेट्स; साइन्स ब्लॉगिंग; जमीनी स्तरीय नवोन्मेष आदि की शुरुआत की गई।
5. प्रभाव अध्ययन के माध्यम से निरन्तर मूल्यांकन
6. FOCFAUs में माड्यूलर युक्ति

चित्र

कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम

कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम जो कि श्रृंखला में तीसरा है, का आयोजन दिनांक 2 – 31 मई, 2016 को किया गया। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित उद्देश्यों के सागि कृषि विश्वविद्यालयों के नव नियुक्त संकाय को लक्षित किया गया : 1) शिक्षा के विभिन्न पहलुओं, शिक्षा में शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी में प्रतिभागियों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में सुधार लाना; 2) प्रतिभागियों को अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना; तथा 3) मानव पूंजी, प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रबंधन से जुड़ी संगठनात्मक क्षमता के बारे में प्रतिभागियों को जागरूक करना।

कार्यक्रम में सात राज्यों यथा आन्ध्र प्रदेश, असम, गुजरात, महाराष्ट्र, मणिपुर, तमिल नाडु और तेलंगाना का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 57 प्रतिभागियों को लाभ पहुंचा।

कार्यक्रम के प्रमुख संघटकों में शामिल है : शिक्षण-प्रशिक्षण की आधारशिला अथवा बुनियाद, शिक्षण प्रबंधन, संचार एवं भाषायी कौशल, मानव संसाधन प्रबंधन, सूचना संचार एवं प्रसार प्रबंधन, अनुसंधान कार्यप्रणाली एवं परियोजना प्रस्ताव विकास आदि। सूक्ष्म शिक्षण, मानव संसाधन प्रबंधन, डिजिटल प्रस्तुतिकरण एवं डाटा विश्लेषण अभ्यास के माध्यम से शिक्षण, अनुसंधान एवं प्रसार कौशल में सुधार लाने के लिए कार्यक्रम के दौरान व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रबल था। घरेलू

व्यावहारिक सत्रों, प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में खेत दौरों के माध्यम से प्रबलीकरण करने से प्रतिभागियों को अकादमी में अपने अनुभवों को बताने और अपने प्रशिक्षण का समेकन करने में मदद मिली।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. कास्बे सुधांशु सुधाकर, वैज्ञानिक (फसल उत्पादन), DAATTC, अदिलाबाद, PJTSAU को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए "सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु" पुरस्कार के लिए चुना गया।

चित्र : कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए तीसरे बुनियादी पाठ्यक्रम के प्रतिभागी

चित्र : FOCFAU प्रशिक्षु को सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षु पुरस्कार देते हुए डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, महानिदेशक, एनआईआरडी एंड पीआर

चित्र : डॉ. ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), भाकृअनुप तीसरे FOCFAU के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए

चित्र : प्रशिक्षण के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम : पारम्परिक वेशभूषा में महिला प्रतिभागी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नव नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों एवं वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए बुनियादी पाठ्यक्रम

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नव नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों और वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए आयोजित एक माह के बुनियादी पाठ्यक्रम में मानव संसाधन प्रबंधन, वित्त प्रबंधन, प्रशासनिक प्रबंधन, तथा राजभाषा नीति, जीवनचर्या प्रबंधन, मानवता के साथ प्रशासन, आदर-सत्कार एवं शिष्टाचार आदि पर व्यापक रूप से फोकस किया गया। नव नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों और वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए आवश्यक सभी विषयों को दिनांक 1 – 29 अगस्त, 2016 की अवधि के दौरान आयोजित इस एक माह के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

पाठ्यक्रम में व्यक्तित्व विकास, समूह गतिशीलता एवं टीमवर्क, सकारात्मक सोच, संचार कौशल, व्यवहार कौशल, मोल-भाव करने की दक्षता, भावनात्मक मुद्दों, प्रोत्साहन, समय प्रबंधन आदि को प्राथमिकता दी गई।

प्रशासनिक एवं वित्तीय प्रबंधन माड्यूल्स में विभिन्न विषयों को शामिल किया गया जैसे कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद सोसायटी के नियम एवं बॉयलाज, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की विभिन्न स्कीमों को नियंत्रित करने वाले नियम एवं दिशानिर्देश, एआरएस, कर्मचारी भविष्य निधि, कर्मचारी राज्य बीमा, चिकित्सा नियमावली, वेतन पर आयकर, डीडीओ और ईआरपी की भूमिका एवं कार्य; सामान्य वित्तीय नियमावली (GFR); बजटिंग एवं वित्तीय प्रबंधन; ऑडिट मैनुअल एवं स्थानीय ऑडिट; श्रम कानून प्रबंधन; DOFP नियमावली; उपचय एकाउन्टिंग एवं भाकृअनुप में लागू एकाउन्टिंग मानक तथा खरीद कार्यविधि व अनुबंध प्रबंधन आदि।

चित्र : प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया

चित्र : भाकृअनुप के नव-नियुक्त प्रशासनिक अधिकारियों एवं वित्त व लेखा अधिकारियों के लिए आयोजित बुनियादी पाठ्यक्रम

2.1.2 नेतृत्व विकास कार्यक्रम

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) के लिए नेतृत्व विकास करना अकादमी की प्रमुख जिम्मेदारी रही है। संगठन के उज्ज्वल भविष्य के लिए चुनौतियों का सामना करने, रणनीतिपरक योजना तैयार करने और कल्पना करने के लिए एक नए प्रकार की नेतृत्व सोच समय की मांग है। अकादमी द्वारा क्षमता निर्माण और अनुसंधान के माध्यम से परिवर्तन लाने, संगठनों में नवोन्मेष एवं नेतृत्व का सृजन करने का रास्ता चुना गया। क्षमता निर्माण कार्यक्रम का उद्देश्य दो प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से प्रभावशीलता में बढ़ोतरी करना है यथा 1) प्रबंधन विकास कार्यक्रम; तथा 2) कार्यकारी विकास कार्यक्रम। इन कार्यक्रमों का विवरण तालिका 2.4 में दिया गया है।

तालिका 2.4 : आयोजित नेतृत्व विकास कार्यक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या
1.	कृषि विज्ञान केन्द्रों के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों के लिए चतुर्थ प्रबंधन विकास कार्यक्रम	22 अप्रैल – 6 मई, 2016	डी. थम्मी राजू पी. वेंकटेशन	24
2.	नेतृत्व विकास पर दसवां प्रबंधन विकास कार्यक्रम (प्री-आरएमपी कार्यक्रम)	7 – 18 जुलाई, 2016	एन. संध्या शिनाय के.एच. राव	18
3.	नेतृत्व विकास पर 9वां कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम	27 अगस्त – 1 सितम्बर, 2016	आर. कल्पना शास्त्री डी. रामा राव	17
4.	कृषि विज्ञान केन्द्रों के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों के लिए 5वां प्रबंधन विकास कार्यक्रम	16 – 30 दिसम्बर, 2016	एस. सेन्थिल विनयागम वी.के.जे. राव	23
5.	नेतृत्व विकास पर 11वां प्रबंधन विकास कार्यक्रम (प्री-आरएमपी कार्यक्रम)	19 – 30 दिसम्बर, 2016	आर.वी.एस. राव के. श्रीनिवास	24
6.	नेतृत्व विकास पर 10वां कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम	18 – 22 फरवरी, 2017	आर. कल्पना शास्त्री एस.के. सोम	08

कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम

कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रमों की डिजाइन नव-नियुक्त अनुसंधान प्रबंधकों (अनुसंधान प्रबंधन पद) की नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने के तैयार की गई जबकि नेतृत्व विकास पर प्रबंधन विकास कार्यक्रमों (MDPs) द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों (PCs) के लिए संभावित अनुसंधान प्रबंधक (प्री-आरएमपी) तैयार किए जाते हैं और इसका फोकस अनुसंधान एवं प्रबंधन प्रसार में नेतृत्व का विकास करने पर केन्द्रित है।

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, दो कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम, प्री-आरएमपी कार्यक्रम के रूप में दो प्रबंधन विकास कार्यक्रम और कृषि विज्ञान केन्द्रों के लिए दो प्रबंधन विकास कार्यक्रम (MDP) आयोजित किए गए।

दो ईडीपी में, रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में कुल 25 लीडरों यथा नव-नियुक्त निदेशक (19), सहायक महानिदेशक (4) तथा संयुक्त निदेशक (2) को प्रशिक्षित किया गया। पांच दिवसीय ईडीपी में योग को शामिल करते हुए निजी दक्षता, नेतृत्व विशेषता और प्रणाली आदि मुख्य विषय थे जिन पर फोकस किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत विभिन्न विषयों पर सत्र आयोजित किए गए यथा प्रेरणात्मक नेतृत्व; अनुसंधान संगठनों में प्रतिभा प्रबंधन; नेतृत्व उत्कृष्टता; बेहतर शासन प्रणाली; बजट योजना एवं क्रियान्वयन; प्राथमिकता सेटिंग मॉनीटरिंग एवं उत्कृष्टता; संस्थागत प्रबंधन एवं उत्तरदायित्व; मामला अध्ययन के माध्यम से संस्थागत निर्माण; प्रयोगात्मक भागीदारी; एवं खेत दौरा आदि। नेतृत्व की प्रोफाइलिंग से ये कार्यक्रम समृद्ध हुए। लचीले फ्रेमवर्क से नेतृत्व अथवा लीडरों को कार्यक्रम के दौरान अपने अनुभव प्रकट करने का मौका मिला जिससे प्रतिभागियों को नेतृत्वशीलता पर अपने अनुभवों को प्रस्तुत करने और स्वयं का आकलन करने का अवसर मिला कि वे लीडर के रूप में भविष्य में क्या करेंगे अथवा क्या नहीं करेंगे।

चित्र : पूर्णता प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप

चित्र : डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), नार्म के साथ 10वें ईडीपी के प्रतिभागी

नेतृत्व विकास (प्री-आरएमपी कार्यक्रम) पर प्रबंधन विकास कार्यक्रम

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के 42 वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिकों/प्राध्यापकों एवं संभावित अनुसंधान प्रबंधकों ने नेतृत्व विकास पर प्रबंधन विकास कार्यक्रमों (प्री-आरएमपी) में भाग लिया। नेतृत्व पर प्री-आरएमपी कार्यक्रमों से प्रतिभागियों को अपने व्यक्तित्व आयाम को समझने में, नेतृत्व संबंधी चुनौतियों का सामना करने में सक्षमता विकसित करने और अनुसंधान व प्रौद्योगिकी प्रबंधन, सूचना व ज्ञान प्रबंधन, तथा प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन में वांछित कौशल विकसित करने में मदद मिली।

चित्र : भावी नेतृत्व के लिए टीम निर्माण व्यायाम

चित्र : एमडीपी के प्रतिभागियों के साथ परस्पर बातचीत करते हुए श्री छबिलेन्द्र राऊल, अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

कृषि विज्ञान केन्द्रों के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों (PCs) के लिए प्रबंधन विकास कार्यक्रम

अकादमी द्वारा देश में प्रसार प्रणाली के प्रमुख पदाधिकारियों/लीडरों में दक्षता का विकास करने की जरूरत को महसूस करते हुए अभी कृषि विज्ञान केन्द्रों के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों के लिए कुल तीन प्रबंधन विकास कार्यक्रम (MDP) आयोजित किए गए। इस प्रबंधन विकास कार्यक्रम में तीन चरण यथा 1) अकादमी में 15 दिन का घरेलू प्रशिक्षण; 2) सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केन्द्र में 10 दिन का प्रशिक्षण; तथा 3) संबंधित जोनल अटारी (कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग एवं अनुसंधान संस्थान) में 5 दिन। आमतौर पर, नव-नियुक्त कार्यक्रमों समन्वयकों के पास विभिन्न विषयों/विज्ञान वाली पृष्ठभूमि थी और प्रसार प्रणाली के साथ उनका तारतम्य स्थापित करने की जरूरत है।

वर्ष 2016-17 के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं गैर सरकारी संगठनों के नियंत्रण में कार्यरत कृषि विज्ञान केन्द्रों के कुल 47 अध्यक्षों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने पर ऐसे दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में चिन्हित विषयों यथा अग्रिम पंक्ति प्रसार एवं अनुसंधान कार्रवाई के लिए परियोजना प्रस्तावों का लेखन, मानव संसाधन प्रबंधन, उद्यमशीलता विकास, कृषि में आईसीटी, मौखिक संचार, सफल गाथाएं एवं मामला अध्ययन, सांख्यिकीय विश्लेषण, प्रभाव आकलन, महिला परिप्रेक्ष्य, प्रशासन एवं वित्तीय प्रबंधन के साथ साथ प्रसार प्रणाली के वर्तमान रुझान और जरूरतों को ध्यान में रखकर अन्य सामान्य विषयों पर माड्यूलर दृष्टिकोण अपनाया गया। नवोन्मेष अथवा इनोवेशन, अकादमी का प्रमुख दर्शनशास्त्र है। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, 5वें एमडीपी से सभी तीनों चरणों को शामिल करते हुए एक व्यापक पाठ्यक्रम पूर्णता प्रमाण-पत्र जारी करना प्रारंभ किया गया।

चित्र : डॉ. ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों के लिए आयोजित चतुर्थ एमडीपी के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए

चित्र : कृषि विज्ञान केन्द्रों के 5वें एमडीपी के दौरान पूर्णता प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करते हुए डॉ. के.एस. वाराप्रसाद, पूर्व निदेशक भाकृअनुप - भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOR), हैदराबाद

2.1.3 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

अकादमी द्वारा 12 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सीधे नियुक्त वरिष्ठ/प्रधान वैज्ञानिकों (पार्श्वीय प्रवेश) की वांछित क्षमताओं का निर्माण किया जाता है। इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के तहत अनुसंधान संभावनाओं तथा अनुसंधान प्रबंधन तकनीकों व कार्यप्रणालियों की व्यापकता पर फोकस किया जाता है तथा साथ ही प्रतिभागियों को अपनी भूमिकाओं व जिम्मेदारियों का प्रभावी ढंग से निष्पादन करने के लिए जरूरी केएसए से सुसज्जित किया जाता है (तालिका 2.5)। रिपोर्टाधीन वर्ष में, पश्चिम बंगाल, तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, नई दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र और तेलंगाना से 13 सीधे नियुक्त किए गए वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं प्रधान वैज्ञानिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

चित्र : पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण सत्र

तालिका 2.5 : आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या
1.	कृषि अनुसंधान प्रबंधन पर 11वां पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में सीधे नियुक्त वरिष्ठ वैज्ञानिकों एवं प्रधान वैज्ञानिकों के लिए)	15 – 26 नवम्बर, 2016	सूर्या राठौर एम.बी. दस्तागिरी	13

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली में नेतृत्व का विकास करना

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में जनवरी, 2011 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शीर्ष 20 अधिकारियों की भागीदारी के साथ एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक आयोजित की गई जिसमें राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली में नेतृत्व विकास की जरूरतों पर चर्चा की गई थी। इस परामर्शी बैठक में यह सिफारिश की गई थी कि भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद प्रणाली में प्रधान वैज्ञानिकों एवं संभागाध्यक्षों (संभावित लीडर्स जिनकी कि नेतृत्व पदों पर जाने की संभावना है) के लिए नेतृत्व विकास पर प्रबंधन विकास कार्यक्रम (MDPs) और नेतृत्व पदों (अनुसंधान प्रबंधन पद अथवा आरएमपी) में नव-नियुक्त कार्मिकों के लिए नेतृत्व विकास पर कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम (EDPs) का आयोजन करना चाहिए। तदनुसार, अकादमी द्वारा कार्यक्रमों की डिजाइन तैयार की गई और उनका विकास किया गया तथा पिछले पांच वर्षों (2011-15) के दौरान नेतृत्व पर इन प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। पाठ्यक्रमों में अन्तराल को लगातार समझने और हितधारकों तक इनकी आपूर्ति में सुधार लाने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ वर्ष 2016 में इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता पर एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया।

प्रशिक्षण मूल्यांकन के किरकपैट्रिक मॉडल का उपयोग करके मूल्यांकन अध्ययन हेतु आकलन, अनुवर्ती पारस्परिकता तथा प्रश्नावली मूल्यांकन का उपयोग किया गया। इस मूल्यांकन के प्रमुख निष्कर्ष थे :

प्रबंधन विकास कार्यक्रमों में भागीदारी करके अर्जित किए गए प्रशिक्षण से वैज्ञानिकों को अपने साक्षात्कार में बेहतर प्रदर्शन करने और नेतृत्व पदों पर आगे बढ़ने में मदद मिली। प्रबंधन विकास कार्यक्रमों में प्रशिक्षित बीस वैज्ञानिक अध्ययन अवधि के दौरान नेतृत्व पदों पर आगे बढ़ने में सफल रहे।

प्रबंधन विकास कार्यक्रमों में भागीदारी करने से भी वैज्ञानिकों को पहले से कहीं बेहतर तरीके से अपनी भूमिका का निर्वहन करने में मदद मिली, भले ही वे नेतृत्व पदों को हासिल नहीं कर सके। इससे उन्हें अपने पेशेवर कैरियर में अगले स्तर के पदों के बारे में निर्णय लेने में भी मदद मिली।

कार्यकारी अधिकारी विकास कार्यक्रम (EDP) में प्रशिक्षित लीडर कार्यक्रम में भागीदारी के उपरान्त अपनी भूमिका को कहीं अधिक प्रभावी ढंग से निभाने में समर्थ बने। प्रशिक्षित लीडरों के प्रभावशीलता को दर्शाने वाले कुछ संकेतकों में शामिल थे : संस्थान में कहीं अधिक प्रकाशन और बेहतर सुविधक; बेहतर टीमवर्क को बढ़ावा देना; परिवर्तन एवं नवोन्मेष का प्रबंधन करना; तथा बाह्य वित्त पोषित परियोजनाओं की बढ़ी हुई संख्या।

अध्ययन से मिले इस सकारात्मक रुझान और स्वयं प्रशिक्षित प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों से यह सुनिश्चित होता है कि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली में वैज्ञानिकों के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम जरूरी और उपयोगी हैं।

अधिक जानकारी हेतु

2.1.4 जरूरत आधारित कार्यक्रम

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में जरूरत आधारित क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए हितधारकों एवं अनुसंधान परिणामों से मांग प्रकट की गई। इस कार्यक्रम के माध्यम से विभिन्न हितधारकों यथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों, कृषि विश्वविद्यालयों तथा सरकारी विभागों के कर्मचारियों की प्रभावशीलता में सुधार लाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इसके तहत मानव संसाधन प्रबंधन, प्रौद्योगिकी प्रबंधन से लेकर वित्तीय एवं प्रशासनिक प्रबंधन तक विभिन्न विषयों को शामिल किया जाता है (तालिका 2.6)। रिपोर्टाधीन वर्ष में 02 से 10 दिन की अवधि वाले जरूरत आधारित प्रशिक्षणों का आयोजन उल्लेखनीय संख्या में किया गया जिनके आयोजन में पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 241 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न पदाधिकारियों के लिए प्रमुख विषयों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किया गया जिसका विवरण नीचे प्रस्तुत है।

जरूरत आधारित कार्यक्रमों के विषय

1. प्रशासनिक, वित्त एवं सहायी स्टाफ
 - स्थापना एवं वित्तीय प्रबंधन, एनआईसी का ई-खरीद समाधान, आरक्षण, सूचना अधिकार अधिनियम (RTI), व्यवहार कौशल एवं निजी तथा कार्य उत्कृष्टता
2. तकनीकी अधिकारी
 - व्यक्तित्व, मृदु कौशल एवं आदर-सत्कार प्रबंधन तथा प्रोत्साहन एवं सकारात्मक सोच का विकास
3. वैज्ञानिक/संकाय
 - कृषि प्रसार, बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन का प्रभाव आकलन, प्रयोगात्मक डाटा का विश्लेषण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन हेतु भू-स्थानिक विश्लेषण, कृषि में जैव सूचनाप्रणाली टूल्स एवं तकनीकें, प्रशिक्षण कार्य का क्रियान्वयन एवं दबाव प्रबंधन

चित्र : डॉ. जॉयकृष्ण जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली, अनुसंधानकर्मियों के लिए आईपी एंड टीएम के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए

चित्र : अकादमी की कुशल सहायी कर्मचारी प्रशिक्षण पूर्णता प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए

चित्र : उद्यमशीलता एवं व्यवसाय इनक्यूबेशन कार्यक्रम के प्रशिक्षुओं के साथ निदेशक, नार्म एवं कार्यक्रम निदेशक

चित्र : 'भाकृअनुप के लिए सीपीपी पोर्टल के माध्यम से एनआईसी के ई-खरीद समाधान का क्रियान्वयन' कार्यक्रम के प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र का वितरण

तालिका 2.6 : जरूरत आधारित कार्यक्रमों का आयोजन

क्र.सं.	शीर्षक	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या *
1.	एनआईसी के साथ समन्वय में भारत के पश्चिमी भाग में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के लिए सीपीपी पोर्टल के माध्यम से एनआईसी के ई-खरीद समाधान का	25 – 26 अप्रैल, 2016	देबशीष मोइत्रा पी. मोहन सिंह	62 (18)

	क्रियान्वयन			
2.	एनआईसी के साथ समन्वय में भारत के पश्चिमी भाग में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के लिए सीपीपी पोर्टल के माध्यम से एनआईसी के ई-खरीद समाधान का क्रियान्वयन	27 – 28 अप्रैल, 2016	देबशीष मोइत्रा पी. मोहन सिंह	34 (05)
3.	आरक्षण रोस्टर एवं आरक्षण रजिस्टर सहित सेवा में आरक्षण	27 – 29 अप्रैल, 2016	बी.डी. फंसल देबशीष मोइत्रा	30 (07)
4.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तकनीकी अधिकारियों के लिए मृदु कौशल एवं व्यक्तित्व विकास	1 – 10 जून, 2016	पी.डी. श्रीकान्त एम.ए. बासित	37 (4)
5.	कृषि प्रसार का प्रभाव आकलन	6 – 10 जून, 2016	सूर्या राठौर बी. गणेश कुमार	27 (4)
6.	अनुसंधानकर्मियों के लिए बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन (IP & TM परियोजना के अंतर्गत)	13 – 18 जून, 2016	मनोज पी. सैम्यूल आर. कल्पना शास्त्री	19 (02)
7.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय एवं संस्थानों के आशुलिपिक ग्रेड-3, निजी सहायक, निजी सचिव, पीपीएस, वरिष्ठ पीपीएस की दक्षता एवं व्यवहार कौशल में वृद्धि करना	28 जुलाई – 3 अगस्त, 2016	देबशीष मोइत्रा जे. रेणुका	31 (15)
8.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के तकनीकी अधिकारियों के लिए शिष्टाचार प्रबंधन पर दक्षता संवर्धन कार्यक्रम	10 – 12 अगस्त, 2016	जमीर अहमद पी. विजेन्द्र रेड्डी	14 (02)
9.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तकनीकी अधिकारियों के लिए प्रोत्साहन एवं सकारात्मक सोच	17 – 26 अगस्त, 2016	जनार्दन राव चेली लक्ष्मण एम. अहिर	34 (02)
10.	प्रयोगात्मक डाटा का विश्लेषण	18 – 23 अगस्त, 2016	एस. रविचन्द्रन ए. दण्डापानी	13 (02)
11.	तनाव प्रबंधन	6 – 9 सितम्बर, 2016	ए. देबनाथ पी. रमेश	13 (02)
12.	कृषि अनुसंधान में पुरस्कार जीतने वाले अनुसंधान प्रस्तावों को तैयार करना	20 – 24 सितम्बर, 2016	एस.के. सोम बी.एस. सोन्ताकी	15 (08)
13.	एनआईसी के साथ समन्वय में भारत के पूर्वी भाग में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के लिए सीपीपी पोर्टल के माध्यम से एनआईसी के ई-खरीद समाधान का क्रियान्वयन	26 – 28 सितम्बर, 2016	डब्ल्यू.एस. भट्ट राजू कुमार	27 (05)
14.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के नव-नियुक्त वित्त एवं लेखा अधिकारियों के लिए इन्डक्शन प्रशिक्षण का माड्यूल-3	17 अक्टूबर – 16 नवम्बर, 2016	एस. जॉर्ज एन. विजया लक्ष्मी	01 (0)
15.	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए भू-स्थानिक विश्लेषण	18 – 27 अक्टूबर, 2016	पी.डी. श्रीकान्त एस.के. सोम	18 (04)
16.	कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (DoPT) (RTI - MIS) के आरटीआई ऑन-लाइन पोर्टल से संबंधित सार्वजनिक प्राधिकरण के नोडल अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण	25 अक्टूबर, 2016	आशीष राय पी. विजेन्द्र रेड्डी	40 (08)

17.	कृषि में जैव सूचनाप्रणाली टूल्स एवं तकनीकें	1 – 10 नवम्बर, 2016	एम. बालाकृष्णन दिनेश कुमार (IASRI)	17 (04)
18.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) में वित्तीय प्रबंधन	15 – 19 नवम्बर, 2016	एस. जॉर्ज एन. विजया लक्ष्मी	01 (0)
19.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय एवं संस्थानों के आशुलिपिक ग्रेड-3, निजी सहायक, निजी सचिव, पीपीएस, वरिष्ठ पीपीएस की दक्षता एवं व्यवहार कौशल में वृद्धि करना	24 – 30 नवम्बर, 2016	लक्ष्मण एम. अहिर डब्ल्यू.एस. भट्ट	35 (17)
20.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तकनीकी अधिकारियों के लिए प्रोत्साहन एवं सकारात्मक सोच पर कार्यक्रम	30 नवम्बर – 9 दिसम्बर, 2016	एन. शिवारमने पी. विजेन्द्र रेड्डी	43 (03)
21.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायकों/वरिष्ठ लिपिकों के लिए स्थापना एवं वित्तीय मामले	22 – 28 दिसम्बर, 2016	आशीष राय डब्ल्यू.एस. भट्ट	34 (06)
22.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय एवं संस्थानों के आशुलिपिक ग्रेड-3, निजी सहायक, निजी सचिव, पीपीएस, वरिष्ठ पीपीएस की दक्षता एवं व्यवहार कौशल में वृद्धि करना	4 – 10 जनवरी, 2017	पी. मोहन सिंह के.आर. घनश्याम	33 (16)
23.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए दक्षता संवर्धन कार्यक्रम	13 – 15 फरवरी, 2017	आर.वी.एस. राव पी. रमेश	21 (02)
24.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए दक्षता संवर्धन कार्यक्रम	16 – 18 फरवरी, 2017	आर.वी.एस. राव के.एच. राव	17 (02)
25.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए दक्षता संवर्धन कार्यक्रम	20 – 22 फरवरी, 2017	आर.वी.एस. राव आलोक कुमार	26 (02)
26.	प्रयोगात्मक डाटा का विश्लेषण	20 – 25 फरवरी, 2017	ए. दण्डापानी एस. रविचन्द्रन	24 (07)
27.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मानव संसाधन विकास नोडल अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए दक्षता संवर्धन कार्यक्रम	23 – 25 फरवरी, 2017	पी. रमेश के.एच. राव	31 (04)
28.	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायकों/वरिष्ठ लिपिकों के लिए स्थापना एवं वित्तीय मामले	1 – 7 मार्च, 2017	एस. जॉर्ज आशीष राय	33 (03)
29.	नार्म के कुशल सहायी स्टाफ के लिए व्यक्तित्व एवं कार्य उत्कृष्टता	20 – 25 मार्च, 2017	आलोक कुमार आर.वी.एस. राव	27 (07)

*कोष्ठक में दिए गए आंकड़े महिला प्रतिभागियों की संख्या को दर्शाते हैं

2.1.5 कार्यशाला, सेमिनार, सम्मेलन एवं बैठक

ऑन-कैम्पस तथा ऑफ-कैम्पस विधि से कार्यशालाओं, सेमिनार, सम्मेलनों आदि का आयोजन करने और सुविधा प्रदान करने में सक्रिय भागीदारी में अकादमी की वैज्ञानिक दृढ़ता प्रतिलक्षित होती है। वर्ष 2016-17 के दौरान, अकादमी द्वारा कुल 19 आयोजन किए जिनका विवरण तालिका 2.7 में प्रस्तुत है। कार्यशालाओं और सम्मेलनों का आयोजन करने में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सियां जुड़ीं।

कार्यशालाएं

कार्यशालाओं में विभिन्न विषयों पर व्यापक चर्चा तथा सक्रियता की सुविधा प्रदान कराई गई। प्रमुख विषयों में शामिल थे : मानवशक्ति की जरूरत; शून्य बजटिंग; जैविक संसाधनों तक पहुंच; कृषि शिक्षा पर आईसीटी एवं प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण का प्रभाव; कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन रणनीतियां; प्रसार अनुसंधान एवं मूल्यांकन में बेहतर रीतियां; फोकार्स; तथा फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम आदि। रिपोर्टाधीन वर्ष में, संस्थान परिसर में कुल 9 कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

चित्र : पशु चिकित्सा मानवशक्ति जरूरत पर ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला में डॉ. रश्मि अग्रवाल, निदेशक, **NILERD** एवं डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, नार्म प्रतिभागियों के साथ चर्चा करते हुए

चित्र : फार्मर फर्स्ट परियोजना पर राष्ट्रीय समीक्षा एवं जागरूकता कार्यशाला के प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. ए.के. सिंह, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), भाकृअनुप.

चित्र : जैविक विविधता अधिनियम पर जागरूकता कार्यशाला में प्रतिभागियों को सम्बोधित करती हुई डॉ. बी. मीनाकुमारी, अध्यक्ष, एनबीए

चित्र : **TELAGe** परियोजना के तहत आयोजित नीति कार्यशाला के प्रतिभागी

सेमिनार

आईएफपीआरआई के सहयोग से नई दिल्ली में "कृषि अनुसंधान क्षमता, निवेश एवं आउटपुट में हालिया रुझान" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन और सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से "पोषण संवेदी कृषि : प्रसार की परिवर्तनशील भूमिका" पर फोकस करते हुए अकादमी में चार दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

बैठकें

विभिन्न क्षेत्रों यथा कृषि, बागवानी, पशु पालन, मात्स्यिकी, ग्रामीण विकास एवं कृषि वानिकी को शामिल करके भाकृअनुप – केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIFRI), बैरकपुर के सहयोग से कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार में केन्द्र-राज्य समन्वय पर महत्वपूर्ण बैठकों में एक बैठक जोन-2 के लिए 23वीं भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विभिन्न राज्यों यथा आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के शीर्ष अधिकारियों ने भाग लिया।

चित्र : 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस – 2017 में उद्घाटन सम्बोधन करते हुए डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप

चित्र : एनएएस, पूसा, नई दिल्ली में आईएफपीआरआई द्वारा प्रायोजित एसटीआई परियोजना के तहत आयोजित आउटरिच बैठक में परस्पर चर्चा करते हुए प्रतिभागी

चित्र : भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति – 2 की 23वीं बैठक में विशेषज्ञों का आगमन

चित्र : भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति – 2 की 23वीं बैठक में प्रतिभागी

अकादमी में आयोजित अन्य उल्लेखनीय बैठकों एवं कार्यशालाओं को तालिका 2.7 में दर्शाया गया है।

तालिका 2.7 : आयोजित कार्यशाला, सेमिनार, सम्मेलन एवं बैठक

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या*	द्वारा आयोजित (के सहयोग से)
कार्यशाला					
1.	पशु चिकित्सा मानवशक्ति जरूरतों पर ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला	30 अप्रैल, 2016	डी. थम्मी राजू	13 (03)	एनआईएलआरडी, नई दिल्ली
2.	“शून्य बजटिंग प्राकृतिक खेती – राज्य 25 स्तर टीओटी” पर राज्य स्तरीय प्रशिक्षण व कार्यशाला	4 – 6 मई, 2016	पी. वेंकटेशन	35 (15)	राज्य कृषि विभाग, तेलंगाना
3.	जैविक विविधता अधिनियम, 2002 के तहत जैविक संसाधनों तक पहुंच के लिए दिशानिर्देशों पर जागरूकता कार्यशाला	15 जुलाई, 2016	एस.के. सोम	68 (11)	बायोटेक कंसोर्शियम इंडिया लि. (BCIL)
4.	भारत में कृषि शिक्षा पर आईसीटी के प्रभाव पर परामर्शी कार्यशाला	8 – 9 अगस्त, 2016	सूर्या राठौर एस. रविचन्द्रन	17 (07)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
5.	वर्ष 2030 के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन रणनीतियों पर ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला	2 सितम्बर, 2016	बी.एस. सोन्ताकी	50 (06)	—
6.	प्रसार अनुसंधान एवं मूल्यांकन में बेहतर रीतियों पर कार्यशाला	29 नवम्बर – 2 दिसम्बर, 2016	बी.एस. सोन्ताकी	23 (08)	CRISP, MANAGE, हैदराबाद
7.	फोकर्स के पुनर्गठन पर ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला	3 दिसम्बर, 2016	डी. थम्मी राजू	83 (17)	-
8.	‘कृषि शिक्षा में प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण अपनाने हेतु रणनीतियां’ पर कार्यशाला	14 – 15 मार्च, 2017	एस. सेन्थिल विनयागम जी.आर.के. मूर्ति	53 (07)	NAE, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत TELAgE परियोजना
9.	फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) पर राष्ट्रीय स्तरीय समीक्षा एवं जागरूकता कार्यशाला	18 – 19 मार्च, 2017	पी. वेंकटेशन एन. शिवारमने बी.एस. सोन्ताकी	115 (13)	विस्तार प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
सेमिनार					
10.	नई दिल्ली में “भारत में कृषि अनुसंधान क्षमता, निवेश एवं आउटपुट में हालिया रुझान” पर राष्ट्रीय सेमिनार	17 अगस्त, 2016	बी. गणेश कुमार आर. कल्पना शास्त्री	25 (06)	आईएफपीआरआई, दक्षिण-पूर्व एशिया सेन्टर
11.	“पोषण संवेदी कृषि : प्रसार की परिवर्तनशील भूमिका” पर 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस	28 – 31 जनवरी, 2017	बी.एस. सोन्ताकी	280 (82)	सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई

					दिल्ली
बैठक					
12.	जोन-2 के लिए 23वीं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद क्षेत्रीय समिति बैठक (150)	24 - 25 जून, 2016	बी. गणेश कुमार	150 (6)	सीआईएफआरआई, बैरकपुर
13.	हैदराबाद स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के लिए "एमआईएस - एफएमएस की क्रियान्वयन स्थिति" पर समीक्षा बैठक	13 दिसम्बर, 2016	एन. श्रीनिवास राव	30 (04)	ई-गवर्नेंस प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली
14.	"कोहा एलएमएस का उपयोग करके पुस्तकालयों के लिए प्रगति मुद्दे" पर पारस्परिक सत्र	24 फरवरी, 2017	एन. श्रीनिवास राव एस.के. सोम	22 (04)	-
15.	वर्ष 2030 तक प्लेनेट 50 - 50 पर पैनल चर्चा	8 मार्च, 2017	सूर्या राठौर	90 (55)	-
16.	वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करना पर पारस्परिक सत्र	18 मार्च, 2017	पी. कृष्णन	325 (120)	राज्य कृषि विश्वविद्यालय (SAUs)
17.	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी, 2017	पी. कृष्णन	95 (15)	-

*कोष्ठक में दिए गए आंकड़े महिला प्रतिभागियों की संख्या को दर्शाते हैं

2.1.6 प्रायोजित कार्यक्रम

अकादमी द्वारा ऑफ-कैम्पस तथा ऑन-कैम्पस दोनों विधियों में विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संगठनों द्वारा प्रायोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, तमिल नाडु पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा प्रायोजित दो ऑफ-कैम्पस कार्यक्रमों का आयोजन संबंधित स्थानों पर किया गया।

संस्थान परिसर में कुल नौ प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनका विवरण तालिका 2.8 में दिया गया है। इनमें से अधिकांश को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा अल्पावधि पाठ्यक्रम के रूप में एवं विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग (DST) और केवीएएसयू द्वारा प्रायोजित किया गया। इन नौ कार्यक्रमों में से, तीन का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अनुसंधान परियोजनाओं के हिस्से के तौर पर किया गया।

बांग्लादेश कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए "बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन" विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया जिसे सार्क द्वारा प्रायोजित किया गया। इसका आयोजन अकादमी में ही किया गया।

चित्र : **TELAGe** कार्यशाला के तहत आयोजित समापन कार्यक्रम में श्रीमती वी. उषा रानी, महानिदेशक, **MANAGE**

चित्र : बांग्लादेश के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का **TELAGe** प्रयोगशाला में दौरा

चित्र : "कृषि में बिग डाटा एनालिटिक्स" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक सत्र

चित्र : पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में ऑफ-कैम्पस कार्यक्रम

चित्र : प्रतिभागियों द्वारा समूह कार्य

तालिका 2.8 : प्रायोजित कार्यक्रमों का आयोजन

क्र. सं.	शीर्षक	द्वारा प्रायोजित	राशि (लाख रुपये)	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या *
1.	तनुवास (TANUVAS) के संकाय सदस्यों के लिए पुरस्कार जीतने वाले अनुसंधान प्रस्तावों को तैयार करना (ऑफ-कैम्पस)	तनुवास (TANUVAS)	2.33	20 – 23 अप्रैल, 2016	एस.के. सोम डी. रामा राव	25 (7)
2.	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के अनुसंधान प्रबंधकों के प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए रणनीतियां	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना	2.32	26 – 30 अप्रैल, 2016	आर.वी.एस. राव डी.डी. वर्मा	25 (9)
3.	बांग्लादेश कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारियों के लिए बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन पर अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	सार्क	\$ 5330	9 – 13 मई, 2016	आर. कल्पना शास्त्री	5 (0)
4.	कृषि में बिग डाटा एनालिटिक्स	विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग	6.00	13 – 22 जून, 2016	एस. रविचन्द्रन एन. शिवारमने	43 (7)
5.	कृषि वैज्ञानिकों एवं शिक्षकों के संवर्धित प्रदर्शन के लिए व्यक्तित्व विकास एवं स्व-प्रोत्साहन	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अल्पावधि पाठ्यक्रम	1.95	12 – 21 जुलाई, 2016	आर.वी.एस. राव के.एच. राव पी. रमेश	25 (3)
6.	कृषि प्रसार के लिए आईसीटी अनुप्रयोग	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अल्पावधि पाठ्यक्रम	1.95	25 अगस्त – 3 सितम्बर, 2016	सूर्या राठौर संध्या शिर्नाय एम. बालाकृष्णन	17 (5)
7.	दूरस्थ मोड (ऑफ-लाइन) के माध्यम से शिक्षण उत्कृष्टता (TCTE)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	-	26 सितम्बर – 2 नवम्बर, 2016	एस. सेन्थिल विनयागम जी.आर.के. मूर्ति	41 (17)
8.	वीडियो एवं कम्प्यूटर आधारित शैक्षणिक सामग्री उत्पादन (TELAgE के तहत)	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद	1.05	19 – 28 अक्टूबर, 2016	डी. थम्मी राजू एस. सेन्थिल विनयागम	16 (6)
9.	उद्यमशीलता विकास एवं व्यवसाय इनक्यूबेशन स्कोप एवं मॉडल्स (एग्री-इनोवेशन सेन्टर के अंतर्गत)	केवीएसयू, त्रिशूर	4.00	24 – 28 अक्टूबर, 2016	के. श्रीनिवास	22 (5)
10.	प्रसार पेशेवरों के लिए दक्षता कौशल संवर्धन	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद	1.95	1 – 10 नवम्बर, 2016	पी. वेंकटेशन बी.एस. सोन्ताकी एन. शिवारमने	17 (0)
11.	प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण की नवोन्मेषी युक्तियां	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद	3.0	17 – 26 नवम्बर, 2016	जी.आर.के. मूर्ति पी. रमेश	19 (6)

(TELAgE के तहत)						
12.	शिक्षा प्रौद्योगिकी में हालिया नवोन्मेष	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अल्पावधि पाठ्यक्रम	1.90	6 – 15 दिसम्बर, 2016	पी. रमेश डी. थम्मी राजू एस. सेन्थिल विनयागम	23 (6)

*कोष्ठक में दिए गए आंकड़े महिला प्रतिभागियों की संख्या को दर्शाते हैं

2.1.7 ऑन-लाइन पाठ्यक्रम

अकादमी द्वारा दो ऑन-लाइन पाठ्यक्रम यथा 1) मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स, जो कि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में आयोजित MOOCs श्रृंखला का दूसरा था, तथा 2) चयनित प्रतिभागियों के लिए ऑन-लाइन दूरस्थ पाठ्यक्रम (तालिका 2.9) आयोजित किए गए।

‘प्रभावी शिक्षण के लिए दक्षता संवर्धन’ पर मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स (MOOC) का प्रमुख उद्देश्य प्रतिभागियों को शिक्षण के विभिन्न आयामों के बारे में जानकारी प्रदान करना और गुणवत्ता शिक्षा के लिए प्रभावी शिक्षण स्टाइल का विकास करना है। यह पाठ्यक्रम पांच सप्ताह से अधिक अवधि का है। इस पाठ्यक्रम में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कृषि एवं गणित जैसे विभिन्न विषयों से 122 संस्थानों के रिकॉर्ड संख्या में कुल 1003 प्रतिभागियों ने भाग लिया। पाठ्यक्रम की सफलता दर 52.74 प्रतिशत (1003 में से 529) थी। समग्र रूप से चित्रांकन करने पर पता चलता है कि 69.28 प्रतिशत प्रतिभागी कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञान का प्रतिनिधित्व करते थे जबकि शेष 30.72 प्रतिशत अन्य क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते थे। तीन चौथाई से अधिक पंजीकृत यूजर्स (लगभग 77 प्रतिशत) युवा संकाय/वैज्ञानिक/स्नातकोत्तर/डॉक्टरल छात्र थे जबकि शेष 23 प्रतिशत विभिन्न श्रेणियों से संबंधित थे।

शिक्षण गतिकी को समझने और ऑन-लाइन एवं ऑफ-लाइन मोड की तुलना करने के लिए चयनित विश्वविद्यालयों के 20 संकाय सदस्यों को ‘दूरस्थ मोड के माध्यम से शिक्षण उत्कृष्टता’ पर एक ऑन-लाइन पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया था।

तालिका 2.9 : ऑन-लाइन पाठ्यक्रमों का आयोजन

क्र.सं.	शीर्षक	अवधि	समन्वयक	प्रतिभागियों की कुल संख्या*
1.	प्रभावी शिक्षण के लिए दक्षता संवर्धन पर मैसिव ओपन ऑन-लाइन पाठ्यक्रम (MOOC)	18 नवम्बर – 22 दिसम्बर, 2016	डी. थम्मी राजू जी.आर.के. मूर्ति	1003 (300)
2.	दूरस्थ मोड (ऑन-लाइन) के माध्यम से शिक्षण उत्कृष्टता	26 सितम्बर – 25 अक्टूबर, 2016	एस. सेन्थिल विनयागम जी.आर.के. मूर्ति	20 (3)

*कोष्ठक में दिए गए आंकड़े महिला प्रतिभागियों की संख्या को दर्शाते हैं

चित्र : MOOC प्रतिभागियों को ऑन-लाइन सम्बोधित करते हुए डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप

चित्र : कृषि शिक्षा दिवस के अवसर पर “ MOOC @ NAARM ” पर पुस्तक का विमोचन करते हुए डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप

2.2 अकादमी के स्टाफ द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

2.2.1 संकाय सदस्य

तालिका 2.10 : संकाय सदस्यों की प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	कार्यक्रम का नाम	द्वारा आयोजित	अवधि	व्यय (रूपये में)
1.	डॉ. संजीव कुमार	संकाय विकास कार्यक्रम	आईआईएम, अहमदाबाद	25 अप्रैल – 31 मई, 2016	45,800
2.	डॉ. सुधीर कुमार सोम	खाद्य के लिए आईएएआर पर राष्ट्रीय सेमिनार	भारत	4 – 6 मई, 2016	4,000
3.	श्री एस.पी. सुभाष	एफडीपी कार्यक्रम	आईआईएम, अहमदाबाद	6 जून – 24 सितम्बर, 2016	1,96,786
4.	डॉ. श्रीकांत पगडाला दामोदरन	कृषि में बिग डाटा एनालिटिक्स	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	13 – 22 जून, 2016	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित
5.	डॉ. आर. कल्पना शास्त्री	वरिष्ठ तकनीशियन प्रैक्टिशनर	हैदराबाद	20 जुलाई, 2016	16,250
6.	डॉ. थम्मी राजू धूमन्तराव	पेशेवर उच्चतर शिक्षा में उत्कृष्टता निर्माण करना	आईएसबी, हैदराबाद	24 – 25 जुलाई, 2016	69,000
7.	डॉ. एस. रविचन्द्रन	कम्पीटिटिव इन्स्टालीस्यूर ट्रांसफार्मिंग इन्फार्मेशन	XIME, बंगलुरु	4 – 5 अगस्त, 2016	4,000
8.	डॉ. एन. शिवारमने	समकालिक व्यवसाय विश्लेषण प्रैक्टिस	आईआईएम, अहमदाबाद	14 – 17 सितम्बर, 2016	1,03,500
9.	डॉ. एस. रविचन्द्रन	बिग डाटा वर्ल्ड में व्यवसाय एनालिटिक्स पर एमडीपी	नई दिल्ली	21 – 23 सितम्बर, 2016	24,000
10.	डॉ. संजीव कुमार	R का उपयोग करके प्रगत व्यवसाय एनालिटिक्स में प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम	आईआईटी, हैदराबाद	1 – 23 अक्टूबर, 2016	25,000
11.	श्री एस.पी. सुभाष	बीज तक पहुंच	आईएसआईडी, नई दिल्ली	24 – 28 अक्टूबर, 2016	13,034
12.	डॉ. मंजू गेरार्ड	कृषि अनुसंधान प्रबंधन पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	15 – 26 नवम्बर, 2016	
13.	डॉ. जी.आर. रामकृष्णा	मास्टर शिक्षक कार्यक्रम पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस, हैदराबाद	17 – 20 नवम्बर, 2016	40,000
14.	डॉ. सूर्या राठौर	नेतृत्व विकास पर प्रबंधन विकास कार्यक्रम (एक प्री-आरएमपी कार्यक्रम)	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	19 – 30 दिसम्बर, 2016	शून्य
15.	डॉ. वेंकट सत्यनारायण राव राजनाला	वैज्ञानिकों/प्रौद्योगिकीविदों के लिए कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिचातुर्य पर कार्यक्रम	सेन्टर फॉर ऑर्गेनाजेशनल डेवलपमेन्ट, हैदराबाद	30 जनवरी – 3 फरवरी, 2017	शून्य
16.	डॉ. एम. कृष्णन एवं डॉ. डी. थम्मी राजू	एसोसिएटिड स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद में विज्ञान प्रशासन एवं	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद	6 – 17 फरवरी, 2017	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा

		अनुसंधान प्रबंधन			प्रायोजित
17.	डॉ. मंजू गेरार्ड	सरकारी सेक्टर की महिला वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदों के लिए उद्यमशीलता विकास एवं प्रबंधन	भारतीय उद्यमशीलता विकास संस्थान, अहमदाबाद	6 – 10 फरवरी, 2017	शून्य
18.	डॉ. थम्मी राजू धूमन्तराव	ई-लर्निंग एवं डिजिटल शिक्षा	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद	20 – 22 मार्च, 2017	34,000
19.	डॉ. जी.आर. रामकृष्ण मूर्ति	ई-लर्निंग एवं डिजिटल शिक्षा	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद	20 – 22 मार्च, 2017	34,000
20.	डॉ. एस. सेन्थिल विनयागम	ई-लर्निंग एवं डिजिटल शिक्षा	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद	20 – 22 मार्च, 2017	34,000
21.	डॉ. एन. श्रीनिवासराव	ई-लर्निंग एवं डिजिटल शिक्षा	एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद	20 – 22 मार्च, 2017	34,000

तालिका 2.11 : संकाय सदस्यों द्वारा सेमिनार/कार्यशाला/सम्मेलन/प्रदर्शनी में भागीदारी

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम	कार्यक्रम का नाम	द्वारा आयोजित	अवधि
1.	डॉ. थम्मी राजू धूमन्तराव	भारत में कृषि शिक्षा पर आईसीटी के प्रभाव आकलन हेतु कार्यप्रणाली विचार	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	8 – 9 अगस्त, 2016
2.	डॉ. थम्मी राजू धूमन्तराव	वर्ष 2030 के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन रणनीतियां	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	2 सितम्बर, 2016
3.	डॉ. मंजू गेरार्ड	एशियन साइन्स पार्क एसोसिएशन का 20वां वार्षिक सम्मेलन	हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेन्टर, हैदराबाद	19 – 22 अक्टूबर, 2016
4.	डॉ. मंजू गेरार्ड	ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट	जेईसीसी, जयपुर	9 – 11 दिसम्बर, 2016
5.	डॉ. मंजू गेरार्ड	बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन पर प्रगत कार्यशाला	एनएससी परिसर, पूसा, नई दिल्ली – 110 012	12 – 14 जनवरी, 2017
6.	डॉ. मंजू गेरार्ड	प्रथम BioNEST कनक्लेव – प्रौद्योगिकियों की स्केलिंग हेतु उद्यमशीलता का पोषण करने वाले बायो- इनक्यूबेटर्स	इंडिया हैबिबेट सेन्टर, नई दिल्ली	30 – 31 जनवरी, 2017
7.	श्री एस.पी. सुभाष	जलवायु परिवर्तन एवं कृषि से जुड़े मुद्दों का प्रभाव मूल्यांकन	इंस्टिट्यूट फॉर इकोनॉमिक ग्रोथ, नई दिल्ली	6 – 10 फरवरी, 2017

अकादमिक अथवा शैक्षणिक

भारतीय कृषि में हो रहे बदलावों को देखते हुए अकादमी द्वारा कृषि अनुसंधान से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट मानव संसाधन प्रबंधन की अपनी क्षमता की कल्पना की गई है। तदनुसार, वर्तमान में अकादमी द्वारा निम्नलिखित स्नातकोत्तर शिक्षा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं।

1. वर्ष 2009 से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) द्वारा अनुमोदित दो वर्षीय पूर्णरूपेण आवासीय प्रबंधन (कृषि) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA)
2. वर्ष 2011 से हैदराबाद विश्वविद्यालय के साथ सहयोग करके दूरस्थ मोड में कृषि में प्रौद्योगिकी प्रबंधन में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDTMA)

पिछले छः वर्षों के दौरान पीजीडीएमए और पीजीडीटीएमए कार्यक्रमों में सफलतापूर्वक शिक्षा पूरी करने वाले छात्रों की संख्या को निम्नलिखित चित्र 3.1 में दर्शाया गया है।

चित्र 3.1 : पीजीडीएमए एवं पीजीडीटीएमए कार्यक्रमों में स्नातकोत्तर छात्र

3.1 कृषि प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA)

प्रबंधन (कृषि) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा –PGDMA दो वर्षीय है जो कि पूरी तरह से आवासीय कार्यक्रम है तथा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) द्वारा अनुमोदित है। इस कार्यक्रम की डिजाइन कृषि एवं कृषि व्यवसाय की एक सम्यक संभावना के साथ युवा कृषि व्यवसाय प्रबंधकों की नई पीढ़ी का योगदान करने तथा इस सेक्टर के हितधारकों द्वारा महसूस की जा रही चुनौतियों का ठोस समाधान खोजने की क्षमताओं के साथ तैयार की गई। कार्यक्रम द्वारा छात्र-छात्राओं का विकास क्षमताशील प्रबंधकों के तौर पर किया जाता है और उन्हें कार्यशील विशेषज्ञता, उद्यमशीलता कौशल, सेवा उन्मुखता तथा सामान्य प्रबंधन पूर्वक्षण के संबंध में मूल्य वर्धन प्रदान किया जाता है ताकि भारत में कृषि के रूपांतरण का संचालन करने में नेतृत्वदायी भूमिका उठाने में युवा बेहतर तरीके से तैयार हो सकें।

3.1.1 प्रवेश

कुल तीस छात्र-छात्राओं ने पीजीडीएमए (2016-18) कार्यक्रम के आठवें बैच में प्रवेश अथवा दाखिला लिया। पीजीडीएमए (2017-19) के नवें बैच की प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। इन शैक्षणिक कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित तालिका 3.1 में दिया गया है।

पीजीडीएमए (2015-17) के सातवें बैच में कुल 22 छात्र-छात्राएं थीं। सभी ने अपनी स्नातकोत्तर शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी की और उनका रोजगार नियोजन अग्रणी कृषि व्यवसाय कम्पनियों में हुआ। कार्यक्रम के दौरान, प्रबंधन के विभिन्न क्षेत्रों में छात्र-छात्राओं को 35 पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए, 10 सप्ताह अवधि की इन्टर्नशिप कराई गई, और छठे ट्राइमेस्टर में एक परियोजना कार्य कराया गया। छात्रों द्वारा की गई परियोजनाओं का विवरण तालिका 3.2 में सूचीबद्ध किया गया है।

तालिका 3.1 : शैक्षणिक कार्यक्रमों का विवरण

कार्यक्रम	अवधि	छात्र-छात्राओं की संख्या
प्रबंधन (कृषि) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, 2016-18 बैच (प्रथम वर्ष)	01 जुलाई, 2016 से अप्रैल, 2018	30
प्रबंधन (कृषि) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, 2015-17 बैच (द्वितीय वर्ष)	01 जुलाई, 2015 से अप्रैल, 2017	22
कुल		52

तालिका 3.2 : वर्ष 2015-17 बैच (IGDMA) के छात्र-छात्राओं द्वारा की गई अध्ययन परियोजनाओं का विवरण

क्र.सं.	छात्र-छात्रा का नाम	परियोजना का शीर्षक	गाइड/सुपरवाइजर (नाम संकाय)
1.	आफताब आलम	गुजरात राज्य के बनासकांठा जिले में सौर ऊर्जा से चालित सिंचाई पम्पों का प्रदर्शन विश्लेषण	एम. कृष्णन
2.	आनन्द गुप्ता	कृषि इनपुट डीलरों की जीआईएस मैपिंग	ए. दण्डापानी
3.	आशीष कुमार ठाकुर	हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में सेब का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण	एस. रविचन्द्रन
4.	आयुश भण्डारी	प्रयोगात्मक नीलामी युक्ति का उपयोग करके "कार्यपरक पास्ता" के लिए भुगतान करने वाले इच्छुक उपभोक्ताओं का अनुमान	पी. वेंकटेशन
5.	चंदना यशोदा बोगाडी	फार्म मशीनरी और उपकरणों के लिए कस्टम हायरिंग केन्द्रों का रणनीतिपरक प्रोफाइल विश्लेषण	के. करीमुल्ला के. श्रीनिवास
6.	देशमुख निलेश प्रतापराव	महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के चुनिन्दा क्षेत्रों में वंचित वर्गों के वित्तीय समावेश में NABFINS की भूमिका	मंजू गेरार्ड
7.	कमलेन्द्र कुमार सिंह	धुले (महाराष्ट्र) में सूक्ष्म वित्त के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में NABFINS की भूमिका	एस.के. सोम
8.	कोथा मणी भारत	तेलंगाना राज्य में ई-NAM की मूल्यांकन एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया	पी.सी. मीणा
9.	मंजूनाथ अराकेरी	भारतीय दालों के लिए व्यापार रूझानों का विश्लेषण	एम.बी. दस्तागिरी
10.	एम.डी. ग्यासुद्दीन	भारत के झारखण्ड राज्य के राजगढ़ जिले में स्व: सहायतार्थ समूहों द्वारा उपयोगिता की सीमा और स्व: सहायता समूहों को गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से सूक्ष्म वित्त में NABFINS की भूमिका	वी.के. जयराघवेन्द्र राव
11.	मिलन गुप्ता	मध्य प्रदेश में राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM) के तहत एपीएमसी मंडी का क्रियान्वयन एवं प्रदर्शन	रंजीत कुमार
12.	मुख्तार आलम	"कदन्न उत्पादों के वितरण हेतु अग्रिम सिरा आपूर्ति श्रृंखला" का मानचित्रण	एम. बालाकृष्ण
13.	निशान्त गौरव	उत्तर प्रदेश राज्य में जिला स्तर पर उर्वरक मांग-आपूर्ति का भू-स्थानिक विश्लेषण	पी.डी. श्रीकांत के. श्रीनिवास
14.	प्रगति मिश्रा	राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM) : संगठन एवं प्रदर्शन	संजीव कुमार
15.	सौरभ कुमार	उत्तराखण्ड में रागी का मूल्य श्रृंखला विश्लेषण	के.एच. राव
16.	शीशम राणा	भारत में मोबाइल आधारित कृषि परामर्श सेवा (MAAS) : इनकी प्रभावशीलता का एक आकलन	भरत एस. सोन्ताकी
17.	विश्वनाथ वीरप्पा जवूर	कृषि में आईसीटी इनोवेशन : कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (UAS), धारवाड़ कृषि विज्ञान केन्द्र का एक मामला	एस. सेन्थिल विनयागम

3.1.2 रोजगार नियोजन

रिपोर्टाधीन वर्ष में रोजगार नियोजन प्रक्रिया में कृषि व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों से कुल 12 कम्पनियों ने भाग लिया। कम्पनियों को तालिका 3.3 में सूचीबद्ध किया गया है। सातवें बैच के सभी छात्रों को रुपये 6.1 लाख वार्षिक के औसत सीटीसी के साथ विभिन्न कम्पनियों में रोजगार प्रदान किया गया।

3.2 प्रौद्योगिकी प्रबंधन (कृषि) में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDTMA)

वर्ष 2011 से हैदराबाद विश्वविद्यालय के सहयोग से कृषि में प्रौद्योगिकी प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGD-TMA) प्रस्तुत किया जा रहा है। कुल पंजीकृत 404 छात्र-छात्राओं में से अभी तक 162 छात्र-छात्राओं द्वारा इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया गया। अधिकांश छात्र सेवारत अभ्यर्थी थे जो कि विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों

यथा इकीसेट, प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान एवं आकलन परिषद (TIFAC), नीति आयोग, कृषि विश्वविद्यालयों, हैदराबाद विश्वविद्यालय (UoH), भारतीय खाद्य निगम (FCI) और राज्य विभागों का प्रतिनिधित्व करते थे।

3.2.1 छात्र परियोजनाएं

पाठ्यक्रम की आंशिक पूर्णता के तौर पर, छात्रों द्वारा अनुसंधान अध्ययन परियोजनाओं पर कार्य किया गया। इन परियोजनाओं पर हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित नार्म सहित स्वतंत्र अनुसंधान सुपरवाइजरों के साथ मिलकर कार्य किया गया। इन परियोजनाओं का मूल्यांकन हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा चिन्हित परियोजना मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा किया गया। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के संकाय के साथ पूरी की परियोजनाओं की सूची तालिका 3.4 में प्रस्तुत की गई है।

3.4 भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के संकाय द्वारा एम.एससी./पीएच.डी. छात्र-छात्राओं का मार्गदर्शन

विभिन्न कृषि एवं सम्बद्ध विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राएं भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के संकाय के मार्गदर्शन में अपनी एम.एससी./पीएच.डी. का शोध निबंध/थीसिस तैयार कर रही हैं। छात्र-छात्राओं और उनके सादृश्य परियोजनाओं के विवरण को तालिका 3.5 में सूचीबद्ध किया गया है।

तालिका 3.3 : रोजगार नियोजन प्रक्रिया में भाग लेने वाली कम्पनियों की सूची

क्र.सं.	कम्पनी का नाम	क्र.सं.	कम्पनी का नाम
1.	चम्बल फर्टिलाइजर्स एंड केमीकल्स लि.	7.	नाबार्ड फाइनेन्सियल सर्विसेज लि.
2.	कोकून वेयरहाउसिंग एंड लॉजीस्टिक प्रा. लि.	8.	नागार्जुन फर्टिलाइजर एंड केमीकल्स लि.
3.	धानुका एग्रीटेक लि.	9.	NCDEX लि.
4.	ESAF माइक्रोफाइनेन्स लि.	10.	Q & Q रिसर्च इनसाइट्स प्रा. लि.
5.	जुबिलैट लाइफ साइन्सिज	11.	टाटा कन्सलटेन्सी सर्विसेज लि.
6.	काइनेटेक डाटा सर्विसेज प्रा. लि.	12.	यूपीएल लि.

तालिका 3.4 : नार्म संकाय (PGTMA) द्वारा मार्गदर्शन की गई परियोजनाओं का विवरण

छात्र-छात्रा का नाम	परियोजना का शीर्षक	गाइड/सुपरवाइजर (नार्म संकाय)
समतानी निशा	खाद्य, पोषण एवं आय सुरक्षा के लिए प्रशिक्षण एवं सूचना भागीदारी के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा	पी.डी. श्रीकांत

तालिका 3.5 : नार्म संकाय द्वारा पीएच.डी. तथा एम.एससी. शोध निबंध/थीसिस को मार्गदर्शन

क्र.सं.	संकाय	छात्र-छात्रा	कार्यक्रम	शोध निबंध/थीसिस का शीर्षक	विश्वविद्यालय/संस्थान
1.	बी. गणेश कुमार	गुलाब पाठक	एम.एससी.	बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में लीची का आपूर्ति श्रृंखला विश्लेषण	पीजेटीएसएयू
2.	एम. बालाकृष्णन	नरेश कुमार जजोरिया	एम.एससी.	आन्ध्र प्रदेश एवं तेलंगाना में कदन्न फसल संसाधनों के लिए कृषि जैव विविधता	एसकेएन कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान
3.	एम. बालाकृष्णन	नवीन कुमार मो. अतीक सुल्तान गोरी	एम.एससी.	कृत्रिम न्यूरल नेटवर्क एवं डाटा माइनिंग तकनीकों का उपयोग करके हल्दी एवं गन्ना के लिए उपज पूर्वानुमान मॉडल	भृतहरि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर, तमिल नाडु

4.	पी.डी. श्रीकांत	शियो राम यादव	एम.एससी.	भारत के पांच राज्यों में चावल उत्पादन और राइसब्रान तेल उद्योगों के लिए जीआईएस आधारित निर्णय समर्थित प्रणाली (DSS) का विकास करना	एसकेएन कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान
5.	पी. कृष्णन	वी. वनिता	पीएच.डी.	प्रभावी स्थिति एवं ज्ञान संबंधी क्षमता के आधार पर लर्निंग पथ निर्माण हेतु एक अनुकूलनीय ई-लर्निंग प्रणाली	अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई
6.	एम. गेरार्ड	शायला हक	पीएच.डी.	औषधीय पौधों <i>जैस्मीनम ऑरीकुलेटम</i> तथा <i>काइसेन्थेमम कोरोनेरियम</i> से सिल्वर नैनो पार्टिकल्स बायोफैब्रीकेटिड का संश्लेषण एवं लक्षण वर्णन	SHIATS, इलाहाबाद
7.	एम. गेरार्ड	रईस अहमद मलिक	पीएच. डी.	प्रगत फोटोनिक अनुप्रयोग के लिए नवीन जैविक पायरीडिन टेट्राजोल आधारित ट्रांजीशन धातु काम्प्लेक्स का संश्लेषण	SHIATS, इलाहाबाद
8.	बी.एस. सोन्ताकी	पी. विजेन्द्र रेड्डी	पीएच. डी.	भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) में प्रशिक्षण प्रबंधन पर एक अध्ययन	PJTSAU, हैदराबाद
9.	एम. कृष्णन	आई. शिवारमन	पीएच. डी.	आन्ध्र प्रदेश में श्रिम्प पालन में बेहतर प्रबंधन रीतियों का एक छिद्रान्वेषी विश्लेषण	भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई
10.	एम. कृष्णन	ग्रीन सी	एम. एफएससी.	भारत के मात्स्यकी स्नातकों के बीच कैरियर पसंद का एक आकलन	भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई
11.	एस.के. सोम	रजनीश यादव	पीएच. डी.	अन्य फलदार फसलों के साथ एकजैसे समजातीय प्रोटीन अनुक्रम के साथ माल्टा जीन के लिए जातिवृत्तीय अध्ययन	एसकेएन कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, राजस्थान

3.4 छात्र-छात्राओं की सह-पाठ्यचर्या गतिविधियां

छात्र-छात्राओं के पेशेवर कैरियर के लिए वांछित जानकारी, दृष्टिकोण और कौशल से छात्र-छात्रा को सुसज्जित करने के प्रयोजन से अकादमी में अनेक पहल की गई हैं। इनमें से कुछ के बारे में यहां संक्षिप्त जानकारी दी गई है।

3.3.1 संकल्प

यह एक राष्ट्रीय स्तरीय व्यवसाय आयोजन था जिसे पीजीडीएमए के छात्रों द्वारा आयोजित किया गया और इसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं को शामिल किया गया था जैसे कि पोस्टर निर्माण, विज्ञापन तैयार करना, व्यवसाय प्रश्नमंच तथा मामला अध्ययन आदि। इस आयोजन का प्रयोजन छात्रों में संगठनात्मक क्षमता का निर्माण करना है।

दिनांक 17 सितम्बर, 2016 को मार्केटिंग आयोजन में "Marketing Catapult" तथा "Brand Oceania" को शामिल किया गया। अकादमी में दर्पण, एक व्यवसाय प्रश्नमंत्र, विज्ञापन निर्माण, एक आईएमसी योजना प्रतियोगिता और

समाधान, एक मामला अध्ययन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए जबकि सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र दिए गए।

चित्र : संकल्प 2016 के दौरान प्रतिभागी

चित्र : डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), नार्म से प्रमाण-पत्र ग्रहण करती हुई विजेता प्रतियोगी

3.3.2 कृषि कल्प

यह एक व्यवसाय योजना प्रतियोगिता है जिसका आयोजन अकादमी द्वारा किया गया और इसमें देशभर के विभिन्न संस्थानों से प्रतिभागियों को आमंत्रित किया गया। इसके माध्यम से छात्रों के बीच नए विचारों को आत्मसात करने के साथ साथ यह जानकारी हासिल करना भी शामिल है कि अन्य व्यवसाय स्कूलों के छात्रों द्वारा किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता में पीजीडीएमए के छात्रों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

3.3.3 मंथन

यह एक साप्ताहिक आयोजन है जिसका आयोजन अकादमी द्वारा पीजीडीएमए छात्रों के लिए किया जाता है और इसमें प्रत्येक छात्र को श्रोताओं के सम्मुख पहले से निर्धारित विषय पर प्रस्तुतिकरना देना अनिवार्य होता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों के संचार कौशल को विकसित करना है।

3.5 पीजीडीएमए छात्रों को पुरस्कार एवं मान्यताएं

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद की छात्र टीम जिसमें प्रथम वर्ष के पीजीडीएमए के छात्र श्री एस. कविनराज और श्री सिद्धार्थ भट्टाचार्य शामिल थे, ने महिन्द्रा एग्री साल्यूशन्स द्वारा आयोजित महिन्द्रा एग्रीप्रीन्यूर (राष्ट्रीय स्तरीय मामला अध्ययन प्रतियोगिता) में प्रथम स्थान हासिल किया। इस प्रतियोगिता में कुल 300 प्रतियोगियों में से केवल 6 टीमों को छांट लिया गया था और अकादमी की छात्र टीम को “ The Mavericks ” कहा गया। पुरस्कार में एक प्रमाण-पत्र और रुपये 75,000/- की नकद राशि शामिल थी।

चित्र : राष्ट्रीय स्तरीय मामला अध्ययन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार ग्रहण करते हुए नार्म के छात्र

3.6 स्नातक दिवस

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के स्नातकोत्तर कार्यक्रमों का दूसरा स्नातक समारोह (Graduation Ceremony) दिनांक 3 सितम्बर, 2016 को मनाया गया। श्री सुरेश रायडु चित्तुरी, उपाध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (MD), श्रीनिवास हेचेरीज लि., समारोह के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने वर्ष 2015-16 में अपनी संबंधित परीक्षा में शीर्ष पर रहे पदक विजेताओं को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए और उन्हें सम्मानित किया। सुश्री संजना भौमिक एवं श्री के. मल्लेश गौड ने क्रमशः पीजीडीएमए और पीजीडीटीएमए में शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किए। कुल मिलाकर, कृषि प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA) में 16 छात्र-छात्राओं और कृषि में प्रौद्योगिकी प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDTMA) में 28 छात्र-छात्राओं ने डिग्री हासिल की।

चित्र : श्री के. मल्लेश गौड अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए

पीजीडीएमए – वर्ष 2009 से यात्रा

पाठ्यक्रम के प्रदर्शन को जानने और गुणवत्ता मानवशक्ति का सृजन करने; स्नातकों के वांछित लक्ष्यों के बारे में प्रथम दृष्टया जानकारी हासिल करने; और कृषि व्यवसाय प्रबंधन शिक्षा का विविधीकरण करने हेतु एवं स्केलिंग-अप के लिए अवसरों की पहचान करने के प्रयोजन से अध्ययन किया गया। कृषि प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA) द्वारा 19 राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 26 कृषि विश्वविद्यालयों से छात्रों को आकर्षित किया गया।

इस कार्यक्रम से छात्रों को संचार कौशल, विश्लेषण, प्रबंधन व सूचना प्रौद्योगिकी कौशल में सुधार लाने के संबंध में लाभ पहुंचा है। इससे लगभग 100 प्रतिशत रोजगार नियोजन हासिल करने में मदद मिली है जो कि किसी भी प्रबंधन

कॉलेज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण "आकर्षण कारक (pull factor)" के रूप में जाना जाता है। नार्म की एलुमनी के रोजगार प्रोफाइल में बिक्री एवं विपणन का बोलबाला है। नार्म स्नातकों के लिए वेतन में वार्षिक वृद्धि अत्यंत संतोषजनक है।

प्रारंभिक वर्षों के दौरान, यह वृद्धि हालांकि कम थी लेकिन अब यह रफतार पकड़ रही है जिससे उद्योग में हमारे स्नातकों के प्रदर्शन का पता चलता है। कुल मिलाकर, नार्म एलुमनी अपनी पसंद और हासिल उपलब्धियों के बारे में अत्यंत संतुष्ट है। भविष्य में अपना स्वयं का उद्यम स्थापित करने की दिशा में झुकाव होना एक अच्छा संकेत है।

चित्र

कृषि प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (PGDMA) कार्यक्रम द्वारा एक सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न किया गया है। इस प्रभाव को तीन सेटों में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है। पहले प्रभाव के रूप में कृषि व्यवसाय पेशेवरों के रूप में तुरंत आउटपुट का होना और साथ ही अकादमी के लिए राजस्व सृजन का एक नया स्रोत होना है। दूसरे प्रभाव जो कि अगोचर है लेकिन नार्म की उन्नत विजीबिलिटी अर्थात दृष्टव्यता के रूप में और कृषि व्यवसाय के विशिष्ट क्षेत्र में अनुसंधान के एक नए क्षेत्र का निर्माण करने में अत्यंत मूल्यवान है। तीसरा प्रभाव दीर्घावधि है जिसे कृषि उद्यमशीलता में वृद्धि, कृषि अर्थशास्त्र में मूल्य संवर्धन में वृद्धि और महिला अनुकूल कृषि व्यवसाय उद्योग के माध्यम से महसूस किया जा सकता है। संचयी संदर्भ में, कार्यक्रम द्वारा न केवल अकादमी को स्वयं अपने लिए उत्कृष्ट क्षेत्र विकसित करने में मदद की जा रही है वरन् इससे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को भी विपणन और मूल्य श्रृंखला में हस्तक्षेप करके कृषि क्षेत्र को उत्प्रेरित करने के दीर्घावधि लक्ष्यों को पूरा करने में मदद की जा रही है।

अधिक विवरण के लिए देखें : रंजीत कुमार, कल्पना शास्त्री, आर; संजीव कुमार, राव, के.एच. एवं मीणा, पी.सी. (2017)। पीजीडीएमए : ए जर्नी सिन्स 2009, ऑकेशनल पेपर 18, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद

कृषि में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) द्वारा प्रस्तुत आईपी एवं टीएम प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रमों का प्रभाव अध्ययन

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा वर्ष 2007 से अनेक क्षमता निर्माण पहल की जा रही हैं। अकादमी द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लिए बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन के क्षेत्र में संवेदनशीलता एवं जागरूकता कार्यक्रमों के रूप में प्रारंभ करके बाद में जल्दी ही विशिष्ट क्षेत्रों में कस्टमाइज्ड प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। वर्ष 2009 में, 5वें पंचवर्षीय समीक्षा दल (QRT) की सिफारिशों के आधार पर, अकादमी द्वारा पहली बार कृषि में आईपी एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रस्तुत किया गया। तब कुल 16 छात्रों को प्रवेश दिया गया और उन्होंने सफलतापूर्वक अपने पाठ्यक्रम को पूरा किया। उद्योग से उठने वाली मांग के आधार पर, पाठ्यक्रम की डिजाइन दोबारा तैयार की गई और कार्यरत पेशेवरों तक पहुंच स्थापित करने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्लेटफार्म पर इस पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया गया। वर्तमान में, दूरस्थ शिक्षा केन्द्र (CDVL), हैदराबाद विश्वविद्यालय के साथ भागीदारी करके दूरस्थ मोड में इस पाठ्यक्रम को लगातार प्रस्तुत किया जाता है। वर्ष 2016 में एक मूल्यांकन अध्ययन किया गया ताकि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) और अन्य के बीच इन पहलों के प्रभाव का पता लगाया जा सके।

मध्यवर्ती पाठ्यक्रम विश्लेषण के रूप में अध्ययन किया गया ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या आईपी एवं टीएम पाठ्यक्रम और कार्यक्रम के उद्देश्य पूरे होते हैं। विश्लेषण से इस क्षेत्र में एक सकारात्मक कौशल विकास का पता चला। यह वास्तविकता है कि प्रशिक्षण द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में बड़ी संख्या में मानव संसाधनों के विकास को बढ़ावा मिला जो कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की बौद्धिक सम्पदा नीति के अनुसार है। रोचक रूप से, शैक्षणिक कार्यक्रमों में अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों की तुलना में बड़ी अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का प्रभाव कहीं ज्यादा था। शैक्षणिक कार्यक्रम के छः वर्षों में ऐसे पेशेवरों के एक इकोसिस्टम का सृजन करने को बल मिला जो कि न केवल कुशल हैं बल्कि कैरियर, परियोजनाओं एवं पदोन्नति को हासिल करने में समर्थ थे। इससे छात्रों

एवं प्रारंभिक कैरियर पेशेवरों को भी आईपी एवं टीएम के क्षेत्र में अपने कैरियर को आशानुरूप ढालने में मदद मिली। कृषि में आईपी एवं टीएम के विकासशील डोमेन में उच्च स्तरीय पेशेवरों का विकास करने हेतु और अधिक ऐसी पहल करने की जरूरत है। दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रमों (MOOCs) के लिए डिजीटल प्लेटफार्म के उभरते युग में पाठ्यक्रम की पहुंच को बढ़ाने के लिए ऐसे प्लेटफार्म के माध्यम से कहीं अधिक हितधारकों तक पहुंच स्थापित करने की संभावना तलाशी जाए।

अधिक विवरण के लिए : सुभाष, एस.पी; गेरार्ड, एम; श्रीनिवास, के. एवं कल्पना शास्त्री, आर. (2017)। डेवलपिंग इनटेलेक्चयुल प्रापर्टी एंड टेक्नोलॉजी मैनेजमेन्ट प्रोफेशनल्स इन **NARES**: दि केस ऑफ नार्म, ऑकेशनल पेपर 19 (प्रेस में)

अध्याय – 4

अनुसंधान एवं परामर्शी परियोजनाएं

अनुसंधान एवं परामर्शी परियोजनाएं

4.1 अनुसंधान परियोजनाओं पर एक नजर

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, कुल 20 अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा था जिनमें से 9 को वित्तीय सहायता स्वयं अकादमी द्वारा प्रदान की गई थी जबकि 8 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और 1 को जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की गई थी। इसके अलावा, अकादमी में तम्बाकू बोर्ड, RGMVP - बरेली और RIS व MoEFCC द्वारा प्रदत्त तीन परामर्शी परियोजनाएं भी चलाई जा रही हैं।

अनुसंधान परियोजनाओं को निम्नलिखित प्रमुख विषयों के साथ चलाया गया :-

- कृषि नवोन्मेष प्रणालियों का नेतृत्व एवं शासन प्रणाली
- नवोन्मेष एवं बेहतर शासन प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए सूचना एवं ज्ञान प्रबंधन
- शैक्षणिक वातावरण, लगातार शिक्षण, संकाय उत्कृष्टता, प्रशिक्षु सशक्तिकरण और विस्तारशील पहुंच में सुधार लाने के लिए शिक्षा प्रणाली प्रबंधन
- टिकाऊ आजीविका सुरक्षा एवं किसान सशक्तिकरण के लिए प्रसार प्रणाली प्रबंधन
- प्रभावी, उत्तरदायी एवं टिकाऊ कृषि खाद्य प्रणालियों के लिए कृषि व्यवसाय प्रबंधन

4.1.1 संस्थान द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएं

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM) द्वारा वित्त पोषित नौ परियोजनाओं को तालिका 4.1 में दर्शाया गया है।

तालिका 4.1 : संस्थान द्वारा वित्त पोषित परियोजनाएं

क्र.सं.	परियोजना का नाम	कार्मिक / टीम	अवधि
1.	कृषि जिंस मूल्य पूर्वानुमान के लिए सांख्यिकीय समय श्रृंखला मॉडलिंग के अनुप्रयोग का आकलन	एस. रविचन्द्रन	मार्च, 2014 से दिसम्बर, 2016
2.	देसी प्रौद्योगिकी जानकारी के लिए पोर्टल का विकास	एम. बालाकृष्णन एस.के. सोम पी. वेंकटेशन	अप्रैल, 2014 से मार्च, 2018
3.	सामुदायिक उद्यमशीलता में तेजी लाने में प्रोड्यूसर कम्पनी का प्रभाव	पी. वेंकटेशन बी.एस. सोन्ताकी एन. संध्या शिर्नॉय	अप्रैल, 2014 से दिसम्बर, 2016
4.	गुणवत्ता कृषि शिक्षा के लिए शिक्षण दक्षता फ्रेमवर्क का विकास	पी. रमेश डी. थम्मी राजू	अप्रैल, 2016 से मार्च, 2018
5.	कृषि में मामला अध्ययन विकास	वी.के.जे. राव सूर्या राठौर	अप्रैल, 2015 से मार्च, 2017
6.	कृषि में महिला आधारित आईसीटी प्रेरित ज्ञान प्रबंधन	एन. संध्या शिर्नॉय वी.के.जे. राव पी.डी. श्रीकांत	जुलाई, 2016 से जून, 2017
7.	विश्व व्यापार संगठन व्यवस्था के दौरान भारतीय कृषि व्यापार के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार सिगनल : अनुसंधान एवं विकास रणनीतियां एवं नीतियां	एम.बी. दस्तागिरी के. करीमुल्ला	अप्रैल, 2016 से मार्च, 2017
8.	भारत में पशुधन आहार उद्योग का रणनीतिपरक एवं वित्तीय विश्लेषण	संजीव कुमार बी. गणेश कुमार पी.सी. मीणा	अप्रैल, 2016 से मार्च, 2018
9.	MOOCs के माध्यम से कृषि उच्चतर शिक्षा में अतुल्यकालिक	डी. थम्मी राजू	अप्रैल, 2016 से मार्च,

शिक्षण : एक मामला अध्ययन अनुसंधान	जी.आर.के. मूर्ति	2018
-----------------------------------	------------------	------

4.1.2 बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं

अकादमी द्वारा कुल आठ बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं चलाई जा रही हैं जिनका विवरण तालिका 4.2 में प्रस्तुत है।

तालिका 4.2 : बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं

क्र.सं.	परियोजना का नाम	कार्मिक/टीम	द्वारा प्रायोजित	बजट (लाख रूपये)	अवधि
1.	कृषि शिक्षा में प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण (TELAGe)	जी.आर.के. मूर्ति डी. थम्मी राजू पी. रमेश एस. सेन्थिल विनयागम	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	425.00	जनवरी, 2014 से दिसम्बर, 2017
2.	भारत में रागी का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण	बी. गणेश कुमार एन. शिवारमने	जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT), भारत सरकार	43.88	अप्रैल, 2015 से मार्च, 2018
3.	दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से शिक्षण दक्षता का संवर्धन	एस. सेन्थिल विनयागम जी.आर.के. मूर्ति	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	14.50	फरवरी, 2016 से मार्च, 2017
4.	ज्ञान प्रबंधन के लिए KRISHI - भाकृअनुप अनुसंधान डाटा रिपोजिट्री	ए. दण्डापानी एस.के. सोम	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	49.76	जनवरी, 2014 से मार्च, 2017
5.	एबीआई की स्थापना	के. श्रीनिवास मंजू गेरार्ड	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	79.15	जनवरी, 2016 से मार्च, 2017
6.	कृषि प्रौद्योगिकी स्कीम का व्यावसायीकरण (IPTM - ZTMC)	के. श्रीनिवास मंजू गेरार्ड एस.पी. सुभाष	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	19.15	अप्रैल, 2014 से मार्च, 2017
7.	भारत में कृषि शिक्षा पर आईसीटी का प्रभाव	सूर्या राठौर एस. रविचन्द्रन	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	16.00	जनवरी, 2016 से मार्च, 2017
8.	फार्मर फर्स्ट परियोजना का प्रबंधन एवं प्रभाव आकलन	पी. वेंकटेशन बी.एस. सोन्ताकी एन. शिवारमने	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली – 110 001	65.00	मार्च, 2017 से मार्च, 2018

4.1.3 परामर्शी परियोजनाएं

अकादमी में कुल तीन परामर्शी परियोजनाएं चलाई जा रही हैं जिनका विवरण तालिका 4.3 में प्रस्तुत है।

तालिका 4.3 : परामर्शी परियोजनाओं की सूची

क्र.सं.	परियोजना का नाम	कार्मिक/टीम	द्वारा प्रायोजित	बजट (लाख	अवधि
---------	-----------------	-------------	------------------	-------------	------

				रूपये)	
1.	तम्बाकू उपचार का पर्यावरणीय प्रभाव आकलन	आई. सेकर	तम्बाकू बोर्ड	20.87	मार्च, 2017 से दिसम्बर, 2017
2.	उत्तर प्रदेश में सामुदायिक आधारित बीज उत्पादक (CBSP), महिला स्व: सहायता समूहों के समूहों और समूह मॉडल पर सामाजिक-आर्थिक अध्ययन	एस.पी. सुभाष	आरजीएमवीपी, रायबरेली, उत्तर प्रदेश	2.50	सितम्बर, 2016 से जून, 2017
3.	एलएमओ के सामाजिक-आर्थिक आकलन के लिए दिशानिर्देश एवं कार्यप्रणालियां विकसित करना	के. श्रीनिवास पी.सी. मीणा एस.पी. सुभाष	आरआईएस एवं MoEFCC	6.00	मई, 2015 से जून, 2016

4.2 संस्थान द्वारा वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

4.2.1 कृषि जिंस मूल्य पूर्वानुमान के लिए सांख्यिकीय समय श्रृंखला मॉडलिंग के अनुप्रयोग का आकलन

कृषि अनुसंधान में प्रायः उत्पन्न किए जाने वाले विश्वसनीय पूर्वानुमान का विशेष महत्व होता है। एक विश्वसनीय पूर्वानुमान निष्पक्ष और कम से कम स्थिर होना चाहिए और इसके द्वारा हित के आर्थिक परिवर्त के अनुमानित मूल्य के लिए एक संकीर्ण विश्वास अन्तराल प्रदान किया जाना चाहिए तथा साथ ही विश्वास बैंड्स को शामिल किया जाना चाहिए ताकि परिवर्त घटनाओं की संभावना का पर्याप्त रूप से चित्रण किया जा सके। इन प्रयोजनों के लिए समय श्रृंखला मॉडलों का उपयोग व्यापक स्तर पर किया जाता है। इनमें से, सामान्यीकृत ऑटोरिग्रेसिव कंडीशनल हीटरोस्केडैस्टिक प्रोसेस (GARCH) और इसका पूर्ववर्ती, ऑटोरिग्रेसिव कंडीशनल हीटरोस्केडैस्टिक प्रोसेस (ARCH) समय श्रृंखला विशेषता की किस्म की मॉडलिंग के लिए उपयोगी साबित हुए हैं क्योंकि बहु समय-श्रृंखला परिवर्त में स्व: सुधार के साथ साथ गतिशील हीटरोस्केडैस्टिसिटी प्रदर्शित होती है। समय समय पर विभिन्न एजेन्सियों द्वारा अनेक कृषि जिंसों के मूल्य पूर्वानुमानों के लिए मॉडल पर कार्य किया गया। यह प्रमाणित हुआ कि कृषि जिंसों के मूल्य नॉन-फार्म जिंसों की तुलना में कहीं अधिक उतार-चढ़ाव वाले हैं। मूल्य के मामले में इन जिंसों में संस्थागत जोखिम के कारण मूल्य एवं आय के प्रति कम लचीलापन है और ये परम्परागत रूप से अस्थिर है। कृषि जिंसों के मूल्यों में अत्यधिक उतार-चढ़ाव द्वारा अर्थव्यवस्था पर विषमता अथवा असंगतता, शुद्ध रूप से गैर-रेखीय अथवा असममिति प्रभाव हो सकता है और अभूतपूर्व दबाव को सहन करने में असफलता मिल सकती है।

इस तथ्य को ध्यान में रखकर, वर्तमान में उपयोग की जा रही विभिन्न कृषि जिंसों के लिए उपयोग किए गए मूल्य पूर्वानुमान मॉडल्स पर जानकारी संकलित करने के प्रयोजन से अध्ययन किया गया ताकि जिंस वार मूल्य पूर्वानुमानों को प्रभावित करने वाले पैरामीटरों की पहचान की जा सके; सजीव डाटासेटों का उपयोग करके बाजार परिस्थितियों के तहत उन मॉडल्स को परखा जा सके और मूल्य पूर्वानुमान के लिए उपयुक्त मॉडल्स की सिफारिश की जा सके। तेलंगाना की मंडी (गडिडयानारम) से जनवरी, 2015 – दिसम्बर, 2016 की अवधि के लिए दैनिक आवक और न्यूनतम, अधिकतम तथा मॉडल मूल्यों पर आंकड़ों को संकलित किया गया। इसमें कुल 720 डाटा प्वाइंट्स थे और डाटा की प्लॉटिंग करने पर स्पष्टतया प्रदर्शित हुआ कि सभी तीनों जिंसों यथा प्याज, टमाटर और अंगूर के मूल्यों के डाटासेटों में उच्च उतार-चढ़ाव की स्थिति मौजूद थी। कुल 720 डाटा प्वाइंट्स में से, 90 प्रतिशत डाटा प्वाइंट का उपयोग कृषि जिंसों के पूर्वानुमान के लिए भिन्न-भिन्न मॉडलों के विभिन्न समय श्रृंखला मॉडल्स यथा अरिमा (ARIMA) समय श्रृंखला मॉडल्स, संरचनात्मक समय श्रृंखला मॉडल्स (STM), गैर-रेखीय समय श्रृंखला मॉडल्स, ARCH, GARCH, TAR, STAR तथा SETAR परिवार का विकास करने के लिए किया गया जिनमें मूल्य उतार-चढ़ाव प्रदर्शित होता है। शेष 5 प्रतिशत डाटा का उपयोग विकसित मॉडल का परीक्षण एवं प्रमाणन करने में किया गया जिसके लिए सटीकता उपायों की विभिन्न जांच यथा RMSE, SE, AIC, SBC आदि का उपयोग किया गया। उपरोक्त समय श्रृंखला मॉडलिंग उपायों का उपयोग करते हुए प्रासंगिक पैरामीटरों का अनुमान लगाने के लिए इन मॉडलों का विकास किया गया। प्याज, टमाटर तथा अंगूर जैसी कृषि जिंसों के मूल्यों पर डाटासेट के लिए ARCH मॉडल सर्वाधिक उपयुक्त पाया गया क्योंकि इन डाटा में

आंकड़ों में उच्च उतार-चढ़ाव की मौजूदगी प्रदर्शित होती है और इसलिए जहां कहीं जिसों के मूल्यों में उच्च उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है वहां ARCH मॉडल का उपयोग किया जा सकता है।

चित्र 4.1 : तेलंगाना में अंगूर के मूल्य

4.2.2 स्वदेशी तकनीकी ज्ञान (ITK) के लिए पोर्टल का विकास

कृषि में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान की पहचान करने और उसे श्रेणीबद्ध करने और साथ ही स्वदेशी तकनीकी ज्ञान के लिए एक वेब पोर्टल विकसित करने के प्रयोजन से अनुसंधान परियोजना पर कार्य किया गया। इस परियोजना में आंकड़ों का संकलन करने के लिए एक समय-सारणी तैयार की गई। प्रारंभिक और सेकेण्डरी आंकड़ों का संकलन किसानों; कृषि विभाग, तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय (TNAU); आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय (ANGRAU); कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (UAS); केरल कृषि विश्वविद्यालय (KAU); कृषि विज्ञान केन्द्र तथा एफईटी रिपोर्ट; प्रकाशित रिपोर्ट; भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा जारी सीडी-रोम और मिशन इकाई, कृषि विस्तार प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा कृषि दस्तावेज 1/2/3 में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान की प्रविष्टि सूची से किया गया।

इस पोर्टल में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान (ITK) संसाधनों यथा स्वदेशी तकनीकी ज्ञान का नाम, प्रचलित नाम, विवरण, स्थान, आर्थिक महत्व आदि से संबंधित जानकारी का विवरण और मूलभूत सेट शामिल है। सूनामी से पूर्व और सूनामी के पश्चात् वाली परिस्थितियों दोनों में उगाई गई फसलों, सिंचाई के स्रोत, उपज विवरण, निवेश का उपयोग, फसलचक्र पैटर्न, नाशीजीवों व रोगों का प्रकोप, रोजगार पैटर्न और महसूस की गई बाधाओं आदि को पूरा किया गया है। डाटाबेस की डिजाइन सापेक्ष डाटाबेस विधि द्वारा तैयार की गई है। JSP में अग्र सिरा, MS-SQL सर्वर में पार्श्व सिरा और MS-SQL का उपयोग करके तालिकाओं का विकास कार्य प्रगति पर है। अभी तक, डाटाबेस में कपास के लिए 56, चावल के लिए 265, मक्का के लिए 13 तथा पशु विज्ञान एवं मात्स्यिकी के लिए 23 स्वदेशी तकनीकी ज्ञान अस्तित्व अथवा संस्थाओं का अद्यतन किया गया है। पशु विज्ञान एवं मात्स्यिकी के डाटासेट तमिल नाडु और आन्ध्र प्रदेश से संबंधित हैं।

4.2.3 सामुदायिक उद्यमशीलता में तेजी लाने हेतु उत्पादक कम्पनी का प्रभाव

इस अध्ययन का प्रयोजन चयनित उत्पादक कम्पनियों की ऑपरेशनल क्रियाविधि को दस्तावेजी रूप प्रदान करना, उत्पादक अथवा प्रोड्यूसर सदस्यों का प्रोफाइल हासिल करना, महत्वपूर्ण सफलता कारकों एवं चुनौतियों का निर्धारण करना, अनुभवजन्य प्रभाव का आकलन करना और उत्पादक कम्पनियों को बढ़ावा देने के लिए नीति रणनीतियों का सुझाव देना है।

तमिल नाडु से पांच तथा मध्य प्रदेश से दो प्रोड्यूसर कम्पनियों को चुना गया जिसका आधार प्रोड्यूसर कम्पनी की प्रकृति था जो कि या सामुदायिक आधारित अथवा संसाधन उन्मुख या किसी अन्य (जिस आधारित एवं बाजार उन्मुख) पर आधारित थी। चयनित प्रोड्यूसर कम्पनियों को सरकार, गैर सरकारी संगठनों अथवा निजी जनों द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

प्रत्येक प्रोड्यूसर कम्पनी के तीस सदस्यों से आंकड़ों का संकलन करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई ताकि एक पांच प्वाइंट स्केल में सामाजिक एवं आर्थिक संकेतकों के साथ प्रोड्यूसर कम्पनी के सदस्यों के अनुभवजन्य प्रभाव का मूल्यांकन किया जा सके। कम्पनी के प्रदर्शन के बारे में अनुभूति को सात प्वाइंट स्केल पर मापा गया।

सदस्यों का यह अनुभव था कि कम्पनी में सदस्यता तथा कम्पनी की गतिविधियों में सक्रियता से निवेश उपलब्धता, जिस की बढ़ी हुई उत्पादकता, शुद्ध लाभ, फार्म मशीनीकरण एवं पॉवर की उपयोगिता, क्रेडिट तक पहुंच और फसलचक्र सघनता में वृद्धि होने की दिशा में प्रभावशीलता आई है। हालांकि, सदस्यों की अनुभव प्रभावशीलता से बाजार मूल्य, मूल्य संवर्धन सम्पर्क, संबंधित बुनियादी सुविधा की दिशा में भरोसा उत्पन्न हुआ और सुनिश्चित बॉय-बैक औसत मान से नीचे था (तालिका 4.4)।

तालिका 4.4 : प्रोड्यूसर कम्पनी के सदस्यों की अनुभवजन्य प्रभावशीलता – आर्थिक संकेतक

आर्थिक संकेतक	निजी जनों द्वारा प्रोत्साहित एफपीओ (n = 30)	सरकार द्वारा प्रोत्साहित एफपीओ (n = 90)	गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रोत्साहित (n = 90)
फार्म मशीनीकरण और पॉवर की उपयोगिता में वृद्धि	6.8.	6.09	5.82
निवेश उपलब्धता में वृद्धि	6.43	6.34	6.32
क्रेडिट उपलब्धता तक पर्याप्त पहुंच	4.73	6.13	5.99
फसलचक्र सघनता में वृद्धि	6.13	5.80	5.49
जिस की उत्पादकता में वृद्धि	6.60	6.12	5.69
शुद्ध लाभ में वृद्धि	5.73	6.22	5.68
सुनिश्चित बॉय-बैंक	3.07	5.31	4.60
सुनिश्चित बाजार मूल्य	3.13	5.99	5.13
मूल्य वर्धन सम्पर्क एवं संबंधित बुनियादी सुविधा	3.00	5.43	4.47
औसत	5.07	5.94	5.46

अध्ययन में सामाजिक संकेतकों से पता चला कि सदस्यता का योगदान उन्नत उत्पादन प्रौद्योगिकी की बढ़ी हुई जानकारी में, निवेश खरीद के लिए मोल-भाव की शक्ति बढ़ाने में, महिलाओं तक लाभ को पहुंचाने में और उत्पादन प्रौद्योगिकी को अपनाने की दिशा में वृद्धि लाने में था। हालांकि, सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों द्वारा लाभ तक पहुंच, सामाजिक संघर्ष में कमी करने, निवेश खरीद में मोल-भाव की शक्ति को बढ़ाने और आउटपुट मार्केटिंग हेतु मोल-भाव की शक्ति को बढ़ाने के संबंध में अनुभवजन्य प्रभावशीलता रेटिंग औसत मान से कम थी।

चित्र 4.2 : प्रोड्यूसर सदस्यों के सामाजिक संकेतक

महिलाओं की लाभ तक पहुंच

सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों की लाभ तक पहुंच

सामाजिक संघर्ष में कमी

आउटपुट मार्केटिंग हेतु मोल-भाव करने की बढ़ी हुई शक्ति

निवेश खरीद हेतु मोल-भाव करने की बढ़ी हुई शक्ति

प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक बढ़ी हुई पहुंच

उत्पादन प्रौद्योगिकी को अपनाने में वृद्धि

उन्नत उत्पादन की जानकारी में वृद्धि

कम्पनी के प्रदर्शन के बारे में सदस्यों का अनुभूति विचार यह था कि सदस्यता का संयोजन विषमयुग्मज था। हस्तक्षेप के संबंध में, अध्ययन में प्रदर्शित हुआ कि एफपीओ की संकल्पना से विशेष वर्ग के लोगों के प्रभुत्व को कम करने और राजनीतिक हस्तक्षेप को कम करने में मदद मिली। पुनः इससे सही तरह से रिकॉर्ड का रख रखाव करने, सदस्यों के बीच संयोगशीलता को बढ़ाने, गतिविधियों और वित्तीय लेन देन में पारदर्शिता उत्पन्न करने में भी मदद मिली। अध्ययन में प्रदर्शित हुआ कि एफपीओ की संकल्पना से बाजार प्रक्रिया के निर्णयों में सदस्यों द्वारा भाग लेने के लिए भी मार्ग प्रशस्त हुआ।

सदस्यता में विषमयुग्मजता

सरकारी स्कीमों का कमवेशान

सदस्यों में संयोगशीलता
फण्ड में बढ़ोतरी के उपाय
व्यक्तियों के हस्तक्षेप को दूर करना
कम्पनी की व्यवसाय गतिविधियां
विशिष्ट वर्ग के लोगों के प्रभुत्व को कम करना
निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर
गतिविधियों में पारदर्शिता
रिकॉर्ड का रख-रखाव
वित्तीय लेन देन में पारदर्शिता
नियमों व विनियमों का पालन करना
लीडर्स/निदेशक मण्डल का चयन/चुनाव

चित्र 4.4 : अनुभवजन्य प्रभावशीलता – प्रदर्शन के बारे में अनुभव

चित्र : एफपीओ के प्रोड्यूसर सदस्यों के साथ पारस्परिक बातचीत

4.2.4 गुणवत्ता कृषि शिक्षा के लिए शिक्षण दक्षता फ्रेमवर्क का विकास

शिक्षण दक्षता फ्रेमवर्क एक ऐसा टूल है जिसके द्वारा शिक्षक की प्रभावशीलता अथवा दक्षता, उसकी दक्षता मजबूती, कमियों और जरूरतों का पता लगाया जाता है तथा साथ ही संकाय की दक्षता में सुधार लाने के संभावित तरीकों एवं उपायों का सुझाव दिया जाता है ताकि शिक्षण एवं शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। इस अध्ययन का उद्देश्य संकाय सदस्यों, छात्रों तथा अकादमिक प्रशासकों द्वारा महसूस किए गए शिक्षण दक्षता के स्तर का अनुमान लगाकर कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय के लिए एक शिक्षण दक्षता फ्रेमवर्क का विकास करना था। तदनुसार, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में वर्तमान साहित्य की समीक्षा करने के उपरान्त और साथ ही कृषि एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ परामर्श करके एक शिक्षण दक्षता प्रश्नावली (TCQ) तैयार की गई। संकाय की एक नमूना जनसंख्या पर परख कर अथवा परीक्षण करके विकसित प्रश्नावली का प्रमाणन किया गया। एक 28 मद दक्षता प्रश्नावली को अंतिम रूप दिया गया जिसमें निम्नलिखित व्यापक दक्षता डोमेन को शामिल किया गया यथा विषय सामग्री जानकारी; पाठ्यचर्या एवं अध्यापन संबंधी विषय वस्तु जानकारी; शिक्षण रणनीतियां तथा संचार कौशल; आकलन एवं मूल्यांकन; दृष्टिकोण एवं मूल्य तथा पेशेवर दक्षता।

शिक्षण दक्षता फ्रेमवर्क का अंतिम रूप से विकास करने में मौजूदा कमियों और वांछित दक्षताओं का पता लगाने के लिए चयनित कृषि विश्वविद्यालयों के संकाय, छात्रों और अकादमिक प्रशासकों से आंकड़ों को संकलित करने में इस प्रश्नावली का सदुपयोग किया जाएगा।

4.2.5 कृषि में मामला अध्ययन विकास

मामला अध्ययन किसानों के ऐसे जीवंत उदाहरण होते हैं जिनके माध्यम से टिकाऊ कृषि के लिए सर्वश्रेष्ठ रीतियों का प्रदर्शन किया जाता है। परियोजना के इस उद्देश्य के साथ, एक संरचित प्रश्नावली और साक्षात्कार समय-सारणी का उपयोग करते हुए दो मामलों को विकसित किया गया। इसे विखण्डित अर्ध विधि का उपयोग करके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथनों के साथ प्रस्तुत किया गया। उपकरण की विश्वसनीयता में सुधार लाने के लिए, कार्योत्तर (ex post facto) अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया गया और अकादमी द्वारा अंगीकृत किए गए गांवों नामतः नालगौण्डा जिले के छोटुप्पल मण्डल के एस. लिंगोटम और तल्लासिंगारम में क्रमशः 60 एवं 28 स्वतः

सहायता समूहों (SHGs) से आंकड़ों को संकलित किया गया। टोंक जिले के पलई गांव को अध्ययन के लिए 'कण्ट्रोल' के रूप में चुना गया। जहां जीआई रजिस्ट्री लागू थी, वहां स्वतः सहायता समूहों और आम की खेती करने वाले किसानों के साथ सकेन्द्रित समूह चर्चा, साक्षात्कार और पारस्परिक चर्चा की गई। जीआई मामला अध्ययन में आम अचार के लिए शिमोगा जिले की सागर तालुका; मलीहाबादी दशहरी के लिए लखनऊ और गिर केसर आम के लिए गुजरात का कच्छ क्षेत्र शामिल था।

स्वतः सहायता समूह के टिकाऊपन पर मामला

उपरोक्त मामले में, सभी स्वतः सहायता समूहों के बीच गांव में बचत देखी गई और भुगतान की वापसी नियमित थी तथा साथ ही कोई दोषी अथवा राशि का गबन करने वाला देखने को नहीं मिला। लेकिन, उद्यमशीलता को अभी उड़ान भरनी थी क्योंकि उत्पादन के स्तर पर आर्थिक गतिविधियां करने के लिए समूह उभर रहे थे जैसा कि अंकीरेड्डी गुडेम झांसी संभावना संघम द्वारा पुस्तक जिल्दसाजी (बुक बाइन्डिंग) का कार्य करके प्रति पुस्तक रुपये 1/- का लाभ अर्जित किया जा रहा है। इनके द्वारा प्रति माह हर आकार की लगभग एक लाख पुस्तकों पर जिल्दसाजी की जाती है और उसकी आपूर्ति पहले से अनुबंधित स्कूलों और कॉलेजों तथा हैदराबाद तक बाजारों में की जाती है। समूह का प्रत्येक सदस्य प्रति माह कम से कम रुपये 10,000/- का शुद्ध लाभ कमाता है और इनके समूह में कुल दस सदस्य हैं। समूह द्वारा अच्छी वित्त स्थिति को बनाए रखा जा रहा है और आर्थिक गतिविधियों को छोटुप्पल में DIVIS नामक कम्पनी के स्वामित्व में मजबूती प्रदान की गई है तथा साथ ही इनके द्वारा बाजार सम्पर्क भी प्रदान किए जाते हैं। एस. लिंगोटम और तल्लासिंगारम गांव में, इनके भागीदार प्रतिष्ठा इन्डस्ट्रीज थी जिनके द्वारा जैविक उर्वरक और अन्य आदान का उत्पादन किया जाता है। ये इन अंगीकृत गांवों में कच्ची सामग्री को स्रोत के रूप में पा सकते हैं और इन स्वतः सहायता समूहों द्वारा उत्पन्न उत्पादों को बाजार सम्पर्क की जरूरत होती है। इसलिए आगामी एवं पश्चगामी सम्पर्कों और उर्ध्वाकर समेकन के माध्यम से लोगों के लिए आय उत्पन्न करने का अवसर है।

आम उत्पादकों पर जीआई के प्रभाव का मामला

इस मामले से यह संकेत मिलता है कि अप्पेमिडी, मलीहाबादी दशहरी और गिर केसर के बारे में सकारात्मक जागरूकता थी और जीआई के उपरान्त आमदनी भी लगभग दोगुनी थी यथा 9 टन/एकड़ के औसत उत्पादन के साथ अप्पेमिडी में रुपये 2,25,000 प्रति एकड़ और गिर केसर के मामले में रुपये 2,40,000/- प्रति एकड़। मलीहाबादी दशहरी के मामले में लगभग रुपये 4,32,000/- प्रति एकड़ तक निवल आय में सर्वाधिक वृद्धि देखने को मिली। इसलिए, यह निष्कर्ष निकलता है कि किसानों की आमदनी को बढ़ाने और आपूर्ति श्रृंखला बनाने तथा मूल्य श्रृंखला को अति उत्पादित तथा लाभप्रद बनाने में जीआई टैग एक उपयोगी टूल है। जीआई टैग के कारण, उपभोक्तकों द्वारा ऑन-लाइन स्टोर के माध्यम से भी वास्तविक दशहरी एवं गिर केसर तथा अप्पेमिडी को खरीदा जा सकता है।

4.2.6 लिंग आधारित आईसीटी से प्रेरित कृषि में सूचना प्रबंधन

प्रमुख फसलों में कृषि प्रौद्योगिकियों के संबंध में लिंग वार जानकारी अन्तराल विश्लेषण करने; कृषि में आईसीटी टूल्स को अपनाने में प्रभावित करने वाले लिंग आधारित कारकों की पहचान करने; कृषि पर सूचना एवं जानकारी प्रणाली की पहचान एवं उसका मानकीकरण करने; वेब आधारित जीआईएस सूचना प्रणाली के लिए एक प्रोटोटाइप विकसित करने; और किसानों एवं कृषि महिलाओं द्वारा कृषि में आईसीटी के उपयोग पर एक लिंग भिन्न-भिन्न डाटाबेस विकसित करने के प्रयोजन अनुसंधान अध्ययन किया गया। भागीदारी जरूरत आकलन तथा मीडिया अनुसंधान के लिए परियोजना में एकीकृत आईसीटी मॉडल को आजमाया गया।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, डाटा संकलन उपकरण विकसित किए गए, उनका परीक्षण किया गया और डाटा संकलन का कार्य किसानों को यादृच्छिक विधि से चयन करके किया गया ताकि चयनित गांवों में प्रमुख फसलों के संदर्भ में जानकारी अन्तराल के साथ साथ लिंग आधारित आईसीटी के उपयोग का पता लगाया जा सके।

चयनित गांवों यथा एस. लिंगोटम और तल्लासिंगारम से प्रतिवादियों के बीच किए गए जानकारी अन्तराल विश्लेषण से सभी प्रमुख फसलों यथा धान, कपास (क्रमशः 64.32 प्रतिशत, 57.81 प्रतिशत) और अरहर (47.91 प्रतिशत,

55.53 प्रतिशत) के लिए पादप संरक्षण के क्षेत्र में अधिकतम अन्तराल का पता चला। दोनों ही गांवों में भूरे पादप फुदके, टुंग्रो तथा पत्ती घूर्णन प्रबंधन से संबंधित धान और समस्याग्रस्त मृदाओं के लिए बीज उपचार एवं जिंक प्रबंधन के मामले में जानकारी अन्तराल बहुत ज्यादा था। उच्च जानकारी अन्तराल वाले अन्य क्षेत्रों में शामिल थे : मृदा परीक्षण, लवणीय-क्षारीय मृदा प्रबंधन, आयरन की कमी का प्रबंधन और दलहन के साथ फसल रोटेशन।

आईसीटी की पहुंच और उपयोग से दोनों ही गांवों में मीडिया, टेलिविजन और मोबाइल फोन के लिए सुगम पहुंच का पता चला। रेडियो, फोन (लैण्ड लाइन), कम्प्यूटर, वीडियो आदि का उपयोग दोनों ही गांवों में किसी भी प्रतिवादी द्वारा खेती के लिए नहीं किया जाता। एस. लिंगोटम और तल्लासिंगारम गांव में समाचार पत्र (क्रमशः 27 प्रतिशत एवं 12 प्रतिशत) तथा कृषि पत्रिका (क्रमशः 12 प्रतिशत एवं 3 प्रतिशत) का उपयोग बहुत कम था। अध्ययनरत गांवों में शिक्षा की प्रकृति, आयु, कृषिजोत का आकार और खेती के अनुभव के बावजूद आरबीक्यू मानों के आधार पर कृषि संबंधी जानकारी के लिए पसंदीदा मीडिया में टेलीविजन का स्थान सबसे ऊपर था जबकि तदुपरान्त क्रमशः मोबाइल और समाचार-पत्र का स्थान पाया गया। इसके विपरीत, साख कारक के आधार पर कृषि के लिए मीडिया उपयोग की पसंद के संबंध में महबूबनगर जिले के चयनित गांवों में कृषि पत्रिका, अन्नदाता का स्थान पहला एवं उसके बाद टेलीविजन का स्थान देखने को मिला।

कृषि के उपयोग हेतु मीडिया की पसंद का अत्यधिक संबंध मीडिया तक पहुंच और उसके उपयोग के साथ जुड़ा है। इसलिए, पसंद विकसित करने हेतु नए मीडिया का प्रकटीकरण अनिवार्य है। शिक्षित एवं निरक्षर, युवा तथा वृद्ध, बड़े, छोटे अथवा सीमांत किसानों और कम अथवा अधिक कृषि अनुभव के बीच कृषि के लिए मीडिया उपयोग की पसंद के संबंध में कोई भिन्नता देखने को नहीं मिली।

हालांकि, वाई-फाई (Wi-Fi) तक पहुंच से जागरूकता और इन्स्ट्रुमेंट्स तक पहुंच में भिन्नता के कारण महिला व पुरुषों के बीच अन्तर का पता चला। जबकि, कोई भी महिला प्रतिवादी वाई-फाई के बारे में जागरूक नहीं थी जबकि कुछ ही पुरुषों के पास वाई-फाई की पहुंच वाला स्मार्ट फोन (15 प्रतिशत) था। 15 प्रतिशत पुरुषों की अपने स्मार्ट फोन के माध्यम से सोशल मीडिया (फेसबुक और व्हाट्सऐप) तक पहुंच थी। किसी भी महिला प्रतिवादी के पास स्मार्ट फोन नहीं था और वे सोशल मीडिया के बारे में जागरूक नहीं थीं। 50 प्रतिशत महिलाओं को अपने सेल फोन पर नाशीजीव प्रबंधन पर एसएमएस संदेश मिला। इसलिए, महिलाओं की अपने सेल फोन के माध्यम से एसएमएस संदेशों (ऑडियो/टेक्स्ट) तक आसानी से पहुंच थी। वित्तीय जानकारी और कर्ज के लिए महिलाओं व पुरुषों दोनों ही द्वारा मूलरूप से सेल फोन का इस्तेमाल किया गया। लगभग 45 प्रतिशत पुरुषों और 33 प्रतिशत महिलाओं ने अपने मोबाइल फोन से बैंक अधिकारियों से सम्पर्क किया। लगभग 23 प्रतिशत पुरुषों ने कृषि अधिकारियों से सम्पर्क किया जबकि किसी भी महिला प्रतिवादी द्वारा ऐसा कोई सम्पर्क नहीं किया गया।

कृषि के क्षेत्र में आईसीटी का इस्तेमाल व्यापक रूप से करने के लिए इनके उपयोग पर प्रशिक्षण और नई मीडिया तक पहुंच का होना जरूरी होता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, ग्रामीण आईसीटी वेबसाइट की डिजाइन तैयार की गई और 141 डिजिटल मृदा स्वास्थ्य कार्ड्स को गांव के भू-कर संबंधी मानचित्रों से जोड़ा गया। 309 वेब पृष्ठों और 286 सूचना माड्यूल्स को स्थानीय भाषाओं में तैयार किया गया और चयनित गांवों में स्थापित सूचना किओस्क में अपलोड किया गया।

4.2.7 विश्व व्यापार संगठन (WTO) व्यवस्था के दौरान भारतीय कृषि व्यापार के लिए अंतर्राष्ट्रीय बाजार सिगनल : अनुसंधान एवं विकास रणनीतियां एवं नीतियां

अपने अल्प संसाधनों को समुचित तरीके से आवंटित करने हेतु बाजार अर्थव्यवस्था मूल्य सिगनलों पर निर्भर करती है। बाजार विश्लेषण विषय वस्तु से हमें लाभप्रद अवसरों को खोजने में मदद मिलती है। सामान्यतः बाजार निर्यात सिगनल अथवा संकेतों से सभी जिंसों के मूल्य मांग व आपूर्ति के बुनियादी सिद्धांतों द्वारा प्रभावित होते हैं। इस अध्ययन में भारत की प्रमुख कृषि जिंसों के निर्यात, आयात तथा मूल्यों के बाजार संकेतों का और उनके स्थानों की पहचान का; तथा बाजार एवं मूल्य संकेतों को प्रभावित करने वाली अंतर्राष्ट्रीय नीतियों व कारणों का विश्लेषण किया गया है।

वर्ष 1990-2013 के दौरान प्रमुख कृषि जिंसों की निर्यात-आयात वृद्धि दरों और लचीलेपन को तालिका 4.5 एवं 4.6 में प्रस्तुत किया गया है। परिणामों में प्रदर्शित हुआ कि वर्ष 1990-91 से 2012-13 के दौरान, भारतीय फसलों यथा सूखी फलियां, मक्का, तम्बाकू, कपास और पटसन अथवा जूट की आयात वृद्धि दर निर्यात के मुकाबले में कहीं ज्यादा थी जबकि गौण अनाज, चावल, सोयाबीन, मूंगफली और गेहूं की निर्यात वृद्धि दर आयात की तुलना में ज्यादा थी। अन्य फसलों में, एक मिश्रित रूझान देखने को मिला। गेहूं आयात मूल्य को छोड़कर सभी फसलों की निर्यात एवं आयात वृद्धि दरें धनात्मक पाई गईं। वर्ष 1990-91 से 2012-13 के दौरान, परिणामों में प्रदर्शित हुआ कि सभी फसलों का निर्यात एवं आयात मूल्य लचीलापन धनात्मक अथवा सकारात्मक पाया गया। वर्ष 2001-2013 के दौरान, मूल्य की तुलना में मात्रा में उल्लेखनीय परिवर्तन के कारण मूंगफली आयात मूल्य लचीलापन कहीं ज्यादा था।

मूल्य एवं बाजार उतार-चढ़ाव के लिए अंतर्राष्ट्रीय नीतियों व कारणों का संबंध मांग व आपूर्ति, राजनीतिक एवं विधायी, विनिमय दर, ऊर्जा, उर्वरक मूल्य, ब्याज दरों, विश्व व्यापार संगठन, मौसम एवं आपदा, उत्पादन प्रौद्योगिकियों, भावी बाजारों, बीमा, सार्वजनिक नीति प्रोन्नयन एवं सुरक्षा उपायों से जुड़ा हुआ है।

परिणामों से यह पता चलता है कि वर्ष 1990-91 से 2000-01 के दौरान, मक्का, कपास एवं तम्बाकू जैसी कुछ फसलों की आयात वृद्धि दर प्रारंभिक विश्व व्यापार संगठन उदारीकरण अवधि के कारण ज्यादा हैं जब आयातित मात्रा कम थी लेकिन बाद की अवधि में इसमें अधिक वृद्धि हुई।

तालिका 4.5 : प्रमुख कृषि जिंसों के निर्यात - आयात मूल्यों में लचीलापन (प्रतिशत)

फसल	1990-91 से 2000-01		2001-02 से 2012-13		1990-91 से 2012-13	
	निर्यात लचीलापन	आयात लचीलापन	निर्यात लचीलापन	आयात लचीलापन	निर्यात लचीलापन	आयात लचीलापन
फलियां, सूखी	0.93	1.10	0.60	0.40	0.41	0.41
फलियां, हरी	0.00	1.00	0.28	1.00	0.00	1.00
मक्का की भूसी अथवा चोकर	0.00	0.00	0.51	-0.72	0.00	0.00
गेहूं की भूसी अथवा चोकर	1.34	0.98	1.01	1.82	0.03	1.07
कपास	0.99	1.50	0.56	4.52	0.67	0.80
मूंगफली	1.37	0.00	0.41	16.74	0.51	0.00
पटसन	0.59	1.96	0.15	0.06	0.57	0.65
मक्का	0.00	0.88	0.67	0.11	0.00	0.10
गौण अनाज	1.15	0.00	0.53	0.00	0.65	0.00
चावल	1.32	0.98	0.39	0.23	0.70	1.04
सोरघम	0.00	0.00	0.62	0.00	0.00	0.00
सोयाबीन	0.99	0.00	0.26	0.48	0.27	0.00
तम्बाकू	1.09	0.65	0.36	0.24	0.39	0.20
गेहूं	1.12	0.98	0.27	0.31	0.42	1.32

स्रोत : FAOSTAT, डाटा बेस, 30 मई, 2017 को हासिल

तालिका 4.6 : प्रमुख कृषि जिंसों की यौगिक वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत)

फसल	परिवर्त	1990-91 से 2000-01		2001-02 से 2012-13		1990-91 से 2012-13	
		निर्यात वृद्धि दर	आयात वृद्धि दर	निर्यात वृद्धि दर	आयात वृद्धि दर	निर्यात वृद्धि दर	आयात वृद्धि दर
फलियां, सूखी	मात्रा	-13.44	-10.88	13.3	13.87	1.92	7.55

	मूल्य	-3.11	1.84	3.37	6.29	1.78	3.32
फलियां, हरी	मात्रा	0	-100	15.79	-100	0	-100
	मूल्य	0	0	9.28	0	0	0
मक्का की भूसी अथवा चोकर	मात्रा	0	0	38.7	2.24	0	0
	मूल्य	0	0	5.19	-6.72	0	0
गेहूं की भूसी अथवा चोकर	मात्रा	37.93	-14.37	-32.81	11.36	0.21	-6.66
	मूल्य	-2.54	-0.93	9.31	-3.13	3.79	1
मक्का	मात्रा	0	106.38	33.27	8.05	0	34.19
	मूल्य	0	1.16	3.11	14.77	0	10.15
गौण अनाज	मात्रा	4.63	0	11.92	0	10.63	0
	मूल्य	-0.47	0	4.09	0	1.71	0
चावल	मात्रा	10.62	-13.62	13.44	26.39	13.83	-15.03
	मूल्य	-1.62	1.47	6.45	11.53	1.47	5.78
सोरघम	मात्रा	0.00	0.00	63.42	0.00	0.00	0.00
	मूल्य	0.00	0.00	3.71	0.00	0.00	0.00
सोयाबीन	मात्रा	63.03	0	27.64	21.92	28.35	0
	मूल्य	0.09	0	10.72	5.55	5.56	0
तम्बाकू	मात्रा	3.05	39.01	8.83	5.28	5.52	15.28
	मूल्य	-0.21	125.87	6.15	7.46	3.25	52.41
मूंगफली	मात्रा	8.35	0	17.28	43.95	10.59	0
	मूल्य	-1.57	0	6.55	-18.68	2.62	0
पटसन	मात्रा	-5.45	5.46	4.34	0.36	0.7	3.39
	मूल्य	-7.87	-2.21	10.04	4.31	0.47	1.1
कपास	मात्रा	-25.81	91.37	59.36	-5.97	8.43	33.53
	मूल्य	-1.93	-3.59	4.56	5.3	1.5	0.91
गेहूं	मात्रा	17.39	-21.74	7.15	18.02	17.36	-6.77
	मूल्य	-0.86	-25.01	7.72	8.72	3.63	-8.64

स्रोत : FAOSTAT, डाटा बेस, 30 मई, 2017 को हासिल

4.2.8 भारत में पशुधन आहार उद्योग का रणनीतिपरक एवं वित्तीय विश्लेषण

भारत में पशुधन आहार उद्योग की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए वर्तमान अध्ययन किया गया जिसमें पशुधन आहार का निर्माण करने वाली इकाइयों के वित्तीय प्रदर्शन का विश्लेषण किया गया और पशुधन आहार उद्योग की समस्याओं एवं संभावनाओं की पहचान की गई। इसमें अनेक संघटक हैं जैसे कि निजी एवं सहकारी सेक्टर दोनों के लिए देशभर में फैले उद्योग का मानचित्रण करना, उद्योग के लिए रणनीतियों का निरूपण करना, वित्तीय विश्लेषण करना (उर्ध्वाकर एवं क्षैतिज विश्लेषण एवं अनुपात विश्लेषण), तथा उद्योग द्वारा महसूस की गई समस्याओं तथा उद्योग की प्रगति को प्रोत्साहित करने वाले कारकों की पहचान करना। अध्ययन के तहत, प्राइमरी तथा सेकेंडरी दोनों से डाटा संकलन को शामिल किया गया। डेल्टा तकनीक एवं मानचित्र का उपयोग करके पशुधन आहार संयंत्रों की राज्य वार संख्या का संकलन किया गया।

वैश्विक स्तर पर, गोजातीय पशु, पोल्ट्री तथा जलजीव आहार सहित पशुधन के लिए आहार का उत्पादन कुल मिलाकर एक बिलियन टन से अधिक है। वैश्विक आहार उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 3.04 प्रतिशत (तालिका 4.7) है। यौगिक गोजातीय आहार निर्माताओं की कुल संख्या अनुमानित 353 है जिसकी कि देश में कुल आहार उत्पादन में 31.2 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। यह उत्पादन देश के कुल सांद्र उत्पादन का केवल 20 प्रतिशत ही है। कुल सांद्र का शेष 80 प्रतिशत घरेलू मिश्रण है जो कि घरेलू स्तर पर विभिन्न संघटकों को मिलाकर तैयार किया जाता है।

तालिका 4.7 : आहार उत्पादन की स्थिति, 2016

स्तर	उत्पादनकर्ताओं की संख्या	उत्पादन (MT)	हिस्सेदारी (प्रतिशत)
वैश्विक (सभी तरह का पशु आहार)	30,090	1032.2	
भारत (सभी तरह का पशु आहार)	909	31.4	3.04*
भारत (गोजातीय पशु आहार)	353	9.8	31.2#
*विश्व स्तर (सभी तरह का पशु आहार) में भारत की हिस्सेदारी (सभी तरह का पशु आहार) #भारत (सभी तरह का पशु आहार) में भारत (गोजातीय पशु आहार) की हिस्सेदारी			

स्रोत : अल्टेक, केमिन, लेखक का अनुमान

चित्र 4.4 : गोजातीय पशु उत्पादनकर्ताओं का राज्य-वार वितरण

गोजातीय पशु आहार वाले संयंत्रों का राज्य वार विस्तार

राज्यों के बीच निजी, सहकारी एवं सरकारी सेक्टरों की गोजातीय पशु आहार संयंत्रों की संख्या का संकलन किया गया और उसे चित्र 4.5 में दर्शाया गया है। यह पाया गया कि महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों में पशु आहार संयंत्रों की संख्या कहीं ज्यादा है। महाराष्ट्र राज्य में निजी उत्पादनकर्ताओं की अधिक संख्या (41) की उपस्थिति के कारण आहारिय संयंत्रों की कुल संख्या (51) कहीं अधिक है। सहकारी गोजातीय पशु आहार संयंत्रों की संख्या के मामले में, गुजरात (14) का स्थान अग्रणी है। देश के पूर्वोत्तर राज्यों में गोजातीय पशु आहार संयंत्रों की संख्या बहुत कम है और कुछ सरकारी सेक्टर में हैं।

विभिन्न क्षेत्रों के बीच गोजातीय पशु आहार का संयोजन

गाय व भैंस की अधिक संख्या होने पर उनके आहार के लिए मांग भी अधिक होगी और इसीलिए वहां पशु आहार उद्योग के लिए अच्छी क्षमताएं विद्यमान होंगी। देशी गाय एवं भैंस की तुलना में, संकर नस्ल की गायों का पोषण उत्पादित यौगिक आहार पर कहीं अधिक किया जा रहा है। आपूर्ति के संबंध में, गोजातीय पशु आहार के लिए प्रमुख संघटकों के राज्य वार पांच वर्षीय औसत उत्पादन पर कार्य किया गया है (चित्र 4.6 एवं 4.7)। मक्का, प्रमुख घटकों में से एक है और इसके उत्पादन में कर्नाटक, तेलंगाना, महाराष्ट्र और बिहार राज्य की प्रधानता है। चावल की भूसी और तेल रहित (de oiled) चावल की भूसी जो कि बड़ी मात्रा में आहार बनाने में प्रयुक्त होती है, लगभग सभी अग्रणी राज्यों में उपलब्ध है और इसके अग्रणी राज्य उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल हैं। भिन्न – भिन्न राज्यों में अलग-अलग प्रोटीन स्रोत संघटक हैं जैसे कि गुजरात में मूंगफली व कपास; मध्य प्रदेश में सोयाबीन; एवं राजस्थान में तोरिया व सरसों। ये राज्य और इनके निकटवर्ती राज्य इन स्रोतों का उपयोग यौगिक आहार बनाने में करते हैं।

चित्र : गोजातीय पशु आहार के लिए राज्यवार ऊर्जा स्रोत

नोट : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से लिए गए आंकड़े

चित्र : गोजातीय पशु आहार के लिए राज्यवार प्रोटीन स्रोत

नोट : कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से लिए गए आंकड़े

4.2.9 MOOCs के माध्यम से कृषि उच्चतर शिक्षा में अतुल्यकालिक शिक्षण : एक मामला अध्ययन अनुसंधान

अनुसंधान परियोजना पर कार्य किया गया ताकि इस बात को व्यापकता में समझा जा सके कि कैसे मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स (MOOC) के माध्यम से अतुल्यकालिक शिक्षण किया जाता है। इसमें सफलता के प्रमुख कारकों का विश्लेषण करना; कृषि शिक्षा में MOOCs हेतु उपयुक्त पाठ्यक्रमों की पहचान करना; और ऐसे पाठ्यक्रमों के विकास हेतु एक फ्रेमवर्क का सुझाव देना भी शामिल था। MOOCs पाठ्यक्रम, "प्रभावी शिक्षण के लिए दक्षता संवर्धन" को प्रारंभ

करने से पूर्व 1003 पंजीकृत उपयोगकर्ताओं से एक ऑन-लाइन प्रश्नावली के माध्यम से कृषि शिक्षा में MOOC के अनुभवों और अपेक्षाओं की पुष्टि की गई।

प्रशिक्षुओं की शैक्षणिक पृष्ठभूमि : बारह विभिन्न डोमेन यथा कृषि, व्यवसाय, वाणिज्य, कम्प्यूटर अनुप्रयोग, डेयरी विज्ञान, इंजीनियरिंग, मात्स्यिकी, वानिकी, सामान्य विज्ञान, बागवानी, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं अन्य का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकांशतः स्नातकोत्तर (492) एवं डॉक्टोरेट (469) तथा कुछ स्नातक (42) प्रशिक्षुओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। कुल मिलाकर, पता चला कि कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञान पर पाठ्यक्रम में कृषि से जुड़े 69.28 प्रतिशत प्रतिभागियों ने भाग लिया जबकि शेष 30.72 प्रतिशत प्रतिभागी अन्य डोमेन से जुड़े हुए थे।

संस्थागत प्रतिनिधित्व : देशभर में लगभग 122 संगठनों को पाठ्यक्रम से लाभ पहुंचाया गया जिनमें से 44 कृषि विश्वविद्यालय से, 11 पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, 2 मात्स्यिकी विश्वविद्यालय से और 2 बागवानी विश्वविद्यालय से थे। इसके अलावा, अन्य संगठनों यथा व्यवसाय स्कूल, इंजीनियरिंग कॉलेज, सरकारी/सामान्य संगठन और चिकित्सा कॉलेज आदि से लाभान्वित शामिल थे।

कैरियर की स्थिति : लक्षित प्रशिक्षुओं में, अधिकांश (57.95 प्रतिशत) अपने कैरियर के शुरुआती चरण में थे जबकि लगभग 19 प्रतिशत प्रशिक्षु स्नातकोत्तर और डॉक्टोरल छात्र-छात्राएं थीं जो कि निकट भविष्य में संकाय बनना चाहते थे और शेष 23 प्रतिशत में मध्यम स्तर से लेकर वरिष्ठ स्तर तक के संकाय एवं प्रशासनिक अधिकारी शामिल थे।

विषय-वस्तु की सुपुर्दगी : MOOC के लिए पसंदीदा टूल्स क्रमशः डेस्कटॉप (60.8 प्रतिशत) एवं तदुपरान्त लैपटॉप (50.0 प्रतिशत), स्मार्ट फोन (31.8 प्रतिशत) था जबकि बहुत प्रशिक्षुओं ने टैबलेट (5.3 प्रतिशत) को पसंद किया। सोशल मीडिया टूल्स में, अधिकांश प्रशिक्षुओं द्वारा फेसबुक (49.58 प्रतिशत) के मुकाबले व्हाट्सएप (79.75 प्रतिशत) को पसंद किया। वहीं क्रमशः पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतिकरण (97.90 प्रतिशत), एवं तदुपरान्त इमेज (96.49 प्रतिशत), पीडीएफ (95.39 प्रतिशत), वीडियो (95.09 प्रतिशत), एनीमेटेड ऑब्जेक्ट्स (94.12 प्रतिशत), टेक्स्ट (93.56 प्रतिशत), ऑडियो (83.26 प्रतिशत) अन्य पसंदीदा टूल्स थे।

MOOC से अपेक्षाएं : प्रशिक्षुओं की अपेक्षाएं शिक्षण, संसाधनों, नेटवर्किंग, प्रौद्योगिकी, और एएसके (नजरिया, कौशल एवं जानकारी) में बदलाव पर व्यापक रूप से केन्द्रित थीं (चित्र 4.7)।

चित्र 4.7 : MOOC से अपेक्षाएं

MOOC की सफलता दर : कुल मिलाकर MOOC द्वारा 52.5 प्रतिशत की उल्लेखनीय सफलता दर दर्ज की गई और यह सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय प्रबंधन, पशु चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग, डेयरी विज्ञान, कृषि एवं रेशमविज्ञान डोमेन में 50 प्रतिशत से भी अधिक थी (चित्र 4.8)।

चित्र 4.8 : डोमेन में MOOC पूर्णता दर

4.3 बाह्य वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं

4.3.1 कृषि शिक्षा में प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण

परियोजना में डिजिटल शैक्षणिक विषय-वस्तु का सृजन करने के लिए उपयुक्त कार्यप्रणाली का विकास करना, उसका मानकीकरण करना और उसका क्रियान्वयन करना शामिल है जिसमें शिक्षण संदर्भ के विविध तरीके और हितधारक शामिल हो सकते हैं। TEL कार्यप्रणाली का सफलतापूर्वक मानकीकरण किया गया जिसके लिए एक 'स्टेट ऑफ आर्ट' प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण संसाधन केन्द्र की स्थापना की गई जिसमें एक ऑन-लाइन शिक्षण वातावरण में इन्हें समेकित करते हुए वास्तविक समय में MOOC तथा दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम जैसे बहु संदर्भ हेतु विषय-वस्तु का विकास एवं परीक्षण किया गया। खपत के विषय-वस्तु विकास का सम्पूर्ण अनुक्रम उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल संसाधनों और कम मानवश्रम आवश्यकताओं के साथ किया गया। कुछ आउटपुट को तालिका 4.8 में दर्शाया गया है। जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है, पिछले वर्ष की तुलना में डिजिटल वीडियो और ऑन लाइन पाठ्यक्रम विकास की गतिविधियों में धीमी किन्तु लगातार वृद्धि हुई और साथ ही परियोजना से राजस्व का सृजन करने में भी मदद मिली है।

तालिका 4.8 : TELAgE आउटपुट

आउटपुट एक नजर में	वर्ष		प्रतिशत बदलाव
	2015	2016	
वीडियो घंटों की संख्या	184	436	136
वीडियो माड्यूलस की संख्या	72	233	224
ऑन लाइन पाठ्यक्रमों की संख्या	3	3	—
MOOC की संख्या	1	2	100
प्रमाण पत्र कार्यक्रमों की संख्या	—	1	100
प्रयोगशाला में आने वाले राष्ट्रीय आगन्तुक	155	705	355
प्रयोगशाला में आने वाले अंतर्राष्ट्रीय आगन्तुक	123	150	22
प्रति दिन औसत हिट्ज	372	1001	169
सृजित राजस्व (लाख रुपये में)	—	6.1	—
सहायता प्रदान की जा रही अन्य परियोजनाओं की संख्या	—	2	—

चित्र 4.9 : वर्ष 2016–17 के दौरान निष्पादित डिजिटल विषय-वस्तु उत्पादन (श्रेणी वार, घंटों की संख्या तथा कुल उत्पादन में प्रतिशत सीमा)

मुख्य उपलब्धियां

- ऑन-लाइन दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को पहली बार शिक्षण उत्कृष्टता के लिए प्रस्तावित किया गया।
- परामर्शी मोड में प्रमाणित फार्म परामर्शक पाठ्यक्रम में डिजिटल विषय-वस्तु विकास को MANAGE के लिए किया गया और रुपये 3.4 लाख का राजस्व सृजित किया गया (चित्र 4.9)।
- ओपन सोर्स प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दूसरी बार "प्रभावी शिक्षण के लिए दक्षता संवर्धन" पर मैसिव ओपन ऑन-लाइन कोर्स (MOOC) का पूर्ण प्रबंधन (पाठ्यक्रम प्रशासन, विकास, प्रबंधन, मूल्यांकन एवं प्रमाणन) निष्पादित किया गया। साथ ही रुपये 2.26 लाख का राजस्व भी सृजित किया गया।
- एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन पर वोकेशनल शिक्षा कोर्सवेयर विकसित किया गया।
- पशु चिकित्सा विज्ञान (पशु चिकित्सा शरीर रचना विज्ञान एवं परजीवी विज्ञान) में डिजिटल पाठ्यक्रम विकसित किए गए और अन्य पाठ्यक्रमों का विकास कार्य प्रगति पर है।

4.3.2 भारत में रागी का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र में रागी के खेती क्षेत्रफल, उत्पादन और उत्पादकता में बढ़ रही दरों का तथा इसके रुझान और अस्थिरता का अनुमान लगाने; रागी के लिए बाजार मांग और उपभोक्ता की पसंद का अनुमान लगाने; रागी की मूल्य श्रृंखला का आकलन करने और इसकी बाजार प्रतिस्पर्धा तथा बाजार समेकन का विश्लेषण करने के प्रयोजन से वर्तमान अध्ययन किया गया।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, टीम द्वारा रागी किसानों के सामाजिक – आर्थिक प्रोफाइल, कृषिजोत पैटर्न, फसलचक्र पैटर्न, उत्पादन रीतियों, उपयोग की गई किस्मों, श्रम उपयोगिता पैटर्न आदि पर अध्ययन किया गया। रागी का उत्पादन करने वाले तीन प्रमुख राज्यों यथा तमिल नाडु, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश के लिए रागी की उत्पादन प्रौद्योगिकी का सम्पूर्ण मानचित्रण किया गया जिसके लिए अध्ययन क्षेत्र से कुल 600 किसानों का प्राइमरी सर्वे किया गया। रागी की खेती में अग्रणी राज्य कर्नाटक का अध्ययन भी भागीदार यथा कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय (UAS), बंगलुरु द्वारा किया जा रहा है।

वर्ष 1984–85 से 2013–14 की अवधि के दौरान रागी के खेती क्षेत्रफल और उत्पादन में राज्यों के बीच नकारात्मक वृद्धि दर प्रदर्शित हुई। खेती क्षेत्रफल और उत्पादन के संबंध में ओड़िशा और झारखण्ड में सबसे अधिक

गिरावट दर्ज की गई। रागी की खपत में वृद्धि के कारण कर्नाटक, तमिल नाडु, महाराष्ट्र और उत्तराखण्ड में आंशिक वृद्धि दर दर्ज की गई।

रागी की खेती में निवेश उपयोग पैटर्न

तालिका 4.9 में प्रस्तुत परिणामों से पता चलता है कि राज्यों के बीच रागी किसानों द्वारा विभिन्न प्रकार के निवेशों का उपयोग करने में व्यापक अन्तर मौजूद है। रागी की रोपाई के कारण महाराष्ट्र राज्य में बीज दर बहुत कम थी जबकि अन्य राज्यों में सीधी बीजाई की विधि को अपनाया गया था। महाराष्ट्र में हाथ से काम करने वाले मजदूरों का उपयोग बहुत ज्यादा था और इसके विपरीत तमिल नाडु में रागी की खेती के लिए मशीनी श्रम पर निर्भरता कहीं ज्यादा देखने को मिली। गोबर की खाद का प्रयोग महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश राज्य में कहीं ज्यादा था जबकि तमिल नाडु में रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल कहीं ज्यादा किया जा रहा था। अध्ययन किए गए तीनों राज्यों में केवल महाराष्ट्र में ही कीटनाशकों का उपयोग देखने को मिला।

रागी की खेती लागत

तीनों राज्यों में रागी के लिए कृषि मंत्रालय की मानक सीसीपीसी कार्यप्रणाली का उपयोग करके लागत संघटकों की गणना की गई (तालिका 4.10)। तमिल नाडु, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश राज्य में कुल लागत (लागत सी) क्रमशः रुपये 41,812/-, रुपये 53,228/- और रुपये 37,491/- प्रति हेक्टेयर पाई गई जिसमें परिवार द्वारा किए गए श्रम अथवा मजदूरी की आरोपित लागत प्रमुख संघटक थी।

रागी किसानों के जीवन में इस फसल के महत्व को समझने के लिए भी आय के उपायों पर अध्ययन किया गया। यह पाया गया कि आन्ध्र प्रदेश एवं तदुपरान्त क्रमशः तमिल नाडु और महाराष्ट्र के किसानों के बीच रागी उत्पादन से लाभ ज्यादा था। हालांकि, यदि हम स्वयं की जमीन का मान आरोपित करते हैं, तब महाराष्ट्र और तमिल नाडु दोनों के लिए आय नकारात्मक हो जाती है। इसी प्रकार, यदि हम परिवार द्वारा की गई मजदूरी को शामिल करते हैं तब सभी अध्ययनरत क्षेत्रों में रागी की खेती में नुकसान दिखाई पड़ता है। इससे यह निहितार्थ निकलता है कि अध्ययन क्षेत्र में रागी की खेती करने वाले किसानों के पास कोई अन्य वैकल्पिक लाभप्रद रोजगार अवसर नहीं है और क्षेत्र में प्रचलित कृषि जलवायु परिस्थितियों के कारण जमीन पर किन्हीं अन्य कृषि योग्य वैकल्पिक फसलों की खेती भी नहीं की जा सकती।

तालिका 4.9 : अध्ययन क्षेत्र में रागी की खेती में निवेश उपयोग पैटर्न

क्र.सं.	निवेश का उपयोग	तमिल नाडु	महाराष्ट्र	आन्ध्र प्रदेश
1.	बीज की मात्रा (किग्रा./हे.)	30.73	5.79	14.36
2.	परिवार द्वारा मजदूरी (दिवस/हे.)	27	95	59
3.	किराये पर मजदूर (दिवस/हे.)	47	74	47
4.	बैल द्वारा श्रम (भुगतान दिवस/हे.)	1.32	5.21	6.38
5.	मशीन के माध्यम से श्रम (दिवस/हे.)	1.74	0.67	0.38
6.	खाद (किग्रा./हे.)	1488	4513	3671
7.	उर्वरक (किग्रा./हे.)	320	275	37
8.	कीटनाशक (किग्रा./हे.)	0	1062	0

तालिका 4.10 : रागी की खेती में लागत एवं लाभ

(रूपये/हे.)

पैरामीटर	तमिल नाडु	महाराष्ट्र	आन्ध्र प्रदेश
लागत ए-1	28,926	26,218	13,659
लागत ए-2	30,165	26,218	13,659

लागत बी	30,575	27,744	14,869
लागत सी	41,195	48,680	25,873
सकल लाभ	33,105	21,956	22,785
लागत ए-1 की तुलना में लाभ	4,179	-4,262	9,126
लागत ए-2 की तुलना में लाभ	2,940	-4,262	9,126
लागत बी की तुलना में लाभ	2,530	-5,788	7,916
लागत सी की तुलना में लाभ	-8,090	-26,724	-3,088

तमिल नाडु में रागी के लिए मार्केटिंग चैनल

रागी दानों और इसके आटे के लिए मार्केटिंग के चैनल का मानचित्रण किया गया और यह पाया गया कि अध्ययनरत राज्य तमिल नाडु में कुल सात चैनल थे, पांच दानों अथवा अनाज के लिए और दो आटे के लिए (एकल ब्राण्ड)। इन चैनलों को नीचे दिया गया है :-

दाना अथवा अनाज

- किसान – उपभोक्ता
- किसान – ग्राम व्यापारी – उपभोक्ता
- किसान – ग्राम व्यापारी – थोक विक्रेता – सुपर बाजार – उपभोक्ता
- किसान – ग्राम व्यापारी – प्राइमरी थोक विक्रेता – सेकेण्डरी थोक विक्रेता – रिटेलर – उपभोक्ता
- किसान – ग्राम व्यापारी – एजेंट – सेकेण्डरी थोक विक्रेता – रिटेलर – उपभोक्ता

आटा

- किसान – ग्राम व्यापारी – प्राइमरी थोक विक्रेता – प्रोसेसर – सेकेण्डरी थोक विक्रेता – रिटेलर – उपभोक्ता
- किसान – ग्राम व्यापारी – थोक विक्रेता – प्रोसेसर – सुपर बाजार – उपभोक्ता

प्रमुख रागी बाजारों का एकीकरण

प्रमुख रागी बाजारों के एकीकरण पर अध्ययन के लिए, बाजारों का चयन मात्रा की आवक और बाजारों के बीच स्थित दूरी के आधार पर किया गया ताकि मूल्यों के रूपांतरण में उनके स्थानिक समेकन की सीमा का आकलन किया जा सके। सभी चयनित बाजारों यथा चिन्तामणी, गनपुर, कोविलपट्टी, मरकापुर, शिमोगा, तथा तिरुकोविलुर लंबे समय से एकीकृत अथवा समेकित पाए गए जिनमें महबूबनगर बाजार शामिल नहीं था।

4.3.3 दूरस्थ शिक्षण के माध्यम से शिक्षण दक्षता का संवर्धन

परियोजना के तहत अंगीकृत किए गए दूरस्थ शिक्षा मोड की संभाव्यता का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न पैरामीटरों के साथ एक प्रश्नावली तैयार की गई थी। प्रश्नावली को पाठ्यक्रम मूल्यांकन के लिए कुल 59 प्रतिभागियों को भेजा गया जिसमें विभिन्न पैरामीटर नामतः कौशल और जानकारी स्तर पर प्रतिभागियों का स्वतः आकलन, पाठ्यक्रम सामग्री की संरचनात्मक व्यवस्था, चर्चा फोरम के लिए अपनाई गई कार्यप्रणाली, सौंपे गए कार्यों की प्रस्तुति, वीडियो ट्यूटोरियल की गुणवत्ता, ऑन-लाइन पाठ्यक्रम विषय-वस्तु की सुगम्यता तथा मूल्यांकन पैटर्न आदि शामिल थे। ऑन-लाइन मोड (19 प्रतिभागी) तथा ऑफ-लाइन मोड (40 प्रतिभागी) दोनों पर किए गए समग्र विश्लेषण से पता चला कि पाठ्यक्रम सामग्री, विषय-वस्तु तथा वीडियो आदि बहुत उपयोगी थे और इसके द्वारा शिक्षण में उनकी दक्षता को बढ़ाने के लिए आदान प्रदान किया गया। प्रतिभागियों के स्वतः आकलन पर विश्लेषण से पता चला कि 50 प्रतिशत से अधिक प्रतिवादियों द्वारा शिक्षण प्रयोजन के लिए पाठ्यक्रम की प्रकटित उपयोगिता और शिक्षण उत्कृष्टता को बढ़ाने में कौशल अर्जित किया गया। ऑफ-लाइन मोड वाले प्रतिवादियों से प्राप्त प्रतिक्रिया अथवा फीडबैक से पता चला कि हार्डकॉपी में पाठ्यक्रम

विषय-वस्तु के साथ अनुपूरक निवेश के रूप में डिजीटल सामग्री तथा वीडियो को प्रस्तुत किया जाए ताकि सुपुर्दगी के स्टैण्डालोन मोड (ऑन-लाइन/ऑफ-लाइन) की बजाय उनकी दक्षता को बढ़ाया जा सके।

चित्र 4.11 : ऑन-लाइन परिणाम

4.3.4 KRISHI -ज्ञान प्रबंधन के लिए भाकृअनुप अनुसंधान डाटा रिपोजिट्री

इस परियोजना को भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IASRI), नई दिल्ली; भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - IARI), नई दिल्ली; भाकृअनुप – राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (ICAR – NBSS & LUP), नागपुर; भाकृअनुप – केन्द्रीय बाराणी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद और भाकृअनुप – केन्द्रीय समुद्रीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - CMFRI), कोच्चि द्वारा संयुक्त रूप से चलाया गया। परियोजना के मुख्य उद्देश्यों में शामिल है : प्रमाणित प्रौद्योगिकियों और प्रकाशनों से जुड़ी ज्ञान रिपोजिट्री का विकास करना; अनुसंधान डाटा रिपोजिट्री का विकास करना एवं डाटा के विश्लेषण का मानकीकरण करना; तथा पहुंच स्थापित करने और ज्ञान रिपोजिट्री की व्यवस्था करने हेतु जिओ-पोर्टल का सृजन करना तथा कृषि ज्ञान पोर्टल का विकास करना। छः रिपोजिट्री नामतः परीक्षात्मक डाटा रिपोजिट्री, सर्वे डाटा रिपोजिट्री, देखभाल डाटा रिपोजिट्री, प्रकाशन रिपोजिट्री, प्रौद्योगिकी रिपोजिट्री और जिओ-पोर्टल की योजना बनाई गई। रिपोजिट्री तक पहुंच सुलभ कराने के लिए एक पोर्टल KRISHI ([www. Krishi.icar.gov.in](http://www.Krishi.icar.gov.in)) उपलब्ध है।

प्रकाशन रिपोजिट्री

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों द्वारा उपयोग करने के लिए अब एक पूरी तरह से कार्यशील प्रकाशन रिपोजिट्री (<http://krishi.icar.gov.in/jspui/>) उपलब्ध है। इस प्रकाशन रिपोजिट्री का विकास ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, डीएस पेस का उपयोग करके किया गया। 15 इलीमेंट डबलिन कोर जो कि संसाधन वर्णन के लिए एक मानक मेटाडाटा है जिसे आईएसओ मानक 15836 : 2009, ANSI/NISO तथा IETF RFC 5013 (2007) में औपचारिक तौर पर पृष्ठांकित किया गया था, का उपयोग भाकृअनुप – प्रकाशन रिपोजिट्री को विकसित करने में आधार रूप में किया गया। रिपोजिट्री में कुल 27 तत्व हैं जिनमें नौ वैकल्पिक तत्व शामिल हैं। ये 27 तत्व लेखकों के बारे में, उनकी सम्बद्धता के बारे में, भाकृअनुप विषय सामग्री प्रभाग, परियोजना विवरण, वित्तीय सहायता विवरण आदि के बारे में वर्णन करते हैं। प्रतिबंधित परिचालन वाले दस्तावेजों के लिए नियंत्रित पहुंच हेतु प्रावधान को शामिल किया गया है।

संबंधित संस्थान के डाटा प्रबंधन के प्रभारी अधिकारी द्वारा एक बार अनुमोदित करने पर भाकृअनुप प्रकाशन रिपोजिट्री में सभी प्रस्तुतियों को उपलब्ध करा दिया जाता है। प्रकाशन रिपोजिट्री को जनवरी, 2017 के दौरान प्रस्तुतिकरण के लिए खोला गया था। भाकृअनुप प्रकाशन रिपोजिट्री के स्क्रीन-शॉट को चित्र 4.12 में दर्शाया गया है।

डाटा सूची रिपोजिट्री

डाटा सूची रिपोजिट्री का उद्देश्य भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों में उपलब्ध विभिन्न डाटासेट की पहचान करना, उसे संगठित करना और उनका वर्णन करना है। डाटा सूची रिपोजिट्री को Dspace में भी सृजित किया गया। डाटा सूची के लिए मेटाडाटा में लगभग 34 इलीमेंट्स शामिल हैं। इन तत्वों अथवा इलीमेंट्स द्वारा डाटा की आधारीय जानकारी और डाटा के स्वामित्व, फाइलों, यदि कोई है, डाटा अधिकारों और अन्य संबंधित सूचना के बारे में वर्णन किया जाता है। डाटा सूची रिपोजिट्री में डाटा की सुरक्षा तक पहुंच को नियंत्रित करने हेतु प्रावधान है।

चित्र 4.12 : प्रकाशन रिपोजिट्री का स्क्रीन-शॉट

4.3.5 कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन (ABI) केन्द्र की स्थापना

इस परियोजना का उद्देश्य सभी पहलुओं पर कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन (ABI) के लिए “हेल्प डेस्क” सेवाएं प्रदान करना था। इन पहलुओं में शामिल थे : प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण, इनक्यूबेशन एवं उद्यमशीलता विकास; प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन, व्यवसाय इनक्यूबेशन, उद्यमशीलता विकास पर क्षमता निर्माण एवं प्रशिक्षण का

आयोजन करना; तथा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान शिक्षा प्रणाली (NARES) के विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में विकसित व्यावसायिक रूप से व्यावहारिक प्रौद्योगिकियों का पता लगाना; और इन प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण करने के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी प्रणाली प्रदान करना।

राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान शिक्षा प्रणाली (NARES) में प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण तथा इनक्यूबेशन की वर्तमान प्रणाली और रीतियों की समीक्षा करने के लिए और कृषि आधारित स्टार्ट-अप तथा कृषि उद्यमशीलता में तेजी लाने हेतु इनक्यूबेशन प्रणाली के टिकाऊपन हेतु एक रोडमैप का सुझाव देने के लिए एक प्रयोजनमूलक अध्ययन किया गया। अध्ययन में, देश में कृषि व्यवसाय और कृषि उद्यमशीलता के लिए इनक्यूबेशन और तीव्रता जैसे नए समर्थ प्लेटफार्म को पोषित करने और निर्मित करने के लिए प्रचुर संवर्धित अवसरों का पता चला। इसलिए, यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान शिक्षा प्रणाली (NARES) द्वारा जैसी कि पिछले 10 वर्षों में सफलता हासिल की गई है, को देश में कहीं व्यापक परिदृश्य में और अधिक उद्देश्यपरक रीति में आगे ले जाने की जरूरत है। भारत सरकार (कृषि एवं विज्ञान विभाग (DST) तथा जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT)) की अन्य एजेन्सियों, सफल गैर सरकारी संगठनों, प्रोफेशनल निकायों और एसोसिएशनों के तत्वावधान में चलाई जा रही स्कीमों और परियोजनाओं के साथ औपचारिक सम्पर्क बनाना तथा भागीदारी विकसित करना प्रारंभिक पहल और हासिल सफलता को आगे ले जाने वाले तरीके हैं। इनक्यूबेशन एवं त्वरित प्रौद्योगिकी हस्तांतरण प्रक्रिया से कहीं अधिक कृषि आधारित स्टार्ट-अप में तेजी लाई जा सकती है और देशभर में अधिक उद्यमियों को आकर्षित किया जा सकता है। लंबी अवधि हेतु टिकाऊपन बनाने रखने के लिए यह जरूरी होगा कि कृषि व्यवसाय पारिस्थितिकी प्रणाली में तीव्र इनक्यूबेशन और उद्यमशीलता में और अधिक कार्यपरक एवं वित्तीय स्वायत्तता का शामिल किया जाए।

4.3.6 कृषि प्रौद्योगिकी स्कीम का व्यावसायीकरण (IPTM - ZTMC)

इस अध्ययन का उद्देश्य भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा प्रारंभ की गई IP & TM पहल पर चलाए गए विभिन्न क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को समझना; पेशेवर उपलब्धियों में इन पहलों के परिणामों का आकलन करना; तथा रोजगार एवं आजीविका के लिए उद्यमशीलता तथा इनोवेशन में वृद्धि करने के फोकस के साथ आईपी एवं टीएम के क्षेत्र में उठाये जाने वाले भावी कदमों की पहचान करना था।

वेब आधारित प्रश्नावली का उपयोग करते हुए प्रतिभागियों से आंकड़े संकलित किए गए। प्रश्नावली को गूगल प्रारूप में तैयार किया गया और उसे प्रतिभागियों को मेल से भेजा गया। अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए एक मिश्रित युक्ति का उपयोग किया गया। आधारीय जानकारी और स्केल के लिए संकलित प्रश्नावली आंकड़ों को तालिका विश्लेषण, प्रतिशत मान और ग्राफ का उपयोग करके सारांश रूप दिया गया। गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिवादियों द्वारा दिए गए विवरण के आधार पर विषय वस्तु विश्लेषण का उपयोग करके किया गया। गुणात्मक आंकड़ों का परिमाणन किया गया और वर्ड क्लाउड (<http://worditout.com/>) तथा माइक्रोसॉफ्ट पावर BI (<http://powerbi.microsoft.com/en-us/>) का उपयोग करके विज्युलाइज्ड किया गया।

अध्ययन से उन तरीकों का पता चला जिनमें पीजीडीटीएमए और पूर्ण समय वाले पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों द्वारा अपने ज्ञान का उपयोग किया गया था। अधिकांश IP & TM पूर्ण समय वाले पाठ्यक्रम के प्रतिभागी विधि विभागों को संभाल रहे थे और उन्होंने हासिल ज्ञान का उपयोग बौद्धिक सम्पदा आवेदन को भरने, कानूनी मुद्दों, बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन और प्रौद्योगिकी मूल्यांकन में किया। पीजीडीटीएमए प्रतिवादी अधिकांशतः प्रौद्योगिकियों की लाइसेन्सिंग, आईपी प्रबंधन और प्रौद्योगिकी मूल्यांकन में शामिल थे।

आईपी एंड टीएम प्रशिक्षण के प्रतिवादियों द्वारा अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग जिस तरह किया गया, उन्हें चित्र 4.4 में दर्शाया गया है। लगभग 78 प्रतिशत प्रतिवादियों द्वारा नए परियोजना प्रस्तावों को विकसित करने और परियोजनाओं से जुड़े मुद्दों का समाधान करने में अपने ज्ञान का उपयोग किया गया। आईपी एवं टीएम पोर्टफोलियो (चित्र 4.15), कैरियर प्रगति (चित्र 4.16) तथा कैरियर प्रगति के तरीके (चित्र 4.17) की देखभाल करने में उपयोगिता के रूप में पाठ्यक्रम के

प्रभाव की विशेषताओं का भी अध्ययन किया गया। लगभग 45 प्रतिशत पीजीडीटीएमए प्रतिवादियों द्वारा कहा गया कि पाठ्यक्रम के परिणामस्वरूप नई परियोजनाओं को हासिल करने और कैरियर प्रगति में मदद मिली।

चित्र 4.13 : पीजीडीटीएमए एवं पूर्ण अवधि के पाठ्यक्रम वाले प्रतिवादियों द्वारा प्रोफेशन में पाठ्यक्रम के माध्यम से अर्जित ज्ञान की उपयोगिता

चित्र 4.14 : आईपी एंड टीएम प्रशिक्षण के प्रतिवादियों द्वारा प्रोफेशन में पाठ्यक्रम के माध्यम से अर्जित ज्ञान की उपयोगिता

चित्र 4.15 : संगठन में आईपी एंड टीएम की देखभाल करने में पाठ्यक्रम की उपयोगिता

स्रोत : ऑन-लाइन सर्वे से संकलित आंकड़ों के आधार पर लेखकों द्वारा प्रस्तुत

चित्र 4.16 : कैरियर प्रगति पर पाठ्यक्रम का प्रभाव

स्रोत : ऑन-लाइन सर्वे से संकलित आंकड़ों के आधार पर लेखकों द्वारा प्रस्तुत

चित्र 4.17 : कैरियर प्रगति के तरीके

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा प्रस्तुत आईपी एवं टीएम कार्यक्रमों के प्रभाव पाथवे को दर्शाने वाले एक प्रभाव पाथवे का सैंकी ग्राफ (पॉवर BI का उपयोग करके) तैयार किया गया (चित्र 4.18)। परिणामों में प्रदर्शित हुआ कि पृष्ठभूमि, प्रोत्साहन और पाठ्यक्रम का परिणामों पर प्रभाव पड़ता है। परिणामों में यह भी प्रदर्शित हुआ कि पीजीडीटीएम में एक व्यापक पृष्ठभूमि शामिल थी जिसमें कि व्यापक प्रोत्साहन एवं परिणामों के साथ श्रोताओं को शामिल किया गया था।

यह समझने के लिए कि क्या आईपी एंड टीएम पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रमों के उद्देश्यों को पूरा किया गया है, मध्यावधि पाठ्यक्रम विश्लेषण के रूप में अध्ययन किया गया जिसमें एक सकारात्मक संकेत प्रदर्शित हुआ। डिप्लोमा पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए जागरूकता तथा क्षमता निर्माण जागरूकता के अधिदेशों से अकादमी को विकसित किया गया था। यह प्रमाणित हुआ कि प्रशिक्षण से राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में प्रचुर मानव संसाधन के विकास को आगे बढ़ाया गया था जो कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की आईपी नीति, 2006 के संरेखन में है। यह महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रीय आईपीआर नीति, 2016 के साथ संरेखन में आईपी एंड टीएम के विकासशील डोमेन में प्रोफेशनल का उच्च स्तर विकसित करने हेतु गतिविधियों को जारी रखा जाए। अकादमी के पूर्ण समय अवधि वाले कार्यक्रमों द्वारा 16 हार्ड कोर आईपी प्रोफेशनल विकसित किए गए हैं। हालांकि, उद्योग में कार्यरत प्रोफेशनल से सार्वजनिक मांग के आधार पर, दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए (PGD TMA)। कार्यक्रम के छः वर्षों में प्रोफेशनल का एक व्यापक पूल तैयार किया गया जो कि कैरियर, परियोजनाओं और पदोन्नति हासिल करने में कुशल और समर्थ थे।

4.3.7 भारत में कृषि शिक्षा पर आईसीटी का प्रभाव

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शिक्षा प्रभाग द्वारा ई-कोस, ई-ग्रन्थ जैसे प्लेटफार्म विकसित करने के साथ साथ देश के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में ई-पुस्तकालयों, स्मार्ट कक्षाओं, स्मार्ट सेमिनार हॉल की स्थापना करने और कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं तथा शैक्षणिक प्रौद्योगिकी सेल का सुदृढीकरण करने में काफी धनराशि खर्च की गई है। इन प्रयासों के बावजूद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद स्तर पर आईसीटी के क्षेत्र में किए गए प्रयासों और हमारे विश्वविद्यालयों में कृषि शिक्षा में शिक्षण लर्निंग प्रक्रिया के वास्तविक क्रियान्वयन के बीच अभी भी अन्तराल बना हुआ है। अतः शिक्षण लर्निंग परिस्थिति में आईसीटी टूल्स की स्थिति और इनके प्रभाव का पता लगाने के लिए एक प्रयास किया गया। इसके साथ ही उन कारकों की पहचान करने का भी प्रयास किया गया जिनका प्रभाव आईसीटी टूल्स को अपनाने पर पड़ता है और इस कारण एक भावी रोडमैप विकसित होता है जिससे कि कृषि उच्चतर शिक्षा में आईसीटी समेकन के सुदृढीकरण को बल मिलेगा।

ऑन-लाइन तथा ऑफ-लाइन प्रश्नावली, सकेन्द्रित समूह चर्चा, औपचारिक विचार-विमर्श और आकलन के माध्यम से उत्तर भारत के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के 20 डीन, 327 शिक्षकों और 1438 छात्र-छात्राओं से आंकड़े संकलित किए गए। आंकड़ों को सेकेण्डरी स्रोतों यथा संबंधित विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं पत्रिकाओं आदि के माध्यम से भी संकलित किया गया।

यह पाया गया कि अच्छी बुनियादी सुविधाओं की मौजूदगी के कारण प्रशासनिक कार्यविधि में आईसीटी का उपयोग प्रशंसनीय था लेकिन पाठ्यक्रम सुपुर्दगी के मोड़ में इसका समेकन पर्याप्त नहीं था। अधिकांश विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक प्रौद्योगिकी सेल, स्मार्ट कक्षाएं, स्मार्ट सेमिनार हॉल, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं और ई-पुस्तकालय अभिन्न अंग थे लेकिन इन्टरनेट गति आवश्यकता के अनुरूप नहीं थी। प्रतिवादियों की सभी तीनों श्रेणियों द्वारा कम्प्यूटर, वाई-फाई और स्मार्ट फोन पर कार्य किया गया था और उनके द्वारा शैक्षणिक प्रयोजन हेतु इनका दैनिक उपयोग किया जा रहा था जबकि ई-पोर्टफोलियो वाले आईसीटी टूल्स के बारे में लोग कम परिचित थे। शासन व्यवस्था में सुधार के साथ प्रशासकों को आईसीटी से जोड़ा गया जिससे पारदर्शिता और जबाबदेही को बढ़ावा मिला जबकि, शिक्षकों का कहना था कि आईसीटी से शैक्षणिक विकास में सुधार आता है। रोजगार पाने और उच्चतर शिक्षा के लिए अवसर हासिल करने के संबंध में आईसीटी का प्रभाव छात्र-छात्राओं पर भी पाया गया। कृषि विश्वविद्यालयों के डीन, शिक्षकों और छात्रों ने यह पाया कि आईसीटी का उपयोग करने से समय की बचत हुई और उनके अनुसार आईसीटी की मदद से शिक्षण लर्निंग तथा प्रशासनिक प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद मिली लेकिन इसकी विषय वस्तु की सटीकता के बारे में थोड़ी उलझन थी। कक्षा में उपस्थित होने में छात्रों की अनिच्छा, पुस्तकालय का अपर्याप्त उपयोग तथा आईसीटी पर शिक्षकों और छात्रों की अति निर्भरता जिससे साहित्यिक चोरी को बढ़ावा मिलता है, से शिक्षण-लर्निंग पर आईसीटी के अनुभूति नकारात्मक प्रभाव में कटौती की गई। व्हाट्सएप और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग करने से निजी सम्पर्क और शारीरिक सक्रियता में कमी आती है जिसके कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं देखने को मिली। कृषि शिक्षा में आईसीटी के अंगीकरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में न्यूनतम बुनियादी सुविधाएं, धीमी इन्टरनेट गति और अपर्याप्त प्रशिक्षण शामिल थे।

परिणामों के आधार पर, यह सुझाव है कि अंडर ग्रेजुएट स्तर पर प्रस्तुत आईसीटी पाठ्यक्रम अनुवर्ती वर्षों में प्रगत स्तर की बुनियाद अथवा आधार होना चाहिए; सभी कृषि विश्वविद्यालयों में वास्तविक रूप में स्मार्ट कक्षाएं सुनिश्चित की जानी चाहिए; और सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में आईटी/आईसीटी निदेशालय की स्थापना की जानी चाहिए और सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की वेबसाइट विषय-वस्तु में एकरूपता होनी चाहिए और समय-समय पर अथवा नियमित अन्तराल पर इन्हें अद्यतन बनाया जाना चाहिए। सॉफ्ट के साथ साथ हार्ड कॉपीज के दोहरे बोझ को रोकने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों में ई-मेल संचार का प्रमाणीकरण करने की अविलम्ब आवश्यकता है। कृषि शिक्षा से संबंधित ई-कोर्स और मोबाइल ऐप का विकास करना समय की मांग है। कृषि विश्वविद्यालयों में संकाय की कमी से निबटने के लिए विद्युत् क्लासरूम ही अकेला तरीका है। राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की शिक्षण, लर्निंग एवं प्रशासनिक प्रक्रिया में आईसीटी के बेहतर समेकन के लिए शिक्षकों, छात्रों और प्रशासनिक स्टाफ के लिए शिक्षा में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ऐप्लीकेशन से जुड़े प्रशिक्षणों का समय-समय पर आयोजन किया जाना चाहिए।

4.3.8 फार्मर फर्स्ट (Farmer FIRST) परियोजना का प्रबंधन एवं प्रभाव आकलन

अनुसंधान प्रक्रिया के विकास, प्रभाव आकलन की कार्यप्रणालियों, विषय-वस्तु विकास और डाटाबेस सृजन की रूपरेखा बनाने; फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) के प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपों के प्रभाव का आकलन करने; फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) के लिए डाटाबेस और निर्णय समर्थित प्रणाली का विकास करने; तथा फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) की कार्यप्रणालियों के क्रियान्वयन में अनुसंधानकर्मियों/संकाय की क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से अध्ययन की पहल की गई।

दिनांक 18 – 19 मार्च, 2017 को फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) को लागू करने वाले संस्थानों के लिए फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (FFP) हेतु एक राष्ट्रीय स्तर की समीक्षा एवं जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया और फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम को लागू करने वाले संस्थानों की प्रशिक्षण जरूरतों का आकलन किया गया।

4.4 अनुबंधीय/परामर्शी अनुसंधान परियोजनाएं

4.4.1 तम्बाकू उपचार का पर्यावरणीय प्रभाव आकलन

आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक राज्य में तम्बाकू उपचार के पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन करने के समग्र उद्देश्य के साथ परियोजना पर कार्य किया गया। हालांकि, अध्ययन को तम्बाकू के उपचार हेतु इस्तेमाल की गई लकड़ी के स्रोत और किस्म का सर्वेक्षण करने; चिमनी उपचार में लकड़ी की खपत का निर्धारण करने; वन कवर पर तम्बाकू उपचार के प्रभाव का आकलन करने; उपचार के लिए लकड़ी ईंधन की आपूर्ति श्रृंखलाओं का अध्ययन करने; तथा ईंधन लकड़ी पर निर्भरता को कम करने में ऊर्जा प्रभावी तम्बाकू उपचार की संभावनाओं की तलाश करने के विशेष उद्देश्यों के साथ किया गया। तम्बाकू की खेती की प्रधानता के आधार पर अध्ययन के लिए दो राज्यों यथा आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक को चुना गया।

मार्च, 2017 में अध्ययन प्रारंभ किया गया और तम्बाकू उपचार के पर्यावरणीय प्रभाव, जंगल के वातावरण पर प्रभाव और तम्बाकू उपचार की वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों पर व्यापक साहित्य समीक्षा की गई। सैम्पलिंग कार्यप्रणाली को अंतिम रूप दिया गया और कर्नाटक राज्य में हासन और मैसूर तथा आन्ध्र प्रदेश राज्य में प्रकाशम और पश्चिमी गोदावरी जिलों को तम्बाकू की खेती के स्तर के आधार पर चुना गया। मुख्य सर्वे करने के लिए दोनों राज्यों के लिए अलग-अलग प्रश्नावली तैयार की गई ताकि तम्बाकू उपचार पर वांछित जानकारी को तथा अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों को हासिल किया जा सके। तम्बाकू की खेती के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, उपचार, कृषि अपशिष्ट से तम्बाकू ब्रिकेट बनाने, नीलामी करने, आग में जलाने वाली लकड़ी के उपयोग में कमी लाने तथा तम्बाकू उपचार की वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों आदि के विभिन्न पहलुओं पर ओंगोल, राजामुन्द्री, देवरापल्ली, गोपालपुरम तथा कोयलागुडेम में सर्वे तथा मॉक साक्षात्कार आयोजित किए गए। हासिल की गई जानकारी और की गई समीक्षा के आधार पर, प्रश्नावलियों को संशोधित किया गया और आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक राज्य में मुख्य सर्वे के लिए तैयार किया गया। आईटीसी और तम्बाकू बोर्ड द्वारा अपनाए गए उपायों से किसानों को अपने स्तर पर ईंधन की लकड़ी उगाने के लिए और पारम्परिक से उन्नत खलिहान अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सर्वे वाले स्थानों में तम्बाकू उपचार की ऊर्जा प्रभावशीलता में वृद्धि दर्ज की गई।

चित्र : फार्मर फर्स्ट परियोजना समीक्षा एवं जागरूकता कार्यशाला के प्रतिभागियों की समूह फोटो

4.4.2 उत्तर प्रदेश में महिला स्वतः सहायता समूह (SHG) के सामुदायिक आधारित बीज उत्पादक (CBSP) समूहों और समूह मॉडल पर सामाजिक-आर्थिक अध्ययन

उत्तर प्रदेश राज्य में महिला स्वतः सहायता समूह (SHG) के सामुदायिक आधारित बीज उत्पादक (CBSP) समूहों और समूह मॉडल पर वर्तमान परियोजना के उद्देश्यों में शामिल था : सामुदायिक आधारित बीज उत्पादक समूहों में बीज उत्पादकों के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना अथवा उनके बारे में जानना; समूह के भीतर शक्ति संतुलन की मौजूदगी को समझना; और यह आकलन करना कि क्या इन कारकों द्वारा सफल बीज उत्पादन को प्रभावित किया गया है।

अध्ययन से पता चला कि बीज उत्पादन ऐसे सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग से संबंधित थे, लेकिन वे अपने साथियों से बेहतर स्थिति में थे। अनुभवजन्य विश्लेषण में प्रदर्शित हुआ कि समूह में शक्ति को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों (निजी एवं सामाजिक) द्वारा चयन पर निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित किया गया था।

4.4.3 एलएमओ के सामाजिक-आर्थिक आकलन हेतु दिशानिर्देशों व कार्यप्रणालियों का विकास करना

अभी तक भारत में, एलएमओ (Living Modified Organisms) खेती के सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन और पशुओं/मानव की खाद्य श्रृंखला में इनके प्रवेश के लिए दिशानिर्देशों और कार्यप्रणालियों का विकास एवं परीक्षण नहीं किया गया है। आरआईएस की छः अन्य संस्थानों के साथ भागीदारी है। इनमें भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद भी एक भागीदार है जिसे परियोजना के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए तेलंगाना क्षेत्र से जुड़े कार्यों को सौंपा गया है। अध्ययन को तेलंगाना के नालगोण्डा जिले में किया गया जहां दोनों फसलों यथा मक्का और बैंगन की खेती की जाती है।

बैंगन और मक्का की खेती की कुल परिवर्तनीय लागत क्रमशः रुपये 91,188/- और रुपये 28,966/- प्रति हेक्टेयर थी। बैंगन की खेती लागत में मुख्य हिस्सेदारी कीटनाशक – 16.94 प्रतिशत और निराई-गुडाई – 14.24 प्रतिशत (शाकनाशी, इसका अनुप्रयोग और हाथ से निराई-गुडाई की लागत सहित) की है। गहन विश्लेषण से पता चला कि यदि वर्तमान स्तर पर लाभ : लागत अनुपात को बनाये रखा जाता है तब यह मानते हुए कि जीएम फसलों के बीजों की लागत पारम्परिक फसलों की तुलना में अधिक होगी, बैंगन तथा मक्का दोनों में उपज अग्रता होनी चाहिए। किसानों को वांछित एलएमओ (बैंगन तथा मक्का के लिए क्रमशः नाशीजीव एवं खरपतवार सहिष्णु गुण) के बारे में बताया गया और उनसे बीज के लिए भुगतान करने की उनकी इच्छा के बारे में पूछा गया। बैंगन तथा मक्का की खेती करने वाले क्रमशः 63.2 प्रतिशत एवं 41.6 प्रतिशत किसान बीज लागत का 50 प्रतिशत से भी अधिक का भुगतान करने के प्रति इच्छुक थे जैसा कि इससे न केवल उन्हें बेहतर आर्थिक लाभ मिलेगा वरन् इससे उनके जीवन-स्तर में सुधार आएगा और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के उपचार में होने वाले खर्च में कमी आएगी।

वास्तव में किसान विभिन्न फसलों में वैकल्पिक फसल किस्में (उच्च उपजशील किस्म (HYV), संकर, जीएम आदि) चाहते थे और वे बीज के लिए अधिक भुगतान करने के प्रति इच्छुक थे बशर्ते फसल से कृषि की लाभप्रदता में बढ़ोतरी हो। अध्ययन में प्रदर्शित हुआ कि किसान ऐसी नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए तैयार हैं जिनसे लाभप्रदता बढ़े और मजदूरी की आवश्यकता में कमी आए। उनका यह भी मानना है कि उन्हें ऐसी फसलों को प्रारंभ करने से पहले उचित तरीके से सही तथा गलत अथवा नफा तथा नुकसान के बारे में बताया जाना चाहिए ताकि वे ऐसी सभी सावधानियां बरत सकें जो कि किसी आनुवंशिकीय संशोधित फसल को उगाने में जरूरी होती हैं।

अध्याय 5

नई पहल

5.1 कृषि-इनोवेशन केन्द्र

12वीं योजना के तहत अनुमोदित लक्ष्यों के साथ मिलकर, अकादमी द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में कृषि नवोन्मेष एवं कृषि उद्यमशीलता को बढ़ावा देने हेतु कृषि इनोवेशन केन्द्र (CAI) स्थापित किया गया है। इस केन्द्र का उद्घाटन डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा दिनांक 25 जून, 2016 को किया गया।

कृषि इनोवेशन केन्द्र के माध्यम से अकादमी द्वारा प्रौद्योगिकी सृजन, इसके हस्तांतरण तथा NARES में कृषि उद्यमशीलता में तेजी लाने हेतु राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में कृषि मूल्य शृंखला के प्रत्येक हितधारक तक पहुंच स्थापित करने और उसे शामिल करने का प्रयास किया जाता है। इस केन्द्र की स्थापना के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

- 1) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्रोफेशनल के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन पर कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन, व्यवसाय इनक्यूबेशन, उद्यमशीलता विकास एवं निवेश पर प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का आयोजन करना;
- 2) राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) में प्रौद्योगिकी विकास एवं व्यावसायीकरण की शासन व्यवस्था और समन्वयन तथा कृषि व्यवसाय उद्यमियों के लिए इनक्यूबेशन विकास हेतु नीति फ्रेमवर्क का विकास करना;
- 3) उद्यमशीलता विकास को बढ़ाने वाले आईपी एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन के लिए परामर्शी सेवाओं के माध्यम से अप-स्ट्रीमिंग और डाउन-स्ट्रीमिंग के लिए एक प्लेटफार्म प्रदान करना।

इस केन्द्र के माध्यम से लक्षित किए जाने वाले कार्यों में शामिल है : राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES)की प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक सम्पदा परिसम्पत्तियों के प्रभावी जैसे मुद्दों पर नेटवर्क सदस्यों के क्षमता निर्माण हेतु लर्निंग सामग्री के माड्यूलस, दिशानिर्देश तथा अन्य स्वरूप का विकास करना; दूरदृष्टि अध्ययनों के माध्यम से अनुसंधान परियोजनाओं की व्यावसायिक क्षमता में सुधार करने के तरीके विकसित करना; लाइसेन्सिंग भागीदारों की पहचान करना; बौद्धिक सम्पदा अधिकारों और लाइसेन्स समझौतों की मॉनीटरिंग में सहायता करना; मार्केटिंग इन्स्ट्रुमेन्ट्स विकसित करना, बीज सहयोग प्रदान करना तथा एक्सलरेटर कार्यक्रम आयोजित करना।

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप द्वारा कृषि इनोवेशन केन्द्र का उद्घाटन

5.1.1 इनक्यूबेशन केन्द्र द्वारा प्रस्तावित सेवाएं

तालिका 5.1 : इनक्यूबेशन केन्द्र द्वारा प्रस्तावित सेवाएं

क्षमता निर्माण	<ul style="list-style-type: none"> ● प्रबंधन विकास एवं उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम ● कौशल आधारित प्रशिक्षण ● कस्टमाइज्ड समीक्षा बैठकें, सेमिनार एवं सम्मेलन
इनक्यूबेशन सेवाएं	<ul style="list-style-type: none"> ● बुनियादी सुविधा, कार्यालय, ऑन-फार्म परीक्षण ● प्रौद्योगिकी एवं अप-स्केलिंग के लिए सम्पर्क ● स्टार्ट-अप के लिए प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं सहयोग
व्यवसाय सेवाएं	<ul style="list-style-type: none"> ● व्यवसाय योजना का निरूपण ● उत्पाद प्रोन्नयन एवं ब्राण्डिंग ● व्यवसाय एनालिटिक्स

प्रौद्योगिकी पोर्टफोलियो प्रबंधन	<ul style="list-style-type: none"> ● बौद्धिक सम्पदा पोर्टफोलियो ● उत्पादन जीवनचक्र एनालिटिक्स ● प्रौद्योगिकी की लाइसेन्सिंग एवं प्रमाणन
नियामक सेवाएं	<ul style="list-style-type: none"> ● कम्पनी पंजीकरण एवं संबंधित मुद्दों के लिए प्रोटोकॉल ● कृषि जैव विविधता, पर्यावरणीय एवं अन्य अनुपालन पर परामर्शी सेवाएं

वर्तमान में केन्द्र द्वारा तीन परियोजनाएं चलाई जा रही हैं नामतः (i) भाकृअनुप द्वारा प्रायोजित बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन एवं [हस्तांतरण/कृषि](#) प्रौद्योगिकी स्कीम का व्यावसायीकरण (ITMU) तथा जोनल प्रौद्योगिकी प्रबंधन केन्द्र (ZTMC); (ii) भाकृअनुप द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय कृषि नवोन्मेष निधि (NAIF) के लिए 12वीं योजना स्कीम के तहत कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन (ABI) केन्द्रों की स्थापना, तथा (iii) NSTEB, विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग (DST) द्वारा वित्त पोषित नार्म का a-IDEA, प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर ।

5.1.2 नार्म के इनक्यूबेशन केन्द्र की गतिविधियां

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के इनक्यूबेशन केन्द्र द्वारा रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान अनेक आयोजन किए गए जिनमें शामिल थे : प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन, प्रदर्शनी एवं स्टार्ट-अप आयोजन, पैन-इंडिया आधार पर विभिन्न मंचों पर पिचिंग आयोजन आदि (तालिका 5.2)।

इसके अलावा, इनक्यूबेशन केन्द्र के लिए आधारभूत बुनियादी सुविधा विकसित की गई और साथ ही उद्यम पूंजी एजेन्सियों यथा एन्जेल इनवेस्टर्स, HNIs, फंड उत्पन्न करने वाले परामर्शकों, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पेशेवरों के साथ मजबूत नेटवर्क बनाया गया और NSTEDB, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) तथा अन्य स्कीमों से उत्पन्न बीज फण्ड के माध्यम से वित्तीय सहयोग क्रियाविधियों हेतु प्रोटोकॉल विकसित किया गया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कृषि उद्यमियों और स्टार्ट-अप को सहयोग देने वाले एक मजबूत इनक्यूबेशन कार्यक्रम के निर्माण को बल मिला। वर्तमान में, पैन-इंडिया स्तर पर कुल 21 इनोवेटिव स्टार्ट-अप/इनक्यूबेटर्स प्रचालन में हैं।

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर, a-IDEA अब भारत सरकार की स्टार्ट-अप इंडिया पहल 2015 के तहत कृषि स्टार्ट अप को सहयोग करने के लिए एक मान्यताप्राप्त इनक्यूबेटर है जिससे स्टार्ट अप के रूप में मान्यता हासिल करने में उद्यमियों के लिए एक प्लेटफार्म का सृजन किया जा रहा है। वर्तमान में, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद स्थित इनक्यूबेटर केन्द्र द्वारा विभिन्न डोमेन क्षेत्रों वाले कुल 20 कृषि स्टार्ट अप का आयोजन किया जा रहा है (तालिका 5.3)।

तालिका 5.2 : इनक्यूबेशन केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम

कार्यक्रम का नाम	आयोजित कार्यक्रमों की संख्या	स्थान	पहुंच
कृषि छात्रों के लिए जागरूकता कार्यशाला	3	लुधियाना, त्रिशूर, कूच बिहार	25 कृषि विश्वविद्यालयों में 500 से अधिक यूजी छात्र
विचार मंच कार्यक्रम/कृषि कल्प	1	हैदराबाद	20 प्रबंधन संस्थानों एवं पीजी कॉलेजों में 100 से अधिक छात्र
स्टार्टअप आधार कैम्प/स्टार्ट अप संवाद (Tie - हैदराबाद, SIIB, FICCI जैसे भागीदारों के साथ)	3	हैदराबाद (2 कार्यक्रम), पुणे (1 कार्यक्रम)	लगभग 100 उद्यमी

उद्यमशीलता विकास कार्यक्रम	1	हैदराबाद	~ 30 + छात्र
विचारशील रि-बूट कैम्प (इनक्यूबेटीज के लिए)	1	हैदराबाद	10 इनक्यूबेटी उद्यमी
इनक्यूबेट्स के लिए स्टार्टअप 360 डिग्री	1	हैदराबाद	10 इनक्यूबेटी उद्यमी
विलग्रो (Villgro) के साथ अनकनवेन्शन हैदराबाद	2	हैदराबाद	~ 200 + उद्यमी
हब के साथ एग्री-चैट	2	हैदराबाद	~ 100 उद्यमी एवं कृषि उत्साही
प्रौद्योगिकी इनक्यूबेशन पर ग्रासरूट इनोवेटर की जागरूकता	1	हैदराबाद	~ 50 ग्रासरूट इनोवेटर्स एवं 5 ग्रासरूट इनोवेटर्स / किसानों / ग्रामीण युवाओं को अपने जमीनी स्तरीय इनोवेशन को प्रदर्शित करने के लिए सहयोग

तालिका 5.3 : नार्म के प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेटर a-IDEA द्वारा सहायतार्थ कृषि स्टार्ट-अप

क्र.सं.	स्टार्ट अप का नाम	डोमेन क्षेत्र
1.		फसल परामर्श के लिए मोबाइल ऐप
2.		चाय बनाने वाली स्वचालित कस्टमाइज्ड मशीन
3.		स्मार्ट सिंचाई नियंत्रक
4.		क्विनोआ एवं पोषणिक कदन्न उत्पाद
5.		परिशुद्ध कृषि के लिए हाइपर लोकल आईसीटी प्लेटफार्म
6.		बायो मिमीकिंग ट्रेन्चिंग मशीन
7.		शहरी रूफ टॉप फार्मिंग किट
8.		शाकाहारी कैन्डीज एवं मार्शमैल्लोज
9.		रॉक बानसाई
10.		कृषि निवेशों के लिए बाजार स्थल
11.		कदन्न उत्पाद – कदन्न आटा, कदन्न कुकीज, कदन्न पेय एवं कदन्न बेटर्स

12.		A-2 ग्रेड गाय का दूध
13.		नाशीजीव एवं रोग के लिए हाइपर स्पेक्ट्रल एरियल (UAV) इमेजरी
14.		आला जिंसों से जुड़े खरीददारों और विक्रेताओं के लिए क्लासीफाइड आईसीटी पोर्टल एवं ऐप
15.		जंगली सूअर एवं पक्षियों के लिए रिपेलेन्ट्स, मृदा कन्डीशनर
16.		रूफ टॉप फार्मिंग किट/समुदायों में वर्टिकल खेती के लिए स्वयं करें किट
17.		बायो इनपुट्स – जैव उर्वरक, जैव उत्प्रेरक, सूक्ष्म पोषक तत्व एवं वानस्पतिक नाशकजीवनाशी
18.		बागवानी फसलों के लिए सूक्ष्म पोषक तत्व पर्णीय छिड़काव
19.		ऊतक संवर्धित टीक पौधे
20.		कृषि में व्यवसाय प्रोसेस ऑटोमेशन समाधान प्रदाता

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के इनक्यूबेशन केन्द्र की एक झलक

चित्र : इनक्यूबेशन पर हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला

चित्र : डॉ. रमेश चन्द, सदस्य नीति आयोग, भारत सरकार द्वारा स्टार्ट अप प्रतिनिधियों के साथ बातचीत

चित्र : स्टार्ट अप के लिए आधार कैम्प

चित्र : t-हब पर एग्री चैट

चित्र : पैन इंडिया छात्रों के लिए आयोजित जागरूकता कार्यशाला एवं विचार मंच

चित्र : छात्रों के लिए विचार मंच कार्यक्रम

चित्र : कूचबिहार में जागरूकता कार्यशाला

चित्र : केवीएएसयू, त्रिशूर में जागरूकता कार्यशाला

5.2 TELAgE

5.1.1 प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण संसाधन केन्द्र

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा कृषि क्षेत्र में गुणवत्ता और पहुंच को बढ़ाने की दिशा में पिछले दशक के दौरान ई-लर्निंग गतिशीलता का नेतृत्व किया गया है। ई-लर्निंग जिसके परिणामस्वरूप कृषि के अंडर ग्रेजुएट विषयों के लिए ई-कोर्स रिपोजिट्री का प्रादुर्भाव हुआ, पर अपनी पहल पर अनुवर्ती कार्रवाई करते हुए अकादमी द्वारा एक स्टेट ऑफ आर्ट प्रौद्योगिकी संवर्धित लर्निंग संसाधन केन्द्र स्थापित किया गया है जो कि उच्च स्तर पर डिजीटल विषय-वस्तु उत्पादन और प्रबंधन का नेतृत्व करने में इन्स्ट्रुमेंटल बना हुआ है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शिक्षा प्रभाग से वित्तीय सहायता के साथ केन्द्र ने डिजीटल विषय-वस्तु और प्रबंधन का विकास करने में अनेक हितधारकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

इस केन्द्र की स्थापना एक व्यापक प्रणाली का विकास करने के प्रयोजन से की गई है जहां शिक्षा सामग्री को उच्च गुणवत्ता, कम मानवशक्ति, तैयार उत्पाद विकसित होने में लगने वाले कम समय और सरल शैक्षणिक तकनीकों के साथ डिजीटल प्रारूप में विकसित किया जाता है।

केन्द्र को निम्नलिखित बहु कार्यों के लिए विकसित किया गया है :-

- डिजीटल विषय-वस्तु उत्पादन
- विर्चुयल कक्षाएं
- ऑन-लाइन कोर्सवेयर उत्पादन-पब्लिशिंग-प्रबंधन
- MOOC प्रोग्राम व्यापक प्रशासन

संसाधन केन्द्र द्वारा शिक्षण, डिजीटल विषय-वस्तु कैचरिंग, स्ट्रीमिंग, परिष्करण, प्रकाशन एवं प्रबंधन के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकी सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर विकल्पों को नए तरीकों से समेकित किया गया है। जहां कहीं वर्तमान ग्लोबल रुझानों के संबंध में प्रौद्योगिकी संवर्धित लर्निंग की प्रारंभ से लेकर अंत तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया को करने की जरूरत है, वहां ओपन सोर्स और सस्ते अथवा वहनीय सॉफ्टवेयर पर बल दिया गया है।

संसाधन केन्द्र के कुछ प्रमुख गुणों में शामिल है :

- प्रभावी शिक्षण के लिए टच संवेदी कम्प्यूटर और लैपटॉप के साथ सफेद बोर्ड को समेकित करते हुए शैक्षणिक किस्म में संवर्धन
- त्वरित प्रोसेसिंग समय के साथ कम से कम मानवशक्ति के साथ उच्च गुणवत्ता वाली डिजीटल शैक्षणिक सामग्री उत्पन्न करने में सफेद बोर्ड और वीडियो कंट्रोल उपकरण के साथ मानवरहित स्वचालित उच्च रिजोल्यूशन PTZ (Pan - Tilt - Zoom) कैमरों को समेकित किया गया।
- रिकॉर्डिंग प्रक्रिया के दौरान ही स्क्रीन पर शीर्षक की सुविधा देने के लिए करैक्टर सृजन शीर्षक जिससे सम्पादन में लगने वाले समय की बचत होती है।
- विषय-वस्तु सृजन के लिए विज्युल संवर्धन (नियंत्रित सफेद प्रकाश प्रणाली के साथ)
- किसी वीडियो की रिकॉर्डिंग करते समय टेक्स्ट – ऑन – दि फ्लाई जोड़ने में बेहतर प्रौद्योगिकी संवर्धन, विज्युल संवर्धन तथा बेहतर क्षमता
- क्वालिटी क्लाउड एवं कैमटेजिया जैसे सम्पादन सॉफ्टवेयर के साथ लघु सम्पादन प्रयोगशाला
- डिजीटल वीडियो विकास में क्रोमा-प्रमुख प्रभावों के लिए क्लासरूप में समेकित ग्रीन मैट

चित्र : TELAgE प्रयोगशाला सुविधाएं

चित्र : TELAge प्रयोगशाला में डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप का दौरा

- MOOC दूरस्थ शिक्षा आदि जैसे विभिन्न पाठ्यक्रम प्रारूपों में व्यापक उपयोग के लिए ई-लर्निंग सर्वर में प्रकाशन करना
- ई-लर्निंग पोर्टल के माध्यम से ऑन-लाइन गतिविधियों और प्रौद्योगिकी संवर्धित लर्निंग का समेकन करके विच्युल लर्निंग वातावरण

संसाधन केन्द्र का अत्यधिक उपयोग हुआ है जिसमें वीडियो माड्यूलस का लगभग 400 घंटे का वार्षिक उत्पादन किया गया है जिनका कि डिजीटल पाठ्यक्रम उत्पाद ऑन-लाइन कोर्सवेयर, दूरस्थ पाठ्यक्रम सामग्री, शिक्षण संकाय के लिए सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास तथा अन्य संस्थानों के लिए डिजीटल कोर्सवेयर उत्पन्न करने में परामर्श हेतु व्यापक इस्तेमाल किया जाता है ।

इसके अलावा, इस केन्द्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद प्रणाली के भीतर और बाहर के भिन्न संस्थानों से आगन्तुकों का लगातार आना लगा रहता है जो कि इसकी नवोन्मेषी कार्यप्रणाली की अत्यधिक सराहना करते हैं। वर्ष 2016 के दौरान केन्द्र में कुल 705 आगन्तुकों ने दौरा किया जो कि पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 3.5 गुणा अधिक हैं।

कुछ विशिष्ट अतिथिगणों की प्रतिक्रिया

“उत्कृष्ट पहल, दूर-दराज तक पहुंचने की बहुत अच्छी प्रक्रिया। ई-कोर्स और विषय-वस्तु उच्च गुणवत्ता वाली है। मैं इस विचार की सराहना करता हूँ और इस उल्लेखनीय प्रगति के लिए सभी संबंधितों को बधाई देता हूँ। इसी तरह प्रयासों को अविरल बनाए रखें”

– डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

“क्षमता विकास के लिए आधुनिक आईटी टूल्स का उपयोग करके स्टेट ऑफ आर्ट सुविधा, कम लागत के साथ संकाय का उन्नयन करने और किसानों का कौशल विकास करने में एक दीर्घावधि योजना”

–डॉ. रमेश चन्द, सदस्य, नीति आयोग

“वास्तव में शिक्षण एवं लर्निंग प्रक्रिया का एक उत्तम सेट-अप, इसे सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में समेकित किया जाना चाहिए। इस अनूठे कार्य के लिए निःसंदेह नार्म बधाई का पात्र है”। –डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

“यह केन्द्र वास्तव में अद्भुत है। पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस तरह की सुविधा हमारी प्रणाली में मौजूद है। मुझे विश्वास है कि सुविधाओं से ओत-प्रोत टीम हमारी ऑन-लाइन प्रणालियों में बदलाव ला सकेगी। बेहतर नेतृत्व एवं बढ़िया कार्य”

–डॉ. के. अलगुसुन्दरम, उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

“अत्यधिक उत्पादित एवं उपयोगी प्रणाली। मुझे विश्वास है कि इसका शिक्षण में व्यापक प्रभाव पड़ेगा”।

– डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व महानिदेशक, भाकृअनुप. एवं पूर्व कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

“कृषि विश्वविद्यालयों (AU) के लाभ के लिए NARES में यहां कृषि शिक्षा प्रणाली में नई प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण को देखना दिलचस्प है। मैं, इस पहल के लिए पूरी टीम को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इससे कृषि विश्वविद्यालयों में उपयोग बढ़ेगा । ”

– डॉ. वी. प्रवीन राव, कुलपति, PJTSAU, हैदराबाद

“प्रौद्योगिकी का स्तर और उपयोगिता अत्यधिक प्रभावी है। वेस्ट इंडीज के विश्वविद्यालय में उपयोग के लिए अनेक विचार”

– डॉ. वायने गनपत, डीन, कृषि संकाय, वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय, त्रिनिदाद

“नार्म द्वारा उत्कृष्ट एवं उपयोगी सुविधा विकसित की गई है। इससे बड़ी संख्या में देश के अनुसंधानकर्मीयों/शिक्षकों को लाभ मिलेगा। मैं टीम की सराहना करता हूँ और अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।”

– डॉ. पी.के. जोशी, निदेशक, दक्षिण एशिया, अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (IFPRI), नई दिल्ली

“यह कार्यक्रम बहुत अच्छा और प्रशिक्षुओं के लिए सुविधाजनक है। हम सभी को इससे अत्यधिक लाभ मिला है और निश्चित तौर पर वापिस घर जाकर हम इस कार्यक्रम में आने के लिए और अधिक प्रशिक्षुओं को पंजीकृत अथवा जागरूक करेंगे।

– श्री अबिगैल मान्द्रिहा, ग्रामीण विकास मंत्रालय, जिम्बाबे

“यह मेरे लिए वास्तव में अत्यंत रोचक है। यह लर्निंग के लिए बहुत उपयोगी है”

प्रो. सैय्यद मोहम्मद कबीर, कंधर, अफगानिस्तान

अध्याय 6

नार्म में आयोजन

6.1 विशेष आयोजन

6.1.1 जोन-2 के लिए 23वीं भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति बैठक

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में दिनांक 24 – 25 जून, 2016 को जोन-2 के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद क्षेत्रीय समिति की 23वीं बैठक का आयोजन किया गया। इस जोन में पश्चिम बंगाल, ओड़िशा, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना राज्य और अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह केन्द्र शासित प्रदेश शामिल हैं। समिति द्वारा अनुसंधान एवं विकास संस्थानों तथा कृषि, पशु पालन एवं मात्स्यिकी के राज्य विभागों के बीच सम्पर्क और समन्वय हेतु एक मंच प्रदान किया जाता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों के निदेशक, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं अधिकारीगण, अनुसंधान केन्द्रों के प्रभारी एवं वैज्ञानिक, राज्य के संबंधित विभागों के निदेशक के अलावा परिषद मुख्यालय से सभी उप महानिदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने इस द्विवार्षिक बैठक में भाग लिया। डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली ने बैठक की अध्यक्षता की और जोन के कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्धता तथा बैकस्टॉपिंग पर राज्यों के विकास विभागों तथा परिषद के संबंधित अनुसंधान संस्थानों के बीच पारस्परिक विचार-विमर्श का नेतृत्व किया। बैठक का उद्घाटन श्री स्वप्न देबनाथ, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), पशु संसाधन विकास विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने किया और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों के प्रकाशनों को जारी किया।

डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने उपस्थितजनों का स्वागत किया। डॉ. वी.आर. सुरेश, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप – केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIFRI), बैरकपुर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। डॉ. बी. गणेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, एबीएम संभाग, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने नोडल अधिकारी के रूप में बैठक का समन्वय किया।

चित्र : जोन-2 के लिए भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति की 23वीं बैठक

6.1.2 कृषि शिक्षा दिवस

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा देश के प्रथम राष्ट्रपति एवं वर्ष 1946 में हुए चुनावों के बाद चुने गए भारत के प्रथम खाद्य एवं कृषि मंत्री डॉ. (स्वर्गीय) राजेन्द्र प्रसाद की जयंती दिनांक 3 दिसम्बर को प्रतिवर्ष कृषि शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य छात्रों को लोगों की खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा और किसानों की आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने और साथ ही राष्ट्रीय जीडीपी में कृषि के योगदान को सुनिश्चित करने के लिए कृषि एवं सम्बद्ध विषयों के महत्व के बारे में जागरूक बनाना है। इस अवसर पर, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा कृषि शिक्षा दिवस मनाते हुए हैदराबाद स्थित अपने परिसर में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली समारोह के मुख्य अतिथि थे। डॉ. महापात्र ने उपस्थितजनों को सम्बोधित करते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। भारतीय विद्या भवन (NIRD) के 100 से भी अधिक स्कूली बच्चों, तथा भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद, राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), PJTSAU, PVNR, तेलंगाना पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय और तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय (TNAU), कोयम्बटूर से लगभग 250 छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर "कृषि शिक्षा" विषय पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। स्कूली छात्रों तथा कॉलेज छात्रों के लिए चित्रकला, प्रश्न मंच, "अपशिष्ट में से सर्वश्रेष्ठ" तथा वाक-कला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्रों को प्रकृति के बारे में

और अधिक जानने और टिकाऊ आजीविका रीतियों अथवा क्रियाविधियों को बढ़ावा देने की दिशा में सृजनात्मक सोच विकसित करने का अवसर मिला।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : (<http://naarm.org.in/agriculture – education – day – celebrations – at – naarm – on – 3rd - december>)

चित्र : कृषि शिक्षा दिवस में सम्बोधित करते हुए डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप से विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कार ग्रहण करते हुए

चित्र : प्रतिभागी (पी. मनस्विनी) की चित्रकला ने जीता प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार

चित्र : समारोह में उपस्थित दर्शकगण

6.1.3 पद्म पुरस्कार से सम्मानित अतिथियों का सम्मान

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा श्री चिन्ताकिन्डी मल्लेशम एवं श्री दारीपल्ली रमैय्या जिन्हें भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया, को दिनांक 28 जनवरी, 2017 को 8वीं राष्ट्रीय प्रसार कांग्रेस – 2017 के उद्घाटन समारोह में सम्मानित किया गया। श्री मल्लेशम को उनके बुनाई मशीन इनोवेशन के लिए जाना जाता है और उन्हें विज्ञान एवं इंजीनियरिंग श्रेणी के अंतर्गत प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया है। श्री रमैय्या को देश में हरियाली के संदेश को लोकप्रिय बनाने में किए गए प्रयासों के लिए जाना जाता है और उन्हें सामाजिक कार्य श्रेणी के तहत प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया है। डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने मानव कल्याण के लिए इन दो गुणनाम हीरो द्वारा किए गए योगदान की प्रशंसा करते हुए अकादमी के साथ इनकी सम्बद्धता का स्मरण किया। डॉ. एन.एस. राठौर, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. डी. रामा राव, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद; डॉ. प्रवीन राव, कुलपति, PJTSAU , हैदराबाद; तथा डॉ. प्रेमजीत सिंह, कुलपति, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (CAU), इम्फाल उन प्रतिष्ठित अनुसंधानकर्मियों एवं शिक्षाविदों में शामिल थे जिनके द्वारा पद्मश्री पुरस्कार पाने वाले विशिष्ट अतिथिगणों का स्वागत किया गया। डॉ. सेन्थिल विनयागम ने कार्यक्रम का संचालन किया।

चित्र : श्री चिन्ताकिन्डी मल्लेशम, पद्मश्री का सम्मान

चित्र : श्री एवं श्रीमती दारीपल्ली रमैय्या, पद्मश्री का सम्मान

6.1.4 हरिता हारम (वृक्षारोपण कार्यक्रम)

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा दिनांक 30 जुलाई, 2016 को अपने परिसर में व्यापक वृक्षारोपण किया गया। अकादमी के संकाय, स्टाफ सदस्यों, फोकार्स प्रशिक्षुओं (104वां बैच), पीजीडीएमए छात्रों एवं कार्यकर्ताओं ने इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के अतिथि गृह से वृक्षारोपण रैली निकाल कर किया गया और यह रैली विभिन्न रोपण स्थलों तक गई। इस कार्यक्रम में कुल 2000 बालवृक्ष का रोपण किया गया। वृक्षों की प्रजातियों में शामिल थीं : नीम, प्लेटोफोरम, गुलमोहर, पैगोडा, फ्लेम ऑफ दि फॉरेस्ट, बहुनिया, जकरन्दा, *लैजरस्ट्रोमीआ इंडिका*, *टैबुबिया अर्जेन्टिया*, रॉयल पॉम, बरगद, सिल्वर ओक, पीपल, सपैथोदिया, *कैजिया फिस्टुला* तथा पार्किया आदि ।

इस दौरान कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी गतिविधियों की निगरानी की गई जिनमें शामिल कार्य थे : गड्ढों की खुदाई करना; खाद की व्यवस्था; एचएमडीए तथा वन प्राधिकरण के साथ सलाह एवं प्रस्ताव प्रस्तुत करना; नर्सरियों से विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के बालवृक्ष का चयन करना और उन्हें हासिल करना; पौधरोपण के लिए चार समूह बनाना; और अन्य विविध कार्य। रोपे गए पौधे की बाद में भी देखभाल सुनिश्चित की गई।

चित्र : 30 जुलाई, 2016 को परिसर में वृक्षारोपण

6.1.5 नार्म का स्थापना दिवस

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा दिनांक 01 सितम्बर, 2016 को अपना 41वां स्थापना दिवस मनाया गया। डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने अनेक प्रकाशनों को जारी किया और संस्थान के सर्वश्रेष्ठ कर्मिकों को पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर, एक रि-यूनियन कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। स्थापना दिवस कार्यक्रम में अकादमी के पूर्व निदेशकों नामतः डॉ. के.वी. रमन; डॉ. जे.सी. कत्याल; डॉ. एस.पी. तिवारी; डॉ. एस.एम. इलियास एवं डॉ. पी.के. जोशी ने भी भाग लिया और अपने विचार प्रकट किए। वर्ष 1976–78 बैच के लगभग 25 एलुमनी ने भी कार्यक्रम में भाग लिया।

दशक (2005–2015) के सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी	
पिछले दस वर्षों (2005 – 2015) के दौरान लगातार श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को मान्यता प्रदान करने के लिए वर्ष 2016 में एक नया पुरस्कार "दशक का सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी पुरस्कार" स्थापित किया गया। वर्ष 2016 के लिए पुरस्कार पाने वाले कर्मचारी थे :	
श्री के. सैमसन	अस्थाई आकस्मिक कामगार
श्री फूल कुमार	कुशल सहायी स्टाफ
श्री एम. श्रीनिवास राव	वरिष्ठ तकनीकी सहायक
श्री टी.वी. रामदास	प्रशासनिक स्टाफ
सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी पुरस्कार – 2016	
श्री के.सी. सत्यनारायण	अस्थाई आकस्मिक कामगार (पुरुष)
श्रीमती ई यादम्मा	अस्थाई आकस्मिक कामगार (महिला)
श्री एल. सत्यनारायण	कुशल सहायी स्टाफ (पुरुष)
श्रीमती वी. सरोजा	कुशल सहायी स्टाफ (महिला)
श्री पितला श्रीनिवास	तकनीकी सहायक
श्री सी. फनी राज	प्रशासनिक स्टाफ (पुरुष)
श्रीमती वाई. गायत्री	प्रशासनिक स्टाफ (महिला)

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भाकृअनुप स्थापना दिवस समारोह को सम्बोधित करते हुए

6.1.6 राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में "रिड्यूस, रिसाइक्ल तथा रियूज के माध्यम से अपशिष्ट से लाभ" विषय के तहत राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह (12 – 18 फरवरी, 2017) मनाया गया जिसका प्रयोजन आधुनिक विधियों, प्रौद्योगिकियों, बेहतर सामग्री के माध्यम से और अपशिष्ट कम करने वाली तकनीकों को अपनाकर उत्पादकता को बढ़ाने पर जागरूकता का सृजन करना था। कार्यक्रम के पहले दिन भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के लगभग कुल 120 संकाय, छात्रों तथा स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। संस्थान परिसर के आसपास स्थित फसल अपशिष्ट, वृक्ष की पत्तियों और अन्य जैव अपघटनीय अपशिष्ट का इस्तेमाल करके कम्पोस्ट बनाने की वैज्ञानिक विधि को प्रतिभागियों को दिखाया गया। संस्थान में उत्पन्न सभी जैव अपघटनीय कूड़े को खपाने अथवा दबाने के लिए एक बड़ा कम्पोस्ट गड्ढा खोदा गया। राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह के दौरान भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के स्टाफ और छात्रों के लिए अनेक अन्य प्रतियोगिताओं यथा निबंध प्रतियोगिता तथा वाक-कला का आयोजन किया गया। इसके अलावा, भारतीय विद्या भवन, एनआईआरडी कैम्पस, राजेन्द्रनगर और टाइम स्कूल, बांडलागुडा के स्कूली बच्चों के लिए एक चित्रकला

प्रतियोगिता भी आयोजित की गई जिसका विषय "रिड्यूस, रिसाइक्ल एवं रियूज" था। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के एबीएम संभाग द्वारा किया गया और डॉ. एन. शिवरमने तथा डॉ. बी. गणेश कुमार ने इसका समन्वय कार्य किया।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : <http://www.youtube.com/watch?v=Mt7SPQZ9iAo>

चित्र : राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह के तहत फार्म अपशिष्ट का संकलन करने में भागीदार पीजीडीएमए छात्र-छात्राएं

6.1.7 राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

भारत में प्रतिवर्ष 28 फरवरी को भारत के प्रथम नोबुल पुरस्कार विजेता सर सी.वी. रमन द्वारा रमन इफैक्ट की खोज की याद में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2017 का विषय "दिव्यांगजनों के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी" था। भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालयों, MANAGE, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के छात्रों तथा अकादमी स्टाफ के बच्चों के लिए एक इनोवेटिव विचार प्रतियोगिता "Ideathon – Tell an Idea Sir Ji" आयोजित की गई। PJTSAU, PVNRTVU तथा भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के छात्रों ने प्रतियोगिता में भाग लेकर दिव्यांगजनों के जीवन को आसान बनाने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग पर अपने विचार प्रकट किए। उभर कर सामने आए विचारों में दृष्टि बाधित व्यक्तियों के लिए जीपीएस – गाइडिड स्टिक में प्रोस्थेटिक्स हेतु नैनो पार्टिकल्स का उपयोग करना शामिल था।

आयोजन के भाग के रूप में, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रो. प्रकाश श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त प्राध्यापक, दक्षिणी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजेलस, सीए द्वारा वेब कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। प्रोफेसर श्रीवास्तव ने प्रो. श्रीनिवास प्रकाश रेगाला, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, BITS पिलानी, हैदराबाद कैम्पस के साथ किए गए अनुसंधान पर प्रकाश डाला और बाधित पैरों वाले व्यक्तियों के लिए समाधान प्रदान करने में अपने इनोवेशन की सफल गाथा को प्रस्तुत किया। डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने विजेताओं को प्रमाण-पत्र और विभिन्न विषयों की प्रेरणात्मक पुस्तकें दीं। सभी प्रतिभागियों को एक वर्ष के लिए NISCAIR द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिका साइन्स रिपोर्टर का अंशदान उपहार में दिया गया ताकि युवा मस्तिष्क के बीच वैज्ञानिक अध्ययन की आदत पनप सके।

अधिक जानकारी के लिए देखें : <http://www.youtube.com/watch?v=f0Mv7gXiLwg&feature=youtu.be>

चित्र : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह के दौरान विजेताओं को प्रमाण-पत्र का वितरण

6.1.8 गणतंत्र दिवस समारोह

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा अपने परिसर में दिनांक 26 जनवरी, 2017 को 68वां गणतंत्र दिवस समारोह मनाया गया जिसमें संस्थान के सभी संकाय व स्टाफ सदस्यों, छात्र-छात्राओं और प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने राष्ट्रध्वज फहराया और उपस्थितजनों को सम्बोधित किया। समारोह के प्रारंभ में, उन्होंने नार्म परिवार के सभी सदस्यों को 68वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई दीं। उन्होंने अकादमी की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और ऐसे स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों की प्रशंसा की जिन्होंने विभिन्न मंचों पर पुरस्कार जीत कर एवं मान्यता हासिल कर संस्थान का गौरव बढ़ाया है। निदेशक महोदया ने नार्म परिवार के सभी सदस्यों से इन प्रयासों को गतिमान बनाये रखने के लिए कड़ी मेहनत करने का आह्वान किया ताकि अकादमी के विजन को मूर्त रूप दिया जा सके। इस अवसर पर स्टाफ एवं छात्र-छात्राओं के लिए विभिन्न खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं रनर-अप को ट्रॉफी एवं प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

चित्र : गणतंत्र दिवस समारोह में राष्ट्रध्वज फहराते हुए

6.1.9 सतर्कता जागरूकता सप्ताह

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (फा.सं.51-2/2016-विजिलेंस-1 दिनांक 17.10.2016) के अनुदेशों के अनुसार, दिनांक 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2016 की अवधि में भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में सतर्कता सप्ताह मनाया गया। इस वर्ष सतर्कता सप्ताह का मुख्य विषय था “अखण्डता को बढ़ावा देने और भ्रष्टाचार उन्मूलन में सार्वजनिक भागीदारी”। कार्यक्रम के भाग के तौर पर, इस विषय पर निबंध लेखन एवं वाक्-कला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

सतर्कता मामलों पर जागरूकता कार्यशाला

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में दिनांक 5 नवम्बर, 2016 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें स्टाफ सदस्यों, संकाय सदस्यों एवं प्रशिक्षुओं सहित लगभग 80 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। हैदराबाद स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों के सतर्कता अधिकारियों नामतः डॉ. ए.आर.जी. रंगनाथ, भाकृअनुप – भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOR); डॉ. ई.आर. रेड्डी, अटारी; डॉ. एम. श्रीनिवास प्रसाद, भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR); डॉ. एस. देसाई, भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA); तथा डॉ. पी.जी. पद्मजा, भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIMR)।

श्री राजन अग्रवाल, निदेशक (आईसी), डेयर एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी (डेयर/भाकृअनुप), नई दिल्ली जागरूकता कार्यशाला में मुख्य अतिथि थे। श्री अग्रवाल ने निवारक सतर्कता, दण्डात्मक कार्रवाई और निगरानी उपायों से संबंधित विभिन्न संघटकों पर बल दिया। उन्होंने शिकायत (गुमनाम, छद्म नाम तथा समान नामों से), कदाचार, अखण्डता मूल्यों (निजी एवं संगठनात्मक), उत्तरदायित्व, नीति शास्त्र एवं नैतिक मूल्य तथा भेदभाव आदि को परिभाषित किया। उन्होंने बताया कि ‘रहस्यवाद + भेदभाव + उत्तरदायित्व’ को सम्मिलित करने वाले समीकरण के परिवर्तनों में बाधा से भ्रष्टाचार का मार्ग खुलता है। स्वयं में बदलाव लाना, पारदर्शिता के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना और सार्वजनिक सेवाओं के उपभोक्ताओं एवं ग्राहकों के बीच जागरूकता को बढ़ाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवयव हैं। इस कार्यशाला की एक सिफारिश यह भी है कि कृषि विश्वविद्यालयों में यूजी एवं पीजी स्तर पर नीति शास्त्र, नैतिक मूल्यों और सतर्कता को पाठ्यचर्या का हिस्सा बनाया जाए। मुख्य अतिथि, श्री राजन अग्रवाल ने सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। डॉ. एस.के. सोम, सतर्कता अधिकारी, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने इस कार्य का संचालन किया।

चित्र : डॉ. एस.के. सोम, सतर्कता अधिकारी अतिथिगणों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए

चित्र : श्री राजन अग्रवाल, निदेशक (आईसी), डेयर एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी (डेयर/भाकृअनुप) प्रमाण-पत्र वितरित करते हुए

प्रतियोगिताओं में विजेता	
संकाय एवं अधिकारियों के लिए निबंध लेखन	
प्रथम पुरस्कार	डॉ. जी.आर.के. मूर्ति
द्वितीय पुरस्कार	डॉ. के. करीमुल्ला
तृतीय पुरस्कार	डॉ. पी. कृष्णन
स्टाफ के लिए निबंध लेखन	
सर्वश्रेष्ठ निबंध	श्री ए.सी.पी.आर.एन. राव
सर्वश्रेष्ठ निबंध	श्री पी. श्रीनिवास
सर्वश्रेष्ठ निबंध	श्रीमती एन. विजयलक्ष्मी
पीजीडीएमए छात्र-छात्राओं के लिए वाक्-कला	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री नौशाबा खातून
द्वितीय पुरस्कार	श्री CH. श्रीकर

6.1.10 संसदीय राजभाषा समिति का निरीक्षण दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति ने दिनांक 10 सितम्बर, 2016 को भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में राजभाषा निरीक्षण किया। उक्त समिति का नेतृत्व डॉ. सत्य नारायण जटिया, माननीय सांसद (राज्य सभा) ने किया और समिति में शामिल अन्य माननीय सांसद सदस्य थे : श्री प्रसन्न कुमार पाटसाणी; डॉ. सुनील बलिराम गायकवाड़; श्री लक्ष्मी नारायण यादव; एवं श्री वशिष्ठ नारायण सिंह। जैसा कि अनिवार्यता है, अनेक दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में तैयार कराया गया और होटल पार्क हयात में प्रदर्शनी लगाई गई। डॉ. एस.के. सोम, श्री आशीष राय तथा डॉ. जे. रेणुका द्वारा इस आयोजन का समन्वय कार्य किया गया।

चित्र : संसदीय राजभाषा समिति को कार्य रिपोर्ट प्रस्तुत करती हुई नार्म टीम

चित्र : संसदीय राजभाषा समिति को दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, नार्म

6.1.11 विश्व मृदा दिवस

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा मेरा गांव – मेरा गौरव कार्यक्रम के तहत अंगीकृत किए गए नालगौण्डा जिले के गांवों यथा तल्लासिंगारम एवं एस. लिंगोटम में दिनांक 5 दिसम्बर, 2016 को विश्व मृदा दिवस मनाया गया। प्राकृतिक प्रणाली के महत्वपूर्ण संघटक के रूप में मृदा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए मृदा स्वास्थ्य आधारित परामर्श सेवाएं किसानों को प्रदान की गई। इस बात पर बल दिया गया कि उर्वरकों, बीजों और जल के साथ-साथ मृदा गुणवत्ता भी फसल की उपज को निर्धारित करने वाला एक अभिन्न अंग है। किसानों को मृदा की भौतिक-रासायनिक विशेषताओं एवं इनके पोषक तत्वों की स्थिति के बारे में सलाह दी गई। मृदा की स्थिति के अनुसार उर्वरकों की सही मात्रा और फसल सुसंगतता के संबंध में किसानों को स्थानीय भाषा में पाठ एवं वॉयस संदेश के रूप में परामर्श प्रदान किए गए। आयोजन में भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के साथ मिलकर कृषि विज्ञान केन्द्र, कम्पासनगर ने सहयोग किया।

6.2 किसानों तक पहुंच स्थापित करना

6.2.1 मेरा गांव –मेरा गौरव (MGMG)

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा प्रतिष्ठा उद्योग के साथ मिलकर दिनांक 2 अक्टूबर, 2014 से तेलंगाना राज्य के नालगौण्डा जिले में छोटूप्पल मंडल के दो गांवों यथा एस. लिंगोटम एवं तल्लासिंगारम कोमेरा गांव मेरा गौरव कार्यक्रम के तहत अंगीकृत किया गया। इन गांवों को भारत सरकार के कार्यक्रमों यथा सांसद आदर्श ग्राम योजना (SAGY); मेरा गांव – मेरा गौरव; तथा प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना के तहत आजीविका में सुधार लाने, बाजार सम्पर्कों का समेकन करने और त्वरित, सस्ते एवं प्रभावी आईसीटी आधारित प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की शुरुआत करने के आधार पर अंगीकृत किया गया था। आधारभूत सर्वेक्षण के माध्यम से भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के सभी संकाय सदस्य एवं छात्र-छात्रा किसानों की जरूरत आकलन; जानकारी अन्तराल का आकलन करने हेतु प्रमुख फसलों पर जानकारी परीक्षण; आजीविका तथा पशु पालन एवं फसल की खेती पर सकेन्द्रित समूह चर्चा के कार्य से सक्रिय रूप से जुड़े। एग्रो बुक (नार्म द्वारा प्रोत्साहित स्टार्ट-अप) के साथ भागीदारी करके कृषि हेतु उपयोग एवं पसंद के साथ आईसीटी पहुंच को बढ़ावा दिया गया; तथा भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद के आईसीएम संभाग के साथ सहयोग करके गांव की चारदीवारी को इंगित करने वाले भू-कर संबंधी मानचित्रों का डिजिटल डिजेशन; एवं सर्वे संख्या के आधार पर वृहद एवं सूक्ष्म पोषक तत्व मृदा विश्लेषण परिणामों को डिजिटल रूप प्रदान किया गया।

किसानों के लिए एक जानकारी प्लेटफार्म विकसित किया गया जिसका इस्तेमाल कृषि विज्ञान केन्द्र, कम्पासनगर एवं भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR), हैदराबाद के सहयोग से ओएफटी एवं अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (FLD) के साथ फसल योजना तथा सामाजिक आर्थिक हस्तक्षेपों पर किसानों को सलाह देने में किया जा रहा है। भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा अन्य अनुसंधान एवं विकास विभागों के साथ मिलकर महिलाओं के लिए सामान्य स्वास्थ्य कैम्पों एवं कौशल विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। किसानों का डाटाबेस विकसित किया गया ताकि मृदा विश्लेषण परिणामों को इंगित करते हुए उसे वेब एप्लीकेशन से जोड़ा जा सके और किसानों के मोबाइल पर सीधे ही पुश आधारित कृषि परामर्श सेवा प्रदान की जा सके। Wi-Fi केन्द्र के सूचना हब द्वारा बाजारों, स्वास्थ्य सुविधा सृजन तक पहुंच में सुधार लाया गया और इससे कम्प्यूटर का प्रयोग करने में ग्रामीण युवाओं को जागरूक बनाने में मदद मिली, तथा साथ ही कृषि संबंधी जानकारी तक पहुंच केन्द्र का उपयोग सर्वाधिक लोकप्रिय साबित हुआ। अब, दिनांक 11 जनवरी, 2017 को रंगा रेड्डी जिले में केसमपेट मण्डल के गांव वेमुलानुरवा और बंजारला थण्डा को अंगीकृत किया गया है और प्रोत्साहन गतिविधियों के रूप में कुछ कार्यकलाप चलाए गए हैं जबकि आधारभूत सर्वे का कार्य प्रगति पर है।

चित्र : भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में किसान – वैज्ञानिक पारस्परिक चर्चा

चित्र : जिला रंगा रेड्डी के गांव वरमुलानरवा में प्रारंभिक बैठक

चित्र : पशु चिकित्सा कॉलेज एवं बागवानी कॉलेज, हैदराबाद में किसानों एवं कृषिरत महिलाओं का दौरा

6.2.2 वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स के लिए खेत अनुभव प्रशिक्षण

वैज्ञानिक प्रोबेशनर्स को देशभर में स्थित विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों में भेजा गया ताकि उन्हें बुनियादी पाठ्यक्रम के भाग के तौर पर खेत परिस्थितियों से अवगत कराया जा सके।

104वें फोकार्स के प्रोबेशनर्स को कुल 11 कृषि विज्ञान केन्द्रों नामतः कृषि विज्ञान केन्द्र – गडाग, सीआईआईई भोपाल, पलेम, गुरुग्राम, बारामती, करामाडई, सीटीआरआई, राजामुन्द्री, सिरोही, रामनाथपुरम, निम्पिथ, सीपीसीआरआई कासरगोड। विभिन्न विषयों, लिंग और राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले छः प्रोबेशनर्स को सीपीसीआरआई, कासरगोड जहां सात प्रोबेशनर्स को भेजा गया था, को छोड़कर उपरोक्त प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्र में भेजा गया। 104वें फोकार्स के दौरान, पांच प्रोबेशनर्स को निम्नलिखित पांच कृषि विज्ञान केन्द्रों नामतः सबौर, बिहार; गंगावती, कर्नाटक; सतना, मध्य प्रदेश; झालावार, राजस्थान तथा बुद बुद, पश्चिम बंगाल प्रत्येक में भेजा गया।

6.3 कृषि में महिलाओं का सशक्तिकरण

6.3.1 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में दिनांक 8 मार्च, 2017 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस समारोह में "कार्य के परिवर्तनशील विश्व में महिलाएं : 2030 तक ग्रह 50-50" पर एक पैनल चर्चा की गई। डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद ने चर्चा सत्र की अध्यक्षता की जिसमें पैनल में चार सदस्य नामतः सुश्री जोयन्ना पोटाका, निदेशक, स्ट्रैटीजिक मार्केटिंग एंड कम्प्यूनीकेशन फ्रॉम इक्रीसेट, पटेनचेरू; डॉ. जयश्री सुब्रहमण्यम, टाटा इस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइन्सिज; सुश्री मानविथा रेड्डी, सह-संस्थापक, होमकॉप तथा डॉ. रविन्द्र बाबू, निदेशक, भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR), हैदराबाद शामिल थे। इस बैठक में मेजबान संस्थान के साथ-साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्य संबंधित संस्थानों यथा भाकृअनुप – भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOR), भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR) तथा भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA) आदि के प्रतिभागियों ने भी हिस्सा लिया। कार्य की दुनिया में महिलाओं के लिए उल्लेखनीय निहितार्थ के साथ बदलाव आ रहा है। प्रौद्योगिकीय प्रगति एवं ग्लोबलाइजेशन द्वारा ऐसे लोगों के लिए अभूतपूर्व अवसर उत्पन्न हो रहे हैं जो इन अवसरों तक अपनी पहुंच स्थापित कर सकते हैं वहीं दूसरी ओर, मजदूरों की

जानकारी और आय में समान रूप से बढ़ोतरी हो रही है। यदि अधिक से अधिक महिलाएं लाभप्रद कर्मचारी रखी जाती हैं तब किसी भी देश की जीडीपी में निश्चित रूप से सुधार होने की संभावना है। महिलाएं किसी भी दृष्टि से पुरुषों के मुकाबले कमतर नहीं हैं। समान अवसर प्रदान मिलने पर वे पुरुषों से भी बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं। जरूरत केवल एक ऐसी इकोसिस्टम तैयार करने की है जिसमें उन्हें आगे बढ़ने और बिना डर के कार्य करने की अनुमति दी जाए। कार्यस्थल पर महिलाओं की संख्या में बढ़ोतरी करने के लिए, संगठनों के भाग पर महिला अनुकूल नीतियां और सुविधा उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

चित्र : नार्म में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह

6.4 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता अभियान

6.4.1 रक्तदान कैम्प

तेलंगाना राज्य की रेड क्रॉस सोसायटी के सहयोग से भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में दिनांक 20 सितम्बर, 2016 को संस्थान के स्टाफ, 104वें फोकार्स के प्रशिक्षुओं और छात्र-छात्राओं को शामिल करते हुए अकादमी के स्वास्थ्य केन्द्र द्वारा रक्तदान कैम्प लगाया गया। कुल 44 लोगों ने रक्तदान किया और इसे एक स्मरणीय आयोजन बनाया।

6.4.2 स्वच्छ भारत अभियान (क्लीन इंडिया मिशन)

स्वच्छ भारत अभियान के भाग के रूप में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। रिपोर्टाधीन वर्ष में अकादमी द्वारा की गई गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

स्वच्छता पखवाड़ा

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में दिनांक 2 अक्टूबर, 2016 को व्यापक स्तर पर स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया। स्वच्छता पखवाड़े की शुरुआत में प्रशिक्षुओं, संकाय सदस्यों एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वच्छता शपथ लेकर की गई। इस कार्यक्रम में अकादमी के 104वें फोकार्स प्रोबेशनर्स, संकाय, स्टाफ एवं कामगारों ने हिस्सा लिया। कार्यालय के विभिन्न भवनों यथा प्रशासनिक ब्लॉक, सभागार, सम्मेलन हॉल, संकाय भवन, वाहन शेड, संकाय केन्द्र, शिक्षण ब्लॉक, कैन्टीन, स्वास्थ्य केन्द्र और चार अतिथि गृहों के आसपास सफाई की गई।

चित्र : डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप स्वच्छता अभियान में भागीदारी करते हुए

चित्र : प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं की भागीदारी

संस्थान परिसर में व्यापक सफाई कार्य

स्वच्छता प्रतियोगिताएं

स्वच्छता पखवाड़े के दौरान स्वच्छ भारत मिशन की ओर लोगों को प्रेरित करने के उद्देश्य से भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद में कई प्रतियोगिताओं (वाक्-कला, निबंध लेखन, वाद-विवाद, कविता/गीत) का आयोजन किया गया। इसका आयोजन सफलतापूर्वक किया गया।

अन्य स्वच्छता गतिविधियां

अन्य स्वच्छता गतिविधियों में शामिल था : परिसर की सड़कों और फुटपाथ की सफाई; खेलकूद मैदान व टेनिस कोर्ट की सफाई; हॉस्टल ब्लॉक के अंदर के क्षेत्र की सफाई आदि। भवन की छत पर भी सफाई कार्य किया गया। एवेन्यू में लगे वृक्षों के तनों पर चूना तथा लाल ऑक्साइड से रंग-रोगन किया गया। सभी आवासीय क्वार्टरों के आसपास सफाई कार्य भी किया गया और इन सभी गतिविधियों और आयोजनों को समुचित दस्तावेजी रूप दिया गया। जीएचएमसी की मदद से परिसर में अनुबंधीय कूड़ा संकलन स्कीम को सफलतापूर्वक लागू किया गया।

चित्र : अतिथि गृह एवं खेलकूद स्टेडियम में नियमित रूप से सफाई कार्य किया जा रहा है।

ठोस अपशिष्ट की रिसाइक्लिंग

परिसर में प्रतिदिन एकत्रित किए गए पत्ती, घास तथा खरपतवार के कूड़े में मौसम दर मौसम भिन्नता होती है। इस ठोस कूड़े का संकलन पेड़ों के नीचे से परिसर की सड़कों, फुटपाथ और भू-सदृश्य क्षेत्रों से किया गया। सभी जैव अपघटनीय कूड़े का संकलन किया जाता है और उसे पुराने नर्सरी क्षेत्र में ढेर लगाया जाता है। छंटाई के उपरांत, फार्म से निकलने वाले अपशिष्ट का इस्तेमाल पुराने नर्सरी क्षेत्र में वर्मी कम्पोस्टिंग के लिए किया जाता है। इस प्रकार उत्पन्न किए गए वर्मी कम्पोस्ट का इस्तेमाल नर्सरी पौधों और भू-सदृश्य बगीचे के लिए किया जाता है।

6.5 खेलकूद, योग एवं अध्यात्म अथवा ध्यान

6.5.1 खेलकूद प्रतियोगिता

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा दिनांक 22 – 26 अगस्त, 2016 के दौरान भाकृअनुप दक्षिणी जोन खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 23 परिषद संस्थानों ने हिस्सेदारी की। इस प्रतियोगिता में 71 महिलाओं सहित कुल 685 खिलाड़ियों ने भागीदारी की। प्रतियोगिता का आयोजन सिकन्दराबाद के रेलवे स्टेडियम में किया गया। इसमें 12 एथलेटिक प्रतिस्पर्धा और 9 अन्य खेलकूद प्रतिस्पर्धाएं शामिल थी। इस खेलकूद प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री राजीव त्रिवेदी, आईपीएस, प्रधान सचिव, तेलंगाना सरकार ने किया और समारोह की अध्यक्षता डॉ. डी. रामा राव, निदेशक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा की गई।

खेलकूद प्रतियोगिता में ओवरऑल टीम चैम्पियनशिप भाकृअनुप – केन्द्रीय समुद्रीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - CMFRI) ने जीती जबकि भाकृअनुप – भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IHR) ने रनर-अप ट्रॉफी जीती। श्रीमती रुक्मिणी, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद को टूर्नामेंट में ओवरऑल वैयक्तिक चैम्पियन (महिला) खिलाड़ी आंका गया। इस टूर्नामेंट में भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद को कुल टूर्नामेंट स्कोर के संबंध में चतुर्थ स्थान मिला।

चित्र : दिनांक 22-26 अगस्त, 2016 के दौरान नार्म द्वारा आयोजित भाकृअनुप दक्षिणी जोनल खेलकूद प्रतियोगिता

खेलकूद प्रतियोगिता में नार्म के विजेता खिलाड़ी	
नाम	खेल
श्री एम.के. सैमसन	शॉट पुट (गोला फेंक), डिस्कस थ्रो तथा जैवलिन थ्रो में प्रथम स्थान
श्री श्याम बहादुर	टेबल टेनिस (एकल) में उप-विजेता
नार्म टीम	वॉलीबाल (स्मैशिंग) में उप-विजेता डिस्कस थ्रो, गोला फेंक में प्रथम स्थान
श्रीमती के.के. रुक्मिणी	बैडमिन्टन (एकल) में विजेता टेबल टेनिस (एकल) में उप-विजेता ओवरऑल चैम्पियन (महिला)

6.5.2 अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा दिनांक 21 जून, 2016 को दूसरा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें अकादमी के संकाय, स्टाफ सदस्यों, पीजीडीएमए छात्रों और प्रशिक्षुओं सहित लगभग 250 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके साथ ही हैदराबाद स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के कर्मचारियों और स्थानीय हाई स्कूल के छात्र-छात्राओं ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। सभागार के सामने लेक व्यू लॉन में प्रातः 6.00 से 7.00 बजे के बीच भारत सरकार के कॉमन योग प्रोटोकॉल (CYP) के अनुसार योग सत्र

चलाया गया। योत्र सत्र के अभ्यास के उपरान्त राम कृष्ण मठ, हैदराबाद के स्वामी भूतहरिनन्द द्वारा "योग के गुण एवं लाभ" पर एक सत्र चलाया गया।

चित्र : अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगाभ्यास

चित्र : स्वामी भूतहरिनन्द द्वारा "योग के गुण एवं लाभ" पर सत्र

6.6 नार्म में अन्य गतिविधियां

6.6.1 फार्म गतिविधियां

फलोद्यान फसलें

फलोद्यान फसलों यथा आम (2.0 हेक्टेयर); नींबू (1.5 हेक्टेयर); चीकू (0.25 हेक्टेयर); आंवला (0.25 हेक्टेयर); शरीफा (1.0 हेक्टेयर); फालसा (0.5 हेक्टेयर) तथा अन्य विविध फलदार फसलों को 6.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उगाया गया। इन फसलों की नीलामी एक वर्ष की अवधि के लिए की गई और सभी तकनीकी पहलुओं यथा पोषक तत्व प्रबंधन, जल प्रबंधन तथा एकीकृत नाशीजीव एवं रोग प्रबंधन का कार्य अकादमी द्वारा किया गया।

चित्र

चित्र : आम तथा नींबू फलोद्यान में किया जा रहा संवर्धन कार्य

पुष्पविज्ञान

इस ब्लॉक में गुलाब बगीचा, कर्तित पुष्प प्रजातियां यथा रजनीगंधा, ग्लैडिओली, गुलदाउदी तथा गोल्डन रोड को 0.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल में उगाया गया। इन फूलों का उपयोग कार्यालय में विभिन्न आयोजनों के दौरान पुष्पीय व्यवस्था करने के लिए किया गया। इसके अलावा, मौसमी पुष्पीय प्रजातियां यथा गेंदा, गुलदाउदी, बटन पुष्प को पुष्पविज्ञान ब्लॉक में फूलों की क्यारियों में उगाया गया और साल्विया, गेंदा तथा गुलदाउदी जैसे मौसमी पुष्पीय पौधों को भूदृश्य बगीचे में रोपा गया।

चित्र : विभिन्न प्रजाति के बारहमासी एवं मौसमी फूलों का खिलना

भूदृश्य बगीचा एवं नर्सरी प्रबंधन

हॉस्टल, संकाय ब्लॉक, अकादमी ब्लॉक, प्रशासन ब्लॉक, निदेशक कार्यालय तथा सभागार के वर्तमान भूदृश्य बगीचों की देखभाल की गई। इनमें सिंचाई, उर्वरीकरण, झाड़ियों आदि की कटाई-छंटाई, लॉन मूवर का इस्तेमाल और सफाई आदि कार्य किया गया। हिबिस्कस, गोल्डन दुरन्ता, बोगेनविलिया, अलमाण्डा आदि जैसी अलंकारिक पौधों के गुणनीकरण का कार्य नर्सरी में किया गया। इंडोर पौधा प्रजातियों यथा फर्न, डाइफेनबैकियास, ड्रैसियेना, पेडीलैन्थस, पॉम, अरालियस, इरान्थेमस, सेन्सीवेरिया, कलाओंचे (कुल 500) सहित गमलायुक्त पौधों को विकसित किया गया और इनकी व्यवस्था विभिन्न समारोहों के दौरान अकादमी में की गई।

हॉल्स ऑफ रेजिडेन्स, वैज्ञानिक होम, अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह तथा संकाय गृह के भूदृश्य बगीचों के सौंदर्यीकरण पर विशेष फोकस किया गया। नहर में चट्टानी द्वीप टाइप हिलॉक को अवांछित वन्य घास एवं खरपतवारों से साफ किया गया। बोगेनविलिया की विभिन्न आभा (9) वाली प्रजातियों को ताड़, *टैबुबिया अर्जेन्टिया* तथा *फाइकस बेंगालेन्सिस* प्रजातियों के साथ रोपा गया।

जलजीव पालन

जल निस्राव तालाब जिसमें वर्षाकाल के दौरान प्रचुर मात्रा में जल उपलब्ध रहता है, में तीन मत्स्य प्रजातियों यथा *कटला*, कॉमन कॉर्प तथा ग्रास कॉर्प की लगभग 25000 आंगुलिक मछलियों का भण्डारण किया गया। इन्हें वारंगल स्थित मत्स्य फार्म से खरीदा गया था।

चित्र : अकादमी की नहर में छोड़ी गई मछलियां

6.6.2 कैम्पस विकास कार्य

संस्थान परिसर में सड़कों की सफाई, कार्यालय, हॉस्टल तथा आवासीय क्वार्टरों के परिसर की सफाई जैसे स्वच्छता कार्यों की योजना बनाई गई और इन कार्यों को नियमित अन्तराल पर किया गया। इसके अलावा, महत्वपूर्ण अवसरों पर सौंदर्यीकरण के कार्य के लिए विशेष प्रयास किए गए। दिनांक 20 मई, 2016 को तेज गति से चली आंधी के कारण लगभग 34 वृक्ष पूरी तरह से उखड़ गए और 200 शाखाएं टूट कर नीचे गिर गईं। सभी गिरे हुए वृक्षों और शाखाओं अथवा टहनियों को वहां से हटाया गया और इनकी बिक्री करके रुपये 70,000/- का राजस्व सृजित किया गया।

6.7 नार्म में आगन्तुक

6.7.1 विशिष्ट आगन्तुक

कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार शिक्षा प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी नेतृत्व भूमिका की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा देश तथा विदेश के विभिन्न भागों से आगन्तुकों को आकर्षित किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनेक वरिष्ठ अधिकारियों ने अकादमी का दौरा किया और संस्थान के संकाय एवं अधिकारियों के साथ परस्पर वार्तालाप किया। इसका विवरण निम्नलिखित तालिका 6.3 में प्रस्तुत है।

तालिका 6.3 : राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से विशिष्ट आगन्तुक

नाम	पदनाम	दौरे की तारीख
डॉ. जी. वेंकटेश्वर्लू	सहायक महानिदेशक (ईक्यूआर), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	1 अप्रैल, 2016
डॉ. ए. पद्म राजू	पूर्व कुलपति, आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, गुंटूर	3 अप्रैल, 2016
डॉ. एस.एल. गोस्वामी	कुलपति, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, बांदा, उ.प्र.	4 अप्रैल, 2016
डॉ. डी.एल. महेश्वर	कुलपति, बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट, कर्नाटक	19 अप्रैल, 2016
डॉ. डी. देवकुमार	पूर्व सहायक महानिदेशक (ईपीडी), भाकृअनुप., नई दिल्ली	27 अप्रैल, 2016
डॉ. ए.के. सिंह	उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), भाकृअनुप., नई दिल्ली	6 मई, 2016
डॉ. लुतफल हसन	प्रोफेसर, बांग्लादेश कृषि विश्वविद्यालय, बांग्लादेश	9 मई, 2016
डॉ. एम. सिराजुल इस्लाम	प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, बांग्लादेश कृषि विश्वविद्यालय, बांग्लादेश	9 मई, 2016
डॉ. फेबी वर्गीज	एमडी, केरल खनिज एवं धातु लि., केरल सरकार	11 मई, 2016
डॉ. आई.ए.के. रेड्डी	प्रोफेसर, एनआईटी, वारंगल	19 मई, 2016
डॉ. बैरी स्पॉडर	प्रोफेसर, सेन्ट्रल कनेक्टिकट स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए	19 मई, 2016
डॉ. वी. वल्ली कुमारी	अध्यक्ष, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग, इंजीनियरिंग कॉलेज, आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापटनम, आन्ध्र प्रदेश	20 मई, 2016
डॉ. वायने गनपत	डीन, वेस्ट इंडीज कृषि विश्वविद्यालय संकाय, त्रिनिडाड	17 जून, 2016
डॉ. वी. प्रवीन राव	कुलपति, पीजेटीएसएयू	8 अगस्त, 2016
डॉ. पी.के. जोशी	निदेशक, दक्षिण एशिया आईएफपीआरआई, पूसा, नई दिल्ली	2 सितम्बर, 2016
डॉ. एस.पी. तिवारी	पूर्व कुलपति, एसकेकेएयू, पूर्व उप महानिदेशक एवं पूर्व निदेशक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद	2 सितम्बर, 2016
श्री सी.आर. मेहता	परियोजना समन्वयक, एफआईएम पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना, भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (ICAR - CIAE), भोपाल	18 अक्टूबर, 2016

श्री अबिगैल मंदिरा	ग्रामीण विकास मंत्रालय, जिम्बाब्वे	18 अक्टूबर, 2016
डॉ. शालिनी भरत	निदेशक (शैक्षणिक), टीआईएसएस, मुम्बई	19 अक्टूबर, 2016
श्रीमती वी. उषा रानी	महानिदेशक, MANAGE, हैदराबाद	28 अक्टूबर, 2016
डॉ. त्रिलोचन महापात्र	सचिव, डेयर, भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	3 दिसम्बर, 2016
डॉ. वी.पी. शर्मा	निदेशक, राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद	23 दिसम्बर, 2016
डॉ. सी. चट्टोपाध्याय	कुलपति, उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय, पुन्डीबारी, कूचबिहार	19 जनवरी, 2017
डॉ. अरविन्द कुमार	कुलपति, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश	21 जनवरी, 2017
डॉ. एम. प्रेमजीत सिंह	कुलपति, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल	30 जनवरी, 2017
डॉ. ए.के. गर्ग	संयुक्त निदेशक (प्रसार शिक्षा), आईवीआरआई, इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश	30 जनवरी, 2017
डॉ. के.के. सहारिया	सदस्य, भाकृअनुप गवर्निंग बॉडी तथा प्रोफेसर, प्रसार शिक्षा, पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज, असम कृषि विश्वविद्यालय, खानपारा, असम	30 जनवरी, 2017
डॉ. प्रेमलता सिंह	अध्यक्ष, कृषि प्रसार संभाग एवं स्कूल समन्वयक, सामाजिक विज्ञान, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - IARI), पूसा, नई दिल्ली – 110 012	31 जनवरी, 2017
डॉ. एन.पी. राजशेखरन	सीईओ, गुरु मैनेजमेन्ट कन्सलटेन्ट्स, बंगलुरु	18 फरवरी, 2017
डॉ. सतेन्द्र सिंह आर्य	सीईओ, एग्रीकल्चर स्किल काउन्सिल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली	21 फरवरी, 2017
डॉ. एच. फिलिप	निदेशक, प्रसार शिक्षा, तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर	27 फरवरी, 2017
जोयन्ना कैन पोटाका	निदेशक, स्ट्रैटीजिक मार्केटिंग एंड कम्प्यूनीकेशन्स इकीसेट, पठेनचेरू	8 मार्च, 2017
डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी	महानिदेशक, NIRDPR, हैदराबाद	15 मार्च, 2017
डॉ. सुजीत कुमार मित्रा	निदेशक (कार्मिक), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	17 मार्च, 2017
डॉ. रमेश चन्द	सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली	18 मार्च, 2017

6.7.2 कृषि संस्थानों से आगन्तुक

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद द्वारा रिपोर्टाधीन अवधि में देश के विभिन्न भागों से आने वाले कुल 2246 कृषि छात्र-छात्राओं की मेजबानी की गई। इसका विवरण चित्र 6.1 में दर्शाया गया है।

अधिकांश आगन्तुक तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय और इसके संघटक/सम्बंधित कॉलेजों से आए थे। सबसे अधिक आगन्तुक भारत के दक्षिणी भाग और 10 प्रतिशत से भी कम आगन्तुक भारत के उत्तरी भाग से दौरा करने आए थे। इनमें से सभी ने अपने परा-स्नातक पाठ्यक्रम-पाठ्यचर्या के अंतिम दो वर्षों के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद का दौरा किया था।

अंतर्राष्ट्रीय आगन्तुक

राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद के माध्यम से टिकाऊ ग्रामीण आजीविका के लिए राष्ट्रीय संसाधन प्रबंधन कार्यक्रम के 18 प्रतिभागियों और अफ्रीकी एवं एशियाई देशों के 32 अंतर्राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने क्रमशः दिनांक 18 एवं 19 अक्टूबर, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद का दौरा किया।

स्कूली बच्चे : भारतीय विद्या भवानी अलमाकुरी स्कूल से लगभग 144 स्कूली बच्चों ने दिनांक 8 दिसम्बर, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद का दौरा किया।

चित्र 6.1 : विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों से छात्र आगन्तुक

TNAU – तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर (तमिल नाडु); UAHCS - कृषि एवं बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोगा (कर्नाटक); UAS - कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरु (कर्नाटक); JAU - जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ (गुजरात); SDAU– सरदार कृषिनगर दंतेवाडा कृषि विश्वविद्यालय, बनासकांठा (गुजरात); TRIARD –थनथाई रोइवर इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलेपमेन्ट, पेरम्बूर (तमिल नाडु); AAU– असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट (असम); KAU – केरल कृषि विश्वविद्यालय, त्रिशूर (केरल); UHS– बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट (कर्नाटक); YSPUHF – डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन (हिमाचल प्रदेश); MPKV – महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी (महाराष्ट्र); KVASU– केरल पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय; RTU – राय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय; KJU - कर्नाटक जनपद विश्वविद्यालय

अध्याय – 7

प्रकाशन एवं मान्यताएं

7.1 प्रकाशन

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), हैदराबाद की अनुसंधान गतिविधियों के परिणामस्वरूप रिपोर्टाधीन अवधि में कुल 106 प्रकाशन जारी किए गए। पिछले वर्ष में प्रकाशित पेपरों की तुलना में इस वर्ष प्रकाशित अनुसंधान पेपरों की संख्या में लगभग 33 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई (तालिका 7.1 एवं चित्र 7.1)। 50 प्रतिशत से भी अधिक अनुसंधान पेपरों को अकादमी के संकाय द्वारा अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों के साथ सहयोग करके जारी किया गया।

सभी प्रकाशनों को नार्म डिजिटल रिपोजिट्री (Eprints@naarm) में जमा कराया गया और सुलभ पहुंच के लिए एक doi (डिजिटल ऑब्जेक्ट पहचानकर्ता) का सृजन किया गया।

तालिका 7.1 : वर्ष 2016–17 के दौरान नार्म के प्रकाशन

प्रकाशन की श्रेणी	कुल
अनुसंधान पेपर	52
प्राधिकृत पुस्तकें	05
पुस्तक अध्याय	15
समीक्षा रिपोर्ट / नीति संक्षेप / लोकप्रिय लेख	04
परियोजना रिपोर्ट	06
सेमिनार / संगोष्ठी / कार्यशाला / सम्मेलन / बैठकों के कार्यवृत्त में पेपर	07
प्रशिक्षण कोर्सवेयर / कम्पेन्डियम (नार्म कार्यक्रम के लिए विकसित)	17
कुल	106

चित्र 7.1 : नार्म के प्रकाशन

7.1.1 अनुसंधान पेपर

- आदित्य, के.एस; सुभाष, एस.पी; प्रवीण, के.वी; नित्याश्री, एम.एल; भुवानी, एन. एवं शर्मा, ए. (2016)। मिनिमम स्पोर्ट प्राइस इन इंडिया : थ्योरी वर्सिस रीयल्टी, *एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च रिव्यू*, 29 : 190.
- अनि दत्त एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। एक्सपर्ट सिस्टम ऑन कोकोनट डीजिज मैनेजमेन्ट एंड वैरायटी सिलेक्शन, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन कम्प्यूटर एंड कम्प्यूनीकेशन इंजीनियरिंग*, 5 (4) : 242 – 246.
- अनु, एस.एस; रंजीत कुमार, कीचले, एच. एवं मुलर, के. (2016)। क्वांटीफाइंग हाउसहोल्ड वल्नेराबिलिटी ट्रिगर्ड बॉय ड्रॉट : इवीडेन्स फ्रॉम रूरल इंडिया, क्लाइमेट एंड डेवलेपमेन्ट, <http://dx.doi.org/10.1080/17565529.2016.1193461>
- अयालियू, बी. एवं सेकर, आई. (2016)। ट्रेन्ड्स एंड रीजनल डिस्पैरिटी ऑफ मेज प्रोडक्शन इन इंडिया, *जर्नल ऑफ डेवलेपमेन्ट एंड एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स*, 8 (9) : 193 – 199.
- बालाकृष्णन, एम; सोम, एस.के. एवं श्रीकान्त, पी.डी. (2016)। डाटाबेस डिजाइन फॉर एग्रोबायोडाइवर्सिटी रिसोर्सिज ऑफ आन्ध्र प्रदेश एंड तेलंगाना, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर*, 34 (6) : 1519 – 1525.
- भरत, के.एम; यशोदा, बी.सी. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। फीजिबिलिटी ऑफ दि फेनुग्रीक फयूचर्स कान्टैक्ट, *FIIB बिजनेस रिव्यू (FBR)*, 5 : 21 – 27.
- बंटी, डी; कृष्णन, एम; आनंदन, पी.एस. एवं देबनाथ, बी. (2016)। अवेयरनेस, परसेप्शन्स एंड एडैप्टेशन स्ट्रैटीजिज ऑफ वोमेन इन अर्बन फिशिंग विलेज क्लाइमेट चेंज इनवायरनमेन्ट – ए केस स्टडी इन वर्सावा, मुम्बई, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 63 (3) : 120 – 125.

- देवी नाइटिंगल, बी; कृष्णन, एम; आनंदन, पी.एस. एवं निलेश, पी. (2016)। सोशियो-इकोनॉमिक एंड लाइवलीहूड प्रोफाइल ऑफ ओरनामेन्टल फिश प्रोड्यूसर्स इन इंडिया – दि DFIF एप्रोच, *इकोनॉमिक अफेयर्स*, 61 (2) : 1 – 11.
- डोभाल, एस; कुमार, ए. एवं रविचन्द्रन, एस. (2016)। इवैल्यूशन ऑफ क्लोनल डाइवर्जेन्स इन *डलबर्जिया सिस्सू*क्सव फॉर डेवलपिंग प्रोडक्शन पापुलेशन, *दि इंडियन फोरस्टर*, 142 (5) : 451 – 458.
- कालिदास, आर.के; टेस्फॉम, एम.ए; अमाली, आई; कृष्णन, एम. एवं वेलमुरुगन, आर. (2016)। मैरीन फिशरीज ग्रोथ, परफार्मेंस एंड इन्स्टिट्यूशनल अरेंजमेन्ट्स इन तमिल नाडु, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिशरीज एंड एक्वाटिक स्टडीज*, 4 (5) : 342 – 346.
- करीमुल्ला, के; वेंकटकुमार, आर. एवं सैम्युल, एम.पी. (2017)। एन एनालिसिस ऑन एग्रीकल्चरल सस्टेनेबिलिटी इन इंडिया, *करन्ट साइन्स*, 112 (2) : 258 – 266.
- कुमार, ए; रविचन्द्रन, एस; डोभाल, एस. एवं कुमार, वी. (2016)। D 2 एनालिसिस फॉर इस्टीमेटिंग जिनेटिक डाइवर्जेन्स इन डिफरेंट क्लोन्स ऑफ *डलबर्जिया सिस्सू* जर्नल ऑफ *फॉरस्ट्री रिसर्च*, 27 (5) : 1085 – 1097.
- कुमार, एम.एन. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। प्रेडिक्शन ऑफ कॉप यील्ड यूजिंग वैदर एंड क्लाइमेट पैरामीटर्स फॉर सुगर केन यील्ड इन इंडिया, *इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल*, 6 (1) : 1 – 10.
- कुमार, आर; कुमार, एन.आर; कैथा, पी.के; कृष्णन, एम; प्रकाश, एस. एवं कुमार, एम. (2016)। इकोनॉमिक इम्पैक्ट ऑफ एक्वाकल्चर इन फ्लडप्लैन्स – ए केस स्टडी ऑफ सोनमर चौर इन बिहार, इंडिया, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 63 (3) : 99 – 104.
- कुमार, एस. एवं पाणिग्रही, एस.आर. (2016)। कंज्यूमर प्रिफरेंस स्टडी विद रेसपेक्ट टू आर्गेनाइज्ड एंड अन-आर्गेनाइज्ड फूड रिटेल आउटलेट्स इन अहमदाबाद सिटी ऑफ गुजरात, *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च*, 57 (4) : 463 – 472.
- कुमार, एस. एवं पाणिग्रही, एस.आर. (2016)। फार्मर्स पर्सपेक्टिव टूवार्ड्स एकजीस्टिंग पोल्ट्री कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग मॉडल इन आणंद डिस्ट्रिक्ट ऑफ गुजरात, *इकोनॉमिक अफेयर्स*, 61 (4) : 747 – 752.
- कुमार, एस; मीणा, पी.सी. एवं पाणिग्रही, एस.आर. (2017)। चेन्जिंग डाइनामिक्स ऑफ टेनैन्ट फार्मिंग इन इंडिया – एन इनसाइट फ्रॉम गुजरात, *इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड डेवलेपमेन्ट*, 13 (1) : 769 – 774.
- कुमार, एस; पाणिग्रही, एस.आर; मीणा, पी.सी. एवं कुमार, डी. (2016)। फीड क्वांटिटी ऑप्टिमाइजेशन फॉर स्मॉल डेयरी फार्मर्स ऑफ आणंद डिस्ट्रिक्ट ऑफ गुजरात, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर साइन्स*, 8 (53) : 2733 – 2738.
- मंजूनाथ, बी.एल; राव, डी; दस्तागिरी, एम.बी; शर्मा, जे.पी. एवं बर्मन, आर.आर. (2016)। न्यू इंडियन सीड बिल स्टैकहोल्डर पॉलिसी एडवोकेट्स टू इनैक्ट, *जर्नल ऑफ इनटेलैक्च्युल प्रापर्टी राइट्स*, 21 : 73 – 88.
- मो. गोरी, ए.एस. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। ए स्टडी ऑन प्री-हार्वेस्ट फोरकॉस्टिंग ऑफ कॉप प्रोडक्शन यूजिंग डिफरेंट टेक्नीक्स, *इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल*, 5 (8) : 1 – 10.
- मीणा, पी.सी. एवं मीणा, जी.एल. (2016)। आर इंडियन स्मार्ट इनफ टू मेक राइट फूड च्वाइस ट्रेन्ड एंड पैटर्न, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्स*, 8 (14) : 1250 – 1256.
- मीणा, पी.सी; कुमार, एस; श्रीनिवास, के; रंजीत कुमार, गणेश कुमार, बी; शिवारमने, एन. एवं दण्डापानी, ए. (2016)। ग्रेट इंडियन फूड पैराडॉक्स : ट्रेन्ड्स एंड पैटर्न, *एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च रिव्यू*, 29 : 31 – 42.
- मिश्रा, पी; कुमार, के. एवं कुमार, एस. (2017)। ए प्लस एंड वेजिटेबल्स वेस्टेज, *FIIB बिजनेस रिव्यू*, 5 : 65 – 74.
- मूर्ति, जी.आर.के; राव, डी.आर; राजू, डी.टी; अपर्णा, एम.एस. एवं सुगुर, ए. (2016)। MOOCs इन एग्रीकल्चरल एजुकेशन इन इंडिया स्कोप एंड पोटेन्शियल, *इंडियन जर्नल ऑफ ओपन लर्निंग*, 25 (1) : 41 – 56.

- नायक, ए.एस; रेड्डी, एम.एस; राजू, डी.टी; रेड्डी, जी.वी.बी. एवं भारती, ए. (2016)। एसेसमेन्ट ऑफ नॉलेज ट्रेनिंग नीड्स ऑफ पैरा वेटरीनेरियन्स, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइन्स, इनवायरनमेन्ट एंड टेक्नोलॉजी*, 5 (50) : 3059 – 3068.
- पाणिग्रही, एस.आर; कुमार, एस; अग्रवाल, एस. एवं महापात्र, ए. (2016)। मिल्क प्रोडक्शन एंड मार्केटिंग ऑफ डेयरी होल्डर्स इन फोर विलेज्स ऑफ करनाल डिस्ट्रिक्ट, हरियाणा, *इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च*, 57 (3) : 361 – 366.
- पाणिग्रही, एस.आर; वहोनिया, डी; मिश्रा, एस. एवं कुमार, एस. (2017)। इफीसियेन्ट चैनलाइजेशन ऑफ इनलैण्ड फिश इन गुजरात, *इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड डेवलेपमेन्ट*, 13 (1) : 153 – 158.
- पार्थिबेन, सी. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। एक्सपर्ट सिस्टम फॉर लैण्ड सूटेबिलिटी इवैल्यूशन यूजिंग डाटा माइनिंग क्लासीफिकेशन टेक्नीक्स : ए कम्पैरेटिव स्टडी, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्प्यूटर ट्रेन्ड्स एंड टेक्नोलॉजी*, 33 (2) : 87 – 92.
- पार्थिबेन, सी. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। इम्प्लीमेंटेशन ऑफ नोवल एल्गोरिद्म इन दि रूल बेस्ड एक्सपर्ट सिस्टम फॉर क्लासीफिकेशन एकुरेसी, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन कम्प्यूटर साइन्स एंड सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग*, 6 (12) : 199 – 204.
- पियाशी, डी.आर; कृष्णन, एम; अनिल, यू; रामासुब्रहमण्यम, वी; किडल, के.आर; किरिसुर, वी.आर. एवं दत्ता, एस. (2016)। रिसोर्स डिस्ट्रीब्यूशन, ग्रोथ एंड स्ट्रैटीजिज फॉर इनहैन्सिंग फिश प्रोडक्शन इन नॉर्थ ईस्टर्न स्टेट्स ऑफ इंडिया, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 63 (20) : 1 – 7.
- पन्नूसामी, के; सेन्धिल, आर. एवं कृष्णन, एम. (2016)। सोशियो-इकोनॉमिक डेवलेपमेन्ट ऑफ फिशर्स इन आन्ध्र प्रदेश एंड तेलंगाना स्टेट्स इन इंडिया, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 63 (3) : 157 – 161.
- प्रजापति, पी. एवं राठौर, एस. (2016)। इम्पैक्ट ऑफ एट्रीब्यूट्स ऑफ प्रोग्राम कॉर्डिनेटर्स ऑफ कृषि विज्ञान केन्द्र ऑन देअर मैनेजीरियल स्किल्स, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर साइन्सिज*, 8 (53) : 2678 – 2681.
- प्रिया, सी.के; करीमुल्ला, के. एवं रविचन्द्रन, एस. (2015)। एनालिसिस ऑफ स्टेट एंड नेशनल लेवल परफार्मेंस ऑफ इंडियन फॉरेस्ट्री, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एंड स्टैटिस्टिकल साइन्स*, 11 (1) : 2213 – 2220
- कुरैशी नेहा, डब्ल्यू, कृष्णन, एम. एवं सुन्दरमूर्ति, सी. (2016)। 'फिश फॉर ऑल' वर्सिस 'फिश ऑफ च्वाइस' ग्री, इनस्टैबिलिटी एंड स्टैकहोल्डर्स रिस्पॉन्स फॉर इनहैन्सिंग फिश प्रोडक्शन इन मेजर लेकस ऑफ कश्मीर, *करन्ट साइन्स*, 110 (8) : 1495 – 150.
- रक्षित, एस; गणपति, के.एन; गोमशे, एस.एस; दण्डापानी, ए; स्वप्ना, एम; महात्रे, एस; गडक, एस.आर; घोरडे, आर.बी; कामतर, एम.वाई; जाधव, बी.डी; दास, आई.के. एवं भट्ट, पी. (2016)। एनालिसिस ऑफ इंडियन पोस्ट रैनी सोरघम मल्टी लोकेशन ट्रायल डाटा रीविल्स कम्प्लेक्सिटी ऑफ जीनोटाइप x इनवायरनमेन्ट इन्टरेक्शन, *दि जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्स*, 1 : 1 – 16.
- रमेश, पी; रेड्डी, के.एम; राव, आर.वी.एस; दण्डापानी, ए; सिवा, जी.एस. एवं रामकृष्ण, ए. (2017)। एकैडमिक एचीवमेन्ट्स एंड पर्सनैलिटी ट्रेट्स ऑफ फैंकल्टी मेम्बर्स ऑफ इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज : देअर इफैक्ट ऑफ टीचिंग एंड रिसर्च परफार्मेंस। *दि जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल एजुकेशन एंड एक्सटेंशन*, 23 (1) : 79 – 94.
- रॉकटिम, आर.डी; कन्थाराजन, जी; गौतम, एस; दीपक, एस; कृष्णन, पी; राजन, आर. एवं पूर्वज, टी. (2017)। फर्स्ट रिपोर्ट ऑफ एण्टीगोना सोमवांगी HUBER , 2010 (मोलस्क : बिवालविया : वेनेरिडे) फ्रॉम इंडिया, *जर्नल ऑफ कोन्चोलॉजी*, 42 (5) : 379 – 380.
- संकर, आर.के; चड्ढा, एन.के; डैम राय, एस; बनर्जी, पी; नीलम, एस. एवं कृष्णन, पी. (2016)। ग्रोथ एंड सरवाइवल ऑफ मैरान स्पॉन्जस, *स्टाइलिसा मैसा* (कार्टर, 1887) एंड *लियोसिना पैराडॉक्सा* (थियेल, 1899) इन सी एंड लैण्ड बेस्ड कल्चर सिस्टम्स, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 63 (4) : 55 – 60.

- शिनॉय, एन.एस; राव, वी.के.जे. एवं कल्याणी, बी. (2016)। मीडिया रिसर्च एंड स्ट्रैटीजिज फॉर इफीसियेन्ट यूटीलाइजेशन ऑफ इन्फार्मेशन एंड कम्यूनीकेशन टेक्नोलॉजीज (आईसीटी) फॉर ब्रीजिंग नॉलेज गैप्स ऑफ फार्म वोमेन इन एग्रीकल्चर, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन कॉमर्स, आईटी, इंजीनियरिंग एंड सोशल साइन्सिज*, 4 (8) : 1 – 6.
- सिंह, एन; शुक्ला, आर; भट्ट, बी.के; मोरे, एस.एस. एवं मीणा, पी.सी. (2016)। रोल ऑफ स्टेट इंटरवेंशन इन मार्केटिंग ऑफ हॉर्टिकल्चरल क्रॉप्स इन गुजरात, *स्पिलट इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रोफेशनल्स*, 3 (4) : 50 – 160.
- सिवाशक्ति देवी, टी; बालासुब्रमण्यम, आर. एवं गणेश कुमार, बी. (2016)। इम्पैक्ट ऑफ सोशल वेल्फेयर प्रोग्राम्स ऑन हाउसहोल्ड्स फूड सेक्युरिटी – एन इकोनॉमिक एनालिसिस इन तमिल नाडु, *एडवॉन्सिज इन लाइफ साइन्सिज*, 5 (13) : 5487 – 5496.
- श्रीकांत, पी.डी. एवं दास, डी. (2016)। एप्लीकेशन्स ऑफ रिमोट सेन्सिंग एंड जीआईएस इन सॉयल साइन्स, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर*, 34 (6) : 1481 – 1492.
- श्रीकांत, पी.डी; कुमार, के.वी; सोम, एस.के. एवं राव, एन.एच. (2016)। एप्लीकेशन ऑफ जिओ-स्पैटियल टेक्नोलॉजीज फॉर एग्रीकल्चर, *जर्नल ऑफ ग्लोबल कम्यूनीकेशन*, 9 : 231 – 241.
- श्रीकांत, पी.डी; राव, एन.एच. एवं कुमार, के.वी. (2016)। वेब बेस्ड जिओ स्पैटियल विलेज इन्फार्मेशन सिस्टम, *जर्नल ऑफ ग्लोबल कम्यूनीकेशन*, 9 : 259 – 266.
- श्रीकांत, पी.डी; राव, एस.बी; राव, के.एच; कुमार, के.वी. एवं राव, एन.एच. (2016)। एसेसिंग रिटेल पोटेन्शियल ऑफ चिकन मीट इन हैदराबाद यूजिंग जिओस्पैटियल इन्फार्मेशन सिस्टम, *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लॉइड रिसर्च ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी एंड कम्यूटिंग*, 7 (3) : 196 – 206.
- सुभाष, एस.पी. एवं कौर, पी. (2017)। सस्टेनेबिलिटी ऑफ लाइवस्टॉक सेक्टर इन पंजाब, *इंडियन जर्नल ऑफ इकोनॉमिक डेवलेपमेन्ट*, 13 (2 a) : 413 – 420.
- सुभाष, एस.पी; श्रीनिवास, के; सैम्युल, एम.पी. एवं कल्पना शास्त्री, आर. (2016)। इवोल्यूशन ऑफ एग्रीबिजनेस इनक्यूबेशन इकोसिस्टम इन NARES फॉर प्रोमोटिंग एग्री इंटरप्रिन्यूरशिप, *इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स*, 71 (3) : 235 – 251.
- सुनील, एस.ए; जयशंकर, जे; कृष्णन, एम; आशा, एल. एवं शिनॉय, एल. (2017)। टूवार्ड्स अटैनिंग सस्टेनेबल फिशिंग ऑपरेशन इन केरल, *इंडियन जर्नल ऑफ फिशरीज*, 46 (3) : 493 – 496.
- वनिता, वी. एवं कृष्णन, पी. (2016)। एन इन्टीग्रेटेड फ्रेमवर्क टू इनहैन्स परफार्मेंस ऑफ ऑन-लाइन स्टूडेन्ट्स, *एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइन्सिज एंड ह्यूमेनीटिज*, 6(11) : 839 – 855.
- वनिता, वी. एवं कृष्णन, पी. (2017)। रीयल टाइम स्ट्रेस डिटेक्शन सिस्टम बेस्ड ऑन EEG सिगनल्स, बायोमेडिकल रिसर्च, (2017 विशेषांक) : 271 – 275.
- वनिता, वी. एवं कृष्णन, पी. (2017)। टाइम फ्रीक्वेंसी एनालिसिस ऑफ EEG फॉर इम्प्रूव्ड क्लासीफिकेशन ऑफ इमोशन, *इंटरनेशनल जर्नल बायोमेडिकल इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी*, 23 (2/3/4) : 191 – 212.
- वेंकटेश, पी; सेकर, आई; झा, जी.के; सिंह, पी; संगीता, वी. एवं पाल, एस. (2016)। हाउ डू दि स्टैकहोल्डर्स परसीव प्लांट वैरायटी प्रोटेक्शन इन इंडियन सीड सेक्टर ? *करन्ट साइन्स*, 110 (12) : 2239 – 44.

7.1.2 पुस्तकें/मोनोग्राफ्स

- गणेश कुमार, बी. एवं दत्ता, के.के. (2017)। ग्लोबल ऑफ फिश मार्केटिंग इन इंडिया, न्यू देहली पब्लिशर्स, नई दिल्ली, आईएसबीएन : 978 – 93 – 85503 – 57 – 3; पृष्ठ 317
- माजी, एस. एवं राठौर, एस. (2016)। सस्टेनेबिलिटी ऑफ नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेन्ट एक्टिविटीज, लैम्बर्ट पब्लिशिंग, आईएसबीएन : 987 – 3 – 659 – 85978 – 6; पृष्ठ 317.

- मणिकानंदन, पी; राव, के.एच. एवं कल्पना शास्त्री, आर. (2016) । डेवलपिंग लीडरशिप इन नेशनल एग्रीकल्चरल रिसर्च सिस्टम, ऑकेशनल पेपर – 17, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद, पृष्ठ 28.
- रामसुब्रमण्यम, वी; बिरादर, आर.एस. एवं कृष्णन, एम. (2017)। भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई, पृष्ठ 129.
- सहारिया, के.के; चौहान, जे; सोन्ताकी, बी.एस. एवं कुमार, वी. (2017)। दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबादमें सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा द्वारा 'न्यूट्रिशन – सेंसीटिव एग्रीकल्चर : चेंजिंग रोल ऑफ एक्सटेंशन पर 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस 2017 का सार संग्रह, पृष्ठ 160.

7.1.3 पुस्तक अध्याय

- कुमार, एस. (2016)। एग्रो-इन्टरेप्रेन्यूरशिप (सम्पादन : एस. पाणिग्रही एवं बी. सिंह) पुस्तक में "प्रोजेक्ट फार्मुलेशन", साइंटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर, भारत, पीपी 143 – 168.
- कुमार, एस; अग्रवाल, एस. एवं शर्मा, आर. (2016)। एग्रीकल्चरल मार्केटिंग – पर्सपेक्टिव एंड पोटेन्शियल (सम्पादन : ए. भट्ट एवं एस.पी. सिंह) पुस्तक में "एग्रीकल्चरल वैल्यू चेन", न्यू इंडिया पब्लिशिंग एजेन्सी, नई दिल्ली, भारत, पीपी 361 – 368.
- राजू, डी.टी. एवं वेंकटेशन, पी. (2017)। मैनुअल ऑन गुड प्रैक्टिस इन एक्सटेंशन रिसर्च एंड इवैल्यूशन (सम्पादन : पी. सेतुरमन, पी. शिवकुमार, बी.एस. सोन्ताकी, वी. रशीद सुलेमान, आर. सर्वनन एवं निमिषा मित्तल) पुस्तक में "बेस्ट प्रैक्टिस इन डाटा कलेक्शन – इरर्स एंड बायसिस", एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन इन साउथ एशिया (AES), CRISP, हैदराबाद, पीपी 59 – 68.
- राव, वी.के.जे. (2016)। ट्रेन्ड्स इन सस्टेनेबल हॉर्टिकल्चर – डाइवर्सिटी, प्रोडक्शन एंड क्रॉप इम्प्रूवमेन्ट (खंड 1) (सम्पादन : मंडल एवं साथी) पुस्तक में "आर्गेनाइजिंग मार्केट लेड एक्सटेंशन इन हॉर्टिकल्चर फॉर लेस फेवर्ड एरियाज (NEH)", एप्पल एकेडमिक प्रेस यूएसए, [http : //www. appleacademicpress.com/sustainable-horticulture-volume-1-diversity production-and-crop-improvement/9781771886468](http://www.appleacademicpress.com/sustainable-horticulture-volume-1-diversity-production-and-crop-improvement/9781771886468) पर उपलब्ध ।
- राठौर, एस. (2017)। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी । (सम्पादन : जीलानी, हरिबाबू, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद) पुस्तक में "इवैल्यूशन ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी", पीपी 305 – 331.
- राठौर, एस. (2017)। एजुकेशनल टेक्नोलॉजी । (सम्पादन : जीलानी, हरिबाबू, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद) पुस्तक में "मॉडल्स ऑफ इवैल्यूशन इन एजुकेशनल टेक्नोलॉजी", पीपी 333 – 365.
- राठौर, एस. एवं शिनाय, एस.एन. (2017)। एक्सटेंशन इनोवेशन्स फॉर एग्रीकल्चरल डेवलेपमेन्ट (सम्पादन : सिंह एवं साथी) पुस्तक में "बूस्टिंग रूरल इकोनॉमीज थ्रू लोकल इकोनॉमिक डेवलेपमेन्ट (LED) : पॉलिसी इनीशिएटिव", बायोटेक बुक्स, नई दिल्ली आईएसबीएन : 978 – 81 – 7622 – 395 – 9, पीपी 55 – 62.
- सैम्युल, एम.पी; कल्पना शास्त्री, आर. एवं रविशंकर, सी.एन. (2017)। प्रोटेक्शन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसफर इन इंडियन पर्सपेक्टिव (सम्पादन : जयकुमार, एस; करनवीर सिंह, पी.के. सिंह एवं अरजब शर्मा) पुस्तक में "टेक्नोलॉजी वैल्यूशन इन एग्रीकल्चरल एंड एलाइड सेक्टर्स", भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (ICAR - NBPGR), पूसा, नई दिल्ली, आईएसबीएन : 978 – 93 – 83537 – 31 – 0 : 86 – 104.
- सोम, एस.के. (2016)। टेक्नीकल हैण्डबुक ऑन आईपीआर इन एग्रीकल्चरल बायोटेक्नोलॉजी (सम्पादन : बिप्लव सरकार एवं साथी) पुस्तक में "करन्ट स्टेटस ऑफ एग्रीकल्चरल जीआई इन इंडिया एंड रोल ऑफ आईसीएआर रिसर्च इंस्टिट्यूट्स", भाकृअनुप – भारतीय कृषि जैव-प्रौद्योगिकी संस्थान (ICAR - IAB), रांची, पीपी 9 – 14.

- सोन्ताकी, बी.एस. एवं सुभाष, एस.पी. (2017)। एग्रीकल्चर अंडर क्लाइमेट चेंज : थ्रेट्स, स्ट्रैटीजिज एंड पॉलिसीज (सम्पादन : बेलावदी एवं साथी) पुस्तक में "फार्मर इनोवेशन सिस्टम : रिपॉजीशनिंग दि वे वी लुक एट फार्मर इनोवेशन्स", इनोवेशन एवं विज्ञान व नीति पर अनुसंधान केन्द्र (CRISP), हैदराबाद, भारत, एलाइड पब्लिशर्स, पीपी 383 – 391.
- श्रीकांत, पी.डी. एवं सरोज, पी.एल. (2016)। कैंशू इम्प्रूवमेन्ट, प्रोडक्शन एंड प्रोसेसिंग (सम्पादन : पी.एल. सरोज) पुस्तक में "थ्रीड पिरेडिक्शन मॉडल", दया पब्लिशिंग हाउस, एस्ट्रल इंटरनेशनल प्रा. लि., नई दिल्ली का एक डिवीजन, पीपी 523 – 534.
- श्रीकांत, पी.डी.; कुमार, के.वी.; सोम, एस.के. एवं राव, एन.एच. (2016)। टिकाऊ विकास के लिए नवोन्मेषी डिजिटल एप्लीकेशन्स पर 8वें जीसीआरए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के कार्यवृत्त में "एप्लीकेशन ऑफ जिओस्पैटियल टेक्नोलॉजीज फॉर एग्रीकल्चर", पीपी 581 – 591.
- सुभाष, एस.पी.; शिवकुमार, पी.एस.; सोन्ताकी, बी.एस.; सुलैमान, आर.वी.; सर्वनन, आर. एवं मित्तल, एन. (2017)। मैनुअल ऑन गुड प्रैक्टिस इन एक्सटेंशन रिसर्च एंड इवैल्यूशन में "गुड प्रैक्टिस इन एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन रिसर्च", पीपी 129 – 138.
- विनयागम, एस. (2017)। डाइमेंशन ऑफ टीचिंग (सम्पादन : एस.एस. विनयागम, जी.आर.के. मूर्ति) पुस्तक में "इम्पॉरटेन्स ऑफ गाइडेन्स एंड काउन्सलिंग इन हायर एजुकेशन", भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद, पीपी 365 – 379.
- विनयागम, एस. (2017)। कृषि में टिकाऊ विकास में ओपन एवं दूरस्थ शिक्षा पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की स्मारिका एवं विस्तारित सारांश (सम्पादन : वी. गोमती एवं साथी) में " ओपन डिस्टेन्स लर्निंग (ODL) इन एग्री – प्रिन्यूरशिप प्रब्लम्स एंड प्रॉस्पेक्ट्स" , तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर, आईएसबीएन : 978 – 93 – 84234 – 843, पीपी 384 – 393.

7.1.4 समीक्षा रिपोर्ट/नीति संक्षेप/लोकप्रिय लेख

नीति संक्षेप

- Gert-Jan Stads, कल्पना शास्त्री, आर; गणेश कुमार, बी; तारा, के. एवं लांग गायो (2016)। एग्रीकल्चरल आर एंड डी इन्डीकेटर्स फैक्टशीट – इंडिया, आईएफपीआरआई, वाशिंगटन, डीसी द्वारा प्रकाशित ।

लोकप्रिय लेख

- कुमार, एस. एवं पाणिग्रही, एस.आर. (2016)। ब्रॉयलर कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग मॉडल इन इंडिया, *पोल्ट्री टेक्नोलॉजी*, 11 (6) : 48 – 50.
- पाणिग्रही, एस.आर.; कुमार, एस. एवं महापात्र, ए. (2016)। कैटल इश्योरेंस – एन इनसाइट फॉर कैटल ओनर्स, *लाइवस्टॉक टेक्नोलॉजी*, 6(4) : 18 – 20.
- कुरैशी नेहा, डब्ल्यू. एवं कृष्णन, एम. (2016)। फिश मार्केटिंग इन कश्मीर, इंडिया – ए केस स्टडी ऑफ श्रीनगर, *एक्वाकल्चर एशिया मैगजीन*, 20 (4) : 11 – 14.

7.1.5 परियोजना रिपोर्ट

- कल्पना शास्त्री, आर. एवं गणेश कुमार, बी. (2016)। एएसटीआई रिपोर्ट – कॉन्ट्रैक्ट प्रोजेक्ट विटवीन आईएफपीआरआई, वाशिंगटन, डीसी. एंड आईसीएआर – नार्म ऑन इम्प्लीमेंटिंग एग्रीकल्चरल साइन्स एंड टेक्नोलॉजी इन्डीकेटर्स डाटा कलेक्शन एंड पॉलिसी एनालिसिस इन इंडिया, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद , पीपी 94.
- राव, वी.के.जे. (2016)। कनटूरर्स फॉर डिमाण्ड एनालिसिस ऑफ कम्बोडिया, स्टडी रिपोर्ट फॉर MANAGE , हैदराबाद – 500 030, पी 33.

- राव, वी.के.जे. (2016)। एनालिसिस ऑफ एक्सटेंशन एप्रोचस इन दि एलॉइड सेक्टर डिपार्टमेंट्स स्टडी रिपोर्ट फॉर राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद – 500 030, पी 302.
- श्रीनिवास, के; मीणा, पी.सी. एवं सुभाष, एस.पी. (2016)। डेवलपिंग गाइडलाइन्स एंड मिथोडॉलोजीज फॉर सोशियो इकोनॉमिक एसेसमेंट ऑफ LMOs अंडर UNEP – GEF फेज II : क्षमता निर्माण परियोजना संघटक 2.2 LMOs कस सामाजिक आर्थिक प्रभाव आकलन, परियोजना रिपोर्ट, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद, तेलंगाना
- सूर्या राठौर एवं एस. रविचन्द्रन (2017)। इम्पैक्ट ऑफ आईसीटी इन एग्रीकल्चरल एजुकेशन इन इंडिया, परियोजना रिपोर्ट, भाकृअनुप – एकस्ट्रा मुरॉल परियोजना, पी 138.
- वेंकटेशन, पी; वेंकटकुमार, आर. एवं सोन्ताकी, बी.एस. (2017)। फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी : ए पाथ ब्रेकिंग ग्रास रूट इंस्टिट्यूशनल इनोवेशन, नीति संक्षेप, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद 1 (1)।

7.1.6 सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला/सम्मेलन/बैठक के कार्यवृत्त में पेपर

अंतर्राष्ट्रीय

- दस्तागिरी, एम.बी. (2017)। दिनांक 5 – 7 अप्रैल, 2017 को लारेडो, टेक्सास, यूएसए में आयोजित 21वें वार्षिक पश्चिमी गोलार्ध व्यापार सम्मेलन के कार्यवृत्त में "इंडियाज हॉर्टिकल्चरल एक्सपोर्ट मार्केट्स : ग्रोथ रेट्स, इलास्टिसिटीज, ग्लोबल सप्लाय चेन्स, एंड पॉलीसिज टेक्सास A & m इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी" पीपी 124 – 144.
- कुरेशी, नेहा डब्ल्यू, कृष्णन, एम. एवं ललित अछोथ (2016)। दिनांक 11 – 15 जुलाई, 2016 को अंतर्राष्ट्रीय मात्स्यकी अर्थशास्त्र एवं व्यापार संस्थान, यूनिवर्सिटी ऑफ अबेरडीन, अबेरडीन, स्कॉटलैण्ड, यूनाइटेड किंगडम में 18वें द्विवार्षिक सम्मेलन के कार्यवृत्त में "प्राइस ट्रांसमिशन इन इंडियन थ्रिम्प एक्सपोर्ट्स" ।

राष्ट्रीय

- सिंह दिनेश, एन; पियाशी देबराय, देवी, बी.एन. एवं कृष्णन, एम. (2016)। दिनांक 15 – 17 अप्रैल, 2017 को कृषि अर्थशास्त्र अनुसंधान समीक्षा पर बरेली, उत्तर प्रदेश में एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च एसोसिएशन (AERA) के 24वें वार्षिक सम्मेलन (सम्मेलन संख्या) में "डज फिश प्रोडक्शन इन नॉर्थ ईस्ट इंडिया एड्रेस फूड एंड न्यूट्रिशनल सेक्युरिटी ऑफ दि रीजन ? " विषय पर प्रस्तुतिकरण, 211
- सिंह, आर; सिंह, ए.के. एवं सोन्ताकी, बी.एस. (2016)। दिनांक 22 – 26 नवम्बर, 2016 को नई दिल्ली, भारत में आयोजित चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सस्यविज्ञान कांग्रेस के कार्यवृत्त में "इनोवेशन्स इन नॉलेज शेयरिंग एंड टेक्नोलॉजी एप्लीकेशन" विषय पर अग्रणी पेपर, अंक 4, पीपी 190 – 194.
- सिंह, आर; सिंह, ए.के. एवं सोन्ताकी, बी.एस. (2016)। दिनांक 27 – 29 नवम्बर, 2016 को ग्रेटर नोएडा, भारत में आयोजित वैश्विक कृषि एवं इनोवेशन सम्मेलन के कार्यवृत्त में "इनोवेटिव एक्सटेंशन एप्रोचस ऑफ आईसीएआर इन एग्रीकल्चर" विषय पर अग्रणी पेपर, पीपी 32 – 34.
- श्रीकांत, पी.डी; शिनाय, एन.एस. एवं राव, वी.के.जे. (2017)। दिनांक 21 – 24 फरवरी, 2017 को यूएस, बंगलुरु द्वारा जीकेवीके में आयोजित 13वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस में "क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर एट विलेज लेवल इन्फार्मेशन सिस्टम" विषय पर पोस्टर प्रस्तुतिकरण, बी 029, पृष्ठ 142.
- व्यास, ए.के; जैन, एन.के; राजपत, के; राव, आर.वी.एस. एवं राव, के.एच. (2016)। दिनांक 22 – 26 नवम्बर, 2016 को नई दिल्ली, भारत में आयोजित चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय सस्यविज्ञान कांग्रेस के कार्यवृत्त में "कैपेसिटी बिल्डिंग एंड कम्पीटेन्सी इनहैन्समेंट फॉर एड्रेसिंग चैलेन्जिज ऑफ एग्रोनॉमी एजुकेशन इन इंडिया" विषय पर अग्रणी पेपर 4 : 212 – 217.

7.1.7 नार्म के लिए विकसित प्रशिक्षण कोर्सवेयर/सार-संग्रह

- बालाकृष्णन, एम. एवं दिनेश कुमार (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "ई-रिसोर्स मैटीरियल फॉर दि ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन बायो-इन्फार्मेटिक्स टूल्स एंड टेकनीक्स इन एग्रीकल्चर", पी 208.
- राजू, डी.टी. एवं वेंकटेशन, पी. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "कृषि विज्ञान केन्द्र के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों के लिए चतुर्थ प्रबंधन विकास कार्यक्रम", पी 224.
- राजू, डी.टी. एवं विनयागम, एस.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "वीडियो एंड कम्प्यूटर बेस्ड एजुकेशनल मैटीरियल प्रोडक्शन", 96.
- राजू, डी.टी.; मूर्ति, जी.आर.के; विनयागम, एस.एस.; रमेश, पी.; सोन्ताकी, बी.एस. एवं कल्पना शास्त्री, आर. (2016)। MOOC @ NAARM – A Journey - (ऑकेशनल पेपर), भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद, पी 27.
- राजू, डी.टी. एवं वेंकटेशन, पी. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "कृषि विज्ञान केन्द्र के नव-नियुक्त कार्यक्रम समन्वयकों के लिए चतुर्थ प्रबंधन विकास कार्यक्रम", पी 223.
- रमेश, पी.; राजू, डी.टी. एवं विनयागम, एस.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "आईसीएआर शॉर्ट कोर्स ऑन रिसेन्ट इनोवेशन्स इन एजुकेशनल टेक्नोलॉजी", पी 253.
- राठौर, एस. एवं गणेश कुमार, बी. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "इम्पैक्ट एसेसमेन्ट ऑफ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन", पी 221.
- राठौर, एस.; बालाकृष्णन, एम. एवं शिर्नाय, एन.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "आईसीएआर स्पान्सर्ड शॉर्ट कोर्स ऑन आईसीटी एप्लीकेशन्स फॉर एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन", पी 80.
- राठौर, एस.; रविचन्द्रन, एस. एवं पूनम (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के तकनीकी बुलेटिन में "स्टेटस ऑफ आईसीटी इन एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन : ए बर्ड आई व्यू", पी 51.
- राठौर, एस.; शिर्नाय, एन.एस. एवं बालाकृष्णन, एम. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "आईसीएआर शॉर्ट कोर्स ऑन आईसीटी एप्लीकेशन्स फॉर एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन", पी 100.
- शिर्नाय, एन.एस. एवं राव, के.एच. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "मैनेजमेन्ट डेवलपमेन्ट प्रोग्राम ऑन लीडरशिप डेवलपमेन्ट", पी 263.
- सोन्ताकी, बी.एस. एवं मूर्ति, जी.आर.के. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "तृतीय फाउण्डेशन कोर्स फॉर फ़ैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज", पी 223.
- वेंकटेशन, पी.; सोन्ताकी, बी.एस.; राव, वी.के.जे.; संध्या, एन.एस. एवं सूर्या, आर. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में "एफईटी गाइडलाइन्स", पी 33.
- वेंकटेशन, पी. एवं सोन्ताकी, बी.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में 'कम्पीटेन्सी स्किल्स इनहैन्समेन्ट फॉर एक्सटेंशन प्रोफेशनल्स', पी 141.

- विजया लक्ष्मी, बी; बाबू, जे.एम. एवं शिनॉय, एन.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में “बेसिक्स ऑफ लोकल लैंग्वेज कम्प्यूटिंग”, पी 32.
- विनयागम, एस.एस. एवं राव, वी.के.जे. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल में “पांचवा एमडीपी प्रोग्राम फॉर न्यूली रिक्रूटिड प्रोग्राम कॉर्डिनेटर्स ऑफ केवीके”, पी 362.
- विनयागम, एस.एस. (2016)। भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद के प्रशिक्षण मैनुअल – आईसीएआर शॉर्ट कोर्स ऑन रिसेन्ट इनोवेशन्स इन एजुकेशनल टेक्नोलॉजी में “इंफोक्विटव कम्प्यूनीकेशन स्किल्स फॉर टीचर्स”, पी 87 – 94.

7.2 पुरस्कार

7.2.1 नराकास (TOLIC) पुरस्कार

- भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में राजभाषा कार्यान्वयन को मान्यता स्वरूप नार्म ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-2 (TOLIC), हैदराबाद, केन्द्रीय सरकार कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से “सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पुरस्कार” हासिल किया। इस पुरस्कार को दिनांक 15 नवम्बर, 2016 को डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, आईएएस, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (TOLIC), हैदराबाद से डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी); डॉ. एस.के. सोम, अध्यक्ष, आईसीएम संभाग एवं डॉ. जे. रेणुका, सहायक निदेशक (राजभाषा), भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद ने ग्रहण किया।

चित्र : नार्म की टीम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (TOLIC) पुरस्कार ग्रहण करते हुए

7.2.2 डिजिटल लेन-देन के लिए भाकृअनुप पुरस्कार

भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद को अकादमी में डिजिटल लेन-देन को प्रारंभ करने के लिए की गई पहल के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से रुपये दो लाख का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। उक्त पुरस्कार डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद ने दिनांक 15 फरवरी, 2017 को नई दिल्ली में आयोजित कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं भाकृअनुप संस्थानों के निदेशकों के वार्षिक सम्मेलन में श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के कर-कमलों से प्राप्त किया। इस अवसर पर, श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री; डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद; श्री सुनील कुमार सिंह, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (डेयर/भाकृअनुप); श्री छबिलेन्द्र राऊल, अपर सचिव, डेयर एवं सचिव, भाकृअनुप; डॉ. गुरबचन सिंह, अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (ASRB) तथा डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौर, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

चित्र : डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, निदेशक (कार्यकारी), नार्म श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार से पुरस्कार प्राप्त करती हुई

तालिका 7.2 : नार्म के संकाय सदस्यों द्वारा हासिल पुरस्कार

प्राप्तकर्ता	पुरस्कार/फेलोशिप	दिनांक	प्रयोजन	एजेन्सी
आर. कल्पना शास्त्री	फेलो, सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन	31 जनवरी, 2017	अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान	सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन (SEE), आगरा
बी.एस. सोन्ताकी	फेलो, सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा	31 जनवरी, 2017	कृषि प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान	सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा

पी.डी. श्रीकांत	विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार	2016	भौगोलिक सूचना प्रणाली के क्षेत्र में विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार	वीनस इंटरनेशनल फाउण्डेशन, चेन्नई, भारत
	उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार	2016	इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रॉपिकल एग्रीकल्चर से उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार 2016	वीनस इंटरनेशनल फाउण्डेशन, चेन्नई, भारत
पी. कृष्णन	फेलो, अंडमान साइन्स एसोसिएशन	10 दिसम्बर, 2016	अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह के विकास हेतु अनुसंधान एवं विकास योगदान को मान्यता	अंडमान साइन्स एसोसिएशन, भाकृअनुप – केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIARI), पोर्ट ब्लेयर
एस.पी. सुभाष	सर्वश्रेष्ठ पेपर पुरस्कार	31 जनवरी, 2017	सर्वश्रेष्ठ पेपर	8वां राष्ट्रीय प्रसार सम्मेलन
एम.बी. दस्तागिरी	मदर टेरेसा प्रियदर्शिनी पुरस्कार	24 सितम्बर, 2016	उत्कृष्ट अनुसंधान उपलब्धियों के लिए	राष्ट्रीय आर्थिक एवं समाज विकास
	लाइफ टाइम उपलब्धि पुरस्कार	10 दिसम्बर, 2016	कृषि, समाज, पादप, पर्यावरण, कॉर्पोरेटिव एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु	जिनेसिस अर्बन एंड रूरल फॉर डेवलेपमेन्ट सोसायटी
	स्टार ऑफ एशिया अवार्ड	21 दिसम्बर, 2016	उत्कृष्ट अनुसंधान उपलब्धियों के लिए	अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रबंधन संस्थान
एस.पी. सुभाष एवं के. श्रीनिवास	सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुतिकरण पुरस्कार	23 नवम्बर, 2016	सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ पेपर प्रस्तुतिकरण	इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स
पी. वेंकटेशन	सर्वश्रेष्ठ प्रसार प्रोफेशनल पुरस्कार	31 जनवरी, 2017	सर्वश्रेष्ठ प्रसार प्रोफेशनल	सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन (SEE), आगरा

7.3 मान्यताएं

7.3.1 नार्म के बाहर उत्तरदायित्व/सौंपा गया कार्य

बालाकृष्णन, एम.

- संस्थान प्रबंधन समिति सदस्य 2016, भाकृअनुप – कुक्कुट परियोजना निदेशालय (ICAR - PDP), हैदराबाद

- मानार्थ सदस्य – 2016, सोसायटी फॉर बायो-इन्फार्मेटिक्स एंड बायोलॉजिकल साइन्सिज (SBBS), इलाहाबाद
- कोषाध्यक्ष, नार्म एलुमनी एसोसिएशन, हैदराबाद
- उपाध्यक्ष 2016, नार्म पीजी एलुमनी एसोसिएशन, हैदराबाद

गणेश कुमार, बी.

- सदस्य, दिनांक 30 अप्रैल, 2016 को भाकृअनुप – केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान (ICAR - CIFT), कोच्चि में कृषि अर्थशास्त्र विषय के वैज्ञानिकों के लिए विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक
- सदस्य, संस्थान प्रबंधन समिति, भाकृअनुप – राष्ट्रीय मीट अनुसंधान केन्द्र (ICAR & NRCM), हैदराबाद – तीन वर्ष के लिए (2017–2020)
- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में आयोजित 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में “इनेबलिंग गवर्नेंस मैकेनिज्म एंड पॉलिसी इनीशिएटिव्स” पर तकनीकी सत्र हेतु सह-अध्यक्ष

कल्पना शास्त्री, आर.

- दिनांक 9 मार्च, 2017 को प्रथम राष्ट्रीय कृषि उद्यमी सम्मेलन में कृषि स्टार्ट-अप के लिए अवसर पर आयोजित सत्र में पैनल सदस्य
- वर्ष 2030 तक महिला दिवस 50 : 50 पर चर्चा पैनल में मॉडरेटर
- विशेषज्ञ सदस्य, अपीलिय बोर्ड पेटेन्ट, तेलंगाना राज्य कृषि विभाग तथा PJTSAU के सम्मुख पेटेन्ट संख्या 232681 के रिवोकेशन पर याचिका दर्ज कराने हेतु समिति
- मेंटर, अपने स्टार्ट-अप नामतः SoilSens के लिए SINE, IIT-M द्वारा आमंत्रित। S-Cube शीर्षक से इस कार्यक्रम को SAP India के साथ सहयोग करके SINE द्वारा प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम की डिजाइन प्रौद्योगिकी आधारित स्टार्ट अप को सहायता प्रदान करने के लिए तैयार की गई जो कि स्पष्टतया सामाजिक तथा/अथवा पर्यावरणीय प्रभाव के साथ लाभ व्यवसाय समाधान के लिए विकसित हो रहे हैं। SoilSens स्टार्ट-अप को आईआईटी मुंबई के इलेक्ट्रीकल इंजीनियरिंग विभाग के पीएच.डी. छात्रों के समूह द्वारा तैयार किया गया है जिन्होंने एक सस्ता सेन्सर विकसित किया है जो कि तापमान, आर्द्रता, पीएच मान आदि जैसे विभिन्न मृदा पैरामीटरों की जानकारी दे सकता है। मेंटर के तौर पर, तीन माह की अवधि तक प्रति माह कम से कम 4 घंटे तक प्रोत्साहन के रूप में समय देने और ई-मेल अथवा फोन पर SINE-IIT-M को विचुयल सहयोग देने की प्रतिबद्धता है।
- विशिष्ट अतिथि, दिनांक 17 नवम्बर, 2016 को भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद में “खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा के लिए कृषि एवं पोषण सम्पर्क का पुनर्गठन” पर भाकृअनुप द्वारा प्रायोजित अल्पावधि पाठ्यक्रम का उद्घाटन सत्र
- मुख्य अतिथि, दिनांक 18 नवम्बर, 2016 को स्कूल ऑफ एग्रीबिजनेस मैनेजमेंट, कृषि कॉलेज, PJTSAU, हैदराबाद में “फाइनेन्सिंग एंड सस्टेनिंग रूरल एग्रीबिजनेस इन्टरप्राइजिज – ए बॉटम ऑफ पिरामिड एप्रोच” विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार
- अक्टूबर, 2016 में अंतर्राष्ट्रीय नॉलेज मिलेनियम सम्मेलन (IKMC 2016), आईकेपी नॉलेज पार्क में प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के रूप में सर्वश्रेष्ठ प्रौद्योगिकियों का निर्णय करने हेतु जूरी में पैनल सदस्य के रूप में आमंत्रित
- मुख्य अतिथि, दिनांक 20 – 25 जून, 2016 को एग्री-बायोटेक फाउण्डेशन (ABF) द्वारा “आणविक सूक्ष्म जीवविज्ञान में हालिया तकनीकें” पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र

- PJTSAU, हैदराबाद के स्थापना दिवस पुरस्कारों (जीवनपर्यन्त उपलब्धि पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ कृषक पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ कॉलेज पुरस्कार आदि) के लिए दिशानिर्देश तैयार करने हेतु समिति की सदस्य
- मुख्य अतिथि, दिनांक 28 फरवरी, 2017 को भाकृअनुप – डीपीआर में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस। इस अवसर पर “इनवेन्शन टू इनोवेशन इन एग्रीकल्चर – दि रोल ऑफ आईपीआर” पर एक वार्ता भी प्रस्तुत की।
- मुख्य अतिथि, दिनांक 25 फरवरी, 2017 को प्रजापिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, हैदराबाद द्वारा “जीवन में मूल्य पर आयोजित चार दिवसीय कार्यक्रम; नैतिक मूल्य आधारित शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण पर वार्ता” का समापन सत्र
- मुख्य अतिथि, दिनांक 24 अक्टूबर, 2016 को आईकेपी नॉलेज पार्क में “नवोन्मेष प्रभाव का मापन” विषय पर आयोजित इंटरनेशनल नॉलेज मिलेनियम गोलमेज सम्मेलन
- दिनांक 9 मार्च, 2017 को प्रथम राष्ट्रीय कृषि उद्यमी सम्मेलन में कृषि स्टार्ट-अप के लिए अवसर पर आयोजित सत्र में पैनल सदस्य
- सलाहकार समूह की सदस्य, जीआई रजिस्ट्री, जीआई आवेदन विवरण : 551 : जरदालू आम; 552 : बिहार की शाही लीची; 553 : कतरनी चावल एवं 554 : मगही पान, नार्म में संदर्भित मामले के विवरण में प्रस्तुत विवरण की सटीकता को सुनिश्चित करने हेतु तकनीकी जरूरतों पर विशेष बल देने वाले सलाहकार समूह की सदस्य के रूप में आमंत्रित।
- हैदराबाद विश्वविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) प्रारंभ करने, प्रवेश तथा संसाधन सामग्री आदि विकसित करने सहित पीजीडी-टीएमए कार्यक्रम की प्रबंधक
- सदस्य-सचिव, अनुसंधान सलाहकार समिति, भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद
- बोर्ड सदस्य, फेलो STEM, जनवरी, 2012 से अभी तक
- तीन पत्रिकाओं (TFSC; फूड पॉलिसी); अफ्रीकन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च; जर्नल ऑफ इनटेलेक्चयुल प्रापर्टी; स्प्रींजर : टेक्नोलॉजी एनालिसिस एंड स्ट्रैटीजिक मैनेजमेन्ट, बिजनेस मैनेजमेन्ट एवं इकोनॉमिक्स में अंक, एल्जेवियर पब्लिकेशन में अनुसंधान पेपरों का मूल्यांकन करने हेतु रेफरी के रूप में आमंत्रित
- विशेषज्ञ सदस्य, तेलंगाना राज्य, तेलंगाना राज्य जैव विविधता बोर्ड, तेलंगाना सरकार के औषधीय पौधों, संरक्षण एवं जैव – पूर्वक्षण से जुड़े पारम्परिक ज्ञान और बौद्धिक सम्पदा अधिकारों से जुड़े कानूनी मामलों पर विचार करने के लिए नवम्बर, 2016 में आयोजित समिति
- भाकृअनुप प्रतिनिधि – प्रबंधन मंडल, KVAFSU, बीदर (दिसम्बर, 2016 तक)
- CII, टेरी, ABLE, RIS, ASCI टेक्नोलॉजी कंसोर्शिया, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद संस्थानों (राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, डीओआर), राज्य कृषि विश्वविद्यालयों (SAUs) एवं एनएआरएस के अन्य भागीदारों, CII, तथा अन्य गैर-भाकृअनुप संस्थानों द्वारा उपलब्ध मंच पर पैनल सदस्य/वक्ता के रूप में आमंत्रित
- वैज्ञानिक सलाहकार, जुलाई 2010 से पेटेन्ट कार्यालय, भारत सरकार के पेटेन्ट अधिनियम, 1970 की धारा 115 के तहत भारत के विभिन्न न्यायालयों को तकनीकी सहायता प्रस्तुत करने में पेटेन्ट नियमावली, 2003 के नियम 103 के अनुसार वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में पैनल सदस्य

करीमुल्ला, के.

- सदस्य, आन्ध्र प्रदेश कृषि आयोग; सदस्य सचिव, बारानी कृषि एवं कृषि प्रौद्योगिकियां समिति; अध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश कृषि आयोग एवं अध्यक्ष, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन केन्द्र, हैदराबाद (14 – 16 अक्टूबर, 2016)
- सदस्य सचिव, दिनांक 14 – 16 अक्टूबर, 2016 के दौरान आन्ध्र प्रदेश कृषि आयोग में बारानी कृषि एवं कृषि प्रौद्योगिकियां समितियां तथा अध्यक्ष, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन केन्द्र, हैदराबाद

कृष्णन, एम.

- सदस्य, संस्थान प्रबंधन समिति (2017–19)
- उपाध्यक्ष, AERA, नई दिल्ली (2017 – 2019)
- उपाध्यक्ष, ISAM, हैदराबाद
- दिनांक 15 – 17 दिसम्बर, 2017 को भाकृअनुप – भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR - IVRI), बरेली, उत्तर प्रदेश में एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च एसोसिएशन के 24वें वार्षिक सम्मेलन में “बाजार, उपभोक्ता की पसंद एवं पोषण” विषय पर सत्र की अध्यक्षता

कृष्णन, पी.

- दिनांक 25 नवम्बर, 2016 को राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण, चेन्नई में मात्स्यिकी सेक्टर में जैव विविधता को मुख्य धारा में लाना विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वार्ता में “मैपिंग इकोलॉजिकली सेन्सिटिव एरियाज : एक्सपेन्डिंग एरियाज अंडर स्पैटियल कन्जरवेशन मीजर्स” पर व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।
- दिनांक 12 दिसम्बर, 2016 को भाकृअनुप – केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIARI), पोर्ट ब्लेयर में अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह के लिए द्वीपसमूह मात्स्यिकी विकास योजना तैयार करने हेतु आमंत्रित विशेषज्ञ
- दिनांक 28 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में आयोजित 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस के दौरान आयोजित तकनीकी सत्र के लिए सह-संयोजक
- दिनांक 27 अक्टूबर, 2016 एवं दिनांक 16 – 31 मार्च, 2017 के दौरान भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद की संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति में सदस्य
- दिनांक 27 अक्टूबर, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद में संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति के सदस्य

मीणा, पी.सी.

- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में “कृषि में पोषणिक सुरक्षा” सत्र हेतु संयोजक

रंजीत कुमार

- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में आयोजित 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में “आपूर्ति एवं मूल्य श्रृंखला संबंधित मुद्दे” पर तकनीकी सत्र में अध्यक्ष

संजीव कुमार

- दिनांक 24 – 25 जनवरी, 2017 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति –II की 23वीं बैठक में तकनीकी सत्र –IV के लिए रिपोर्टर
- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में “आपूर्ति एवं मूल्य श्रृंखला संबंधी मुद्दे” पर सत्र के लिए संयोजक

- दिनांक 14 – 15 मार्च, 2017 के दौरान कृषि शिक्षा में प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण अपनाने में रणनीतियां पर नीति कार्यशाला में ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र हेतु समन्वयक

सेन्थिल विनयागम, एस.

- वर्ष 2014–17 की अवधि के लिए सदस्य, अनुसंधान सलाहकार समिति, सीएसआर एंड टीआई, बरहामपुर, पश्चिम बंगाल, केन्द्रीय रेशम बोर्ड

शिवारमने, एन.

- दिनांक 24 – 25 जून, 2016 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति –III की 23वीं बैठक में तकनीकी सत्र –III के लिए रिपोर्टर
- दिनांक 14 – 15 मार्च, 2017 के दौरान कृषि शिक्षा में प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षण अपनाने में रणनीतियों पर नीति कार्यशाला में ब्रेन-स्टॉर्मिंग सत्र के लिए समन्वयक
- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में “पोषण संवेदी कृषि को बढ़ावा देने हेतु नवोन्मेष, प्रौद्योगिकियां एवं अच्छी प्रसार रीतियां” विषय पर सत्र के लिए संयोजक

सोन्ताकी, बी.एस.

- वर्ष 2017–2019 से प्रसार शिक्षा गतिविधियों का मार्गदर्शन करने हेतु प्रसार शिक्षा परिषद, यूएचएस, बागलकोट में सदस्य
- मार्च, 2017 के लिए संस्थान प्रबंधन समिति, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद के सदस्य, अटारी, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद की गतिविधियों पर सलाहकार भूमिका
- दिनांक 31 जनवरी, 2017 को सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा द्वारा कृषि प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, आगरा का फेलो
- यूएचएस, बागलकोट की प्रसार शिक्षा गतिविधियों का मार्गदर्शन करने के लिए वर्ष 2017–2019 की अवधि हेतु प्रसार शिक्षा परिषद, यूएचएस, बागलकोट के सदस्य
- मार्च, 2017 के लिए संस्थान प्रबंधन समिति, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद के सदस्य, अटारी, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद की गतिविधियों पर सलाहकार भूमिका

सोम, एस.के.

- दिनांक 4 – 5 अप्रैल, 2016 को UNEP – GEF के अंतर्गत जोखिम संचार MoEF & CC पर क्षेत्रीय कार्यशाला में विशेष सचिव
- दिनांक 06 मई, 2016 को औषधीय पौधों पर परियोजना विकास, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड में विशेषज्ञ
- दिनांक 25 – 26 जुलाई, 2016 के दौरान कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओडिशा सरकार, भुवनेश्वर में भारतीय कृषि पर विश्व व्यापार संगठन तथा इसके निहितार्थ पर अध्यक्ष
- दिनांक 22 अगस्त, 2016 से 7 सितम्बर, 2016 के दौरान सलाहकार समूह, रजिस्ट्रार ऑफ जिओग्राफिकल इन्डीकेशन, भारत सरकार का सदस्य
- दिनांक 24 मई, 2016, 31 अगस्त – 30 सितम्बर, 2016, 16 दिसम्बर एवं 7 फरवरी, 2017 को संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति (ITMC), भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIMR), हैदराबाद में सोरघम वंशकर्मों, संकर बीज, आनुवंशिक स्टॉक एवं पराजीनी सामग्री के लिए अपफ्रन्ट लाइसेंस फीस एवं रॉयल्टी का निर्धारण किया गया और रोटी बनाने वाली मशीन एवं सोरघम के अनेक उत्पादों से जुड़े अनेक

समझौता ज्ञापनों (MOUs) एवं त्रिपक्षीय समझौतों को अंतिम रूप दिया गया जिसमें आईपीआर विशेषज्ञ सदस्य के रूप में आमंत्रित।

- दिनांक 29 जुलाई, 2016 को संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति (ITMC), भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR), पेदवेगी, पश्चिमी गोदावरी जिला, आन्ध्र प्रदेश में “आईआईओपीआर नियंत्रित परागण प्रक्रिया तथा तेल ताड़ के लिए इसका विशेष यंत्र” की पेटेन्टिंग हेतु आईपीआर विशेषज्ञ सदस्य
- दिनांक 13 अक्टूबर, 2016 को आयोजित संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन समिति (ITMC), भाकृअनुप – कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय (ICAR - DPR) के लिए आईपीआर विशेष सदस्य
- दिनांक 25 – 26 जुलाई, 2016 को कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओडिशा सरकार, भुवनेश्वर में “विश्व व्यापार संगठन (WTO) और भारतीय कृषि पर इसके निहितार्थ” पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रमुख संसाधन व्यक्ति
- अगस्त, 2016 के दौरान सम्पादन सलाहकार बोर्ड, एमिटी जर्नल ऑफ एग्रोबिजनेस, मुख्य सम्पादक, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा में सदस्य
- दिनांक 28 – 31 दिसम्बर, 2016 के दौरान भाकृअनुप – राष्ट्रीय मीट अनुसंधान संस्थान (ICAR - NRCM), हैदराबाद में “कबाब बनाने की प्रक्रियाएं” पेटेन्ट आवेदन पर भाकृअनुप – राष्ट्रीय मीट अनुसंधान संस्थान (ICAR - NRCM), हैदराबाद को विशेषज्ञ सलाह देने के लिए विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।
- दिनांक 29 नवम्बर, 2016 को पारलखेमुन्डी, जिला गजपति, ओडिशा, प्रभारी, स्टेट डब्ल्यूटीओ सेल, ओडिशा सरकार के “महाराणा कास्ट” के पारम्परिक उत्पाद, ‘हॉर्न कॉफ्ट’ की जीआई पंजीकरण के लिए राज्य डब्ल्यूटीओ सेल, ओडिशा सरकार को विशेषज्ञ सलाह प्रदान की गई जिसके लिए विशेषज्ञ के तौर पर आमंत्रित किया गया।

संध्या शिर्नाय, एन.

- दिनांक 8 – 9 अप्रैल, 2016 को केन्द्रीय विद्यालय, गाचीबाउली में स्कूली बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तरीय 43वीं जवाहर लाल नेहरू विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी हेतु केन्द्रीय विद्यालय संगठन को जांचने के लिए निर्णायक
- मार्च, 2017 के लिए संस्थान प्रबंधन समिति, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद के सदस्य, अटारी, भाकृअनुप – अटारी (जोन V), हैदराबाद की गतिविधियों पर सलाहकार भूमिका
- दिनांक 8 मार्च, 2017 को एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में लिंग कार्यसूची एवं कार्रवाई योजना पर परामर्शी कार्रवाई सेमिनार में “लिंग एवं आर्थिक सशक्तिकरण” विषय पर आयोजित सत्र में अध्यक्ष

सूर्या राठौर

- वर्ष 2016–2017 के दौरान इंडियन सोसायटी ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - IARI), नई दिल्ली में सोसायटी की गतिविधियों में परामर्शी भूमिका हेतु पदाधिकारी परामर्शक (मध्य क्षेत्र)
- दिनांक 8 – 9 अप्रैल, 2016 को केन्द्रीय विद्यालय, गाचीबाउली में स्कूली बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तरीय 43वीं जवाहर लाल नेहरू विज्ञान, गणित एवं पर्यावरण प्रदर्शनी हेतु केन्द्रीय विद्यालय संगठन को जांचने के लिए निर्णायक
- जून एवं दिसम्बर, 2016 के दौरान एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में ग्रामीण विकास प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा के लिए अभ्यर्थियों का चयन करने हेतु समूह चर्चा एवं निजी साक्षात्कार का आयोजन करने में विशेषज्ञ
- दिनांक 7 जनवरी, 2017 को प्रसार शिक्षा निदेशालय, इन्दौर, आरवीएसकेवीवी, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) द्वारा कृषि कॉलेज, इन्दौर (मध्य प्रदेश) में गेहूं आधारित फसलचक्र प्रणालियों के तहत किसानों की आय को बढ़ाना (शीर्षक : गेहूं आधारित फसलचक्र प्रणालियों में प्रभाव आकलन अध्ययन) पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में “संसाधन व्यक्ति”

थम्मी राजू, डी.

- दिनांक 2 सितम्बर, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रबंधन रणनीतियां पर ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला में रिपोर्टर
- दिनांक 24 – 25 जून, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद क्षेत्रीय समिति –II की 23वीं बैठक में रिपोर्टर
- दिनांक 28 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस में रिपोर्टर

7.3.2 बाह्य परीक्षक

बालाकृष्णन, एम.

- बाह्य परीक्षक – वर्ष 2016 के दौरान भारतीदसन विश्वविद्यालय, चेन्नई के छात्रों की पीएच.डी. थीसिस का मूल्यांकन
- बाह्य परीक्षक – वर्ष 2016 के दौरान करपागम विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर, तमिल नाडु के छात्रों की पीएच.डी. थीसिस का मूल्यांकन
- दिनांक 1 – 6 अगस्त, 2016 के दौरान एआरएस ऑन-लाइन परीक्षा, ऑन-लाइन परीक्षा एनईटी (I), कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (ASRB), नई दिल्ली के लिए केन्द्र सुपरवाइजर

कल्पना शास्त्री, आर.

- बाह्य परीक्षक – कृषि संकाय, एमपीकेवी, राहुरी के पीएच.डी. छात्रों हेतु
- बाह्य परीक्षक – श्री वी. राघवेन्द्र (05 MBPH 03), स्कूल ऑफ मैनेजमेन्ट, हैदराबाद विश्वविद्यालय की पीएच.डी. थीसिस एवं वाइवा हेतु
- मिन्नामा शेरपा (ID 205 – ILLM - 28), एलएलएम डिग्री, विधि विश्वविद्यालय, हैदराबाद के शोध निबंध हेतु शोध निबंध मूल्यांकनकर्ता
- विशेषज्ञ समीक्षक – जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद राउंड 7 एवं 8 की जैव प्रौद्योगिकी इग्नीशन ग्रांट (BIG) स्कीम तथा जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC) की बायोटेक्नोलॉजी इग्नीशन ग्रांट (BIG) स्कीम में परियोजना प्रस्ताव
- जम्मू एवं कश्मीर सेक्टर में प्रस्तावों के लिए महिलाओं/अनुसूचित जाति उप-योजना के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी हेतु परियोजना प्रस्तावों के लिए आमंत्रित समीक्षक, बीज प्रभाग, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

कृष्णन, एम.

- परीक्षक – दिनांक 24 नवम्बर, 2016 को यूएएस, धारवाड़, विजयापुर में 2014-16 बैच के एम.एससी. (कृषि अर्थशास्त्र) छात्रों के लिए अंतिम व्यापक मौखिक परीक्षा का आयोजन

सोम, एस.के.

- डॉ. ललिता नारायण, प्रोफेसर, गुजरात विकास अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद द्वारा लिखित "एग्रीकल्चरल जिओग्राफिकल इन्डीकेशन इन इंडिया" अनुसंधान पेपर की समीक्षा की गई।
- अनुसंधान पेपर शीर्षक "इन्ट्रोड्यूसिंग दि कनसेप्ट ऑन इनटेलेक्चयूल प्रापर्टी एंड इट्स मैनेजमेन्ट टू रिसर्च स्कॉलर्स इन एग्रीकल्चर" की समीक्षा की गई। पेपर को एनएएस जर्नल 'एग्रीकल्चरल रिसर्च' में प्रस्तुत किया गया।

संध्या शिनाँय, एन.

- विशेषज्ञ – जून एवं दिसम्बर, 2016 में एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में ग्रामीण विकास प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा के लिए अभ्यर्थियों का चयन करने हेतु समूह चर्चा एवं निजी साक्षात्कार का आयोजन
- बाह्य परीक्षक – वर्ष 2016–17 के दौरान PJTSAU, हैदराबाद में एम.एससी. थीसिस मूल्यांकन एवं यूएस, धारवाड़ में पीएच.डी. थीसिस मूल्यांकन हेतु
- बाह्य परीक्षक – रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई और तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय (TNAU), कोयम्बटूर के लिए मास्टर स्तरीय पाठ्यक्रम हेतु

संजीव कुमार

- बाह्य परीक्षक – डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के डेयरी उद्योग कॉलेज, गुरु अंगद देव पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब में सूचना प्रौद्योगिकी हेतु
- बाह्य परीक्षक – डेयरी विज्ञान कॉलेज, कालाबुरगी, कर्नाटक पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के ऑपरेशन अनुसंधान एवं प्रबंधन विषय हेतु

थम्मी राजू डी.

- पीएच.डी. परीक्षा पेपर सेटर – थीसिस मूल्यांकन एवं मौखिक परीक्षा (*Viva Voce*), तनुवास (TANUVAS)
- M.V.Sc. थीसिस मूल्यांकन, एसवीवीयू
- पीएच.डी. थीसिस मूल्यांकन, इग्नू
- एम.एससी. (कृषि) थीसिस मूल्यांकन, PJTSAU

7.3.3. संसाधन व्यक्ति के रूप में प्रशिक्षण/आयोजन में संकाय की भागीदारी

बालाकृष्णन, एम.

- दिनांक 18 मई, 2016 को सीएसई विभाग, नन्दा इंजीनियरिंग कॉलेज, इरोड, तमिल नाडु द्वारा “कृषि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका” पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला
- दिनांक 24 नवम्बर, 2016 को डॉ. बी.आर.आर. सरकारी डिग्री कॉलेज, जडचरला, महबूबनगर जिला में जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा “जीवविज्ञान एवं जैव सूचनाप्रणाली अनुप्रयोग में वर्तमान रुझान” पर आयोजित राष्ट्रीय स्तरीय सेमिनार
- दिनांक 9 फरवरी, 2017 को भाकृअनुप – भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIRR), हैदराबाद में जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा जैव प्रौद्योगिकी प्रारंभकों के लिए जैव सूचनाप्रणाली पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

दण्डापानी, ए.

- दिनांक 16 दिसम्बर, 2016 को मोदीपुरम में भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IASRI), नई दिल्ली द्वारा “कृषि सांख्यिकी में अनुसंधान – प्रयासों में तेजी लाने का समय” विषय पर कृषि अनुसंधान सांख्यिकीविदों का 18वां राष्ट्रीय सम्मेलन
- दिनांक 29 जून, 2016 को राजामुन्द्री में भाकृअनुप – पुष्पविज्ञान अनुसंधान निदेशालय (ICAR - DFR), पुणे द्वारा “अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना सूचना प्रणाली” पर आयोजित पुष्पविज्ञान पर 25वीं वार्षिक समूह बैठक
- दिनांक 6 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IHR), बंगलुरु में अखिल भारतीय समन्वित फल अनुसंधान परियोजना द्वारा भाकृअनुप – अखिल भारतीय समन्वित फल अनुसंधान परियोजना की चौथी समूह चर्चा में “डिजिटाइजेशन ऑफ आईसीएआर – एआईसीआरपी इन्फार्मेशन एंड डाटा फॉर इन्वैलिग डाटा मैनेजमेन्ट” विषय पर आमंत्रित वार्ता

- दिनांक 24 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IASRI), नई दिल्ली में दूसरी नोडल अधिकारी कार्यशाला के तकनीकी सत्र v में "अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना ऑटोमेशन प्रणाली"
- दिनांक 8 अगस्त, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र (ICAR - NCIPM), नई दिल्ली में प्रयोगों की डिजाइन के फण्डामेंटल
- दिनांक 31 जनवरी, 2017 को हैदराबाद में राष्ट्रीय पादप स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान द्वारा आयोजित प्रयोगों के सिद्धान्त

गणेश कुमार, बी.

- दिनांक 27 मई, 2016 को एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में टिकारु ग्रामीण आजीविका के लिए प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "ग्रामीण क्षेत्रों में पशुधन आधारित आजीविका" पर व्याख्यान
- दिनांक 29 जून, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में मात्स्यिकी विभागों के मध्यमवर्गीय प्रसार कार्मिकों के लिए "प्रसार प्रबंधन में नए आयाम" पर पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम में "मार्केटिंग सिनेरियो एंड अल्टरनेट मार्केटिंग सिस्टम्स इन फिशरीज" पर व्याख्यान
- दिनांक 25 अगस्त, 2016 को TSMILD, हैदराबाद में तेलंगाना राज्य के लिए VAS के लिए "पशुधन उत्पादों में मूल्य संवर्धन के माध्यम से उद्यमशीलता विकास" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "मार्केटिंग स्ट्रैटजी फॉर लाइवस्टॉक प्रोडक्ट्स" पर व्याख्यान
- दिनांक 26 अगस्त, 2016; 17 नवम्बर, 2016 और 18 जनवरी, 2017 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में जलजीव उद्यमियों के लिए 'मात्स्यिकी विकास हेतु मात्स्यिकी प्रौद्योगिकियों और प्रसार प्रबंधन में प्रगति' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "मार्केटिंग स्ट्रैटजीज टू इनकीज दि फिशरीज बिजनेस" पर व्याख्यान
- दिनांक 21 दिसम्बर, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में राज्य पशु पालन विभाग के प्रसार कार्मिकों के लिए 'परिशुद्ध डेयरी पालन के लिए प्रसार प्रबंधन' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "लाइवस्टॉक मार्केटिंग स्ट्रैटजीज फॉर प्रेसिजन डेयरी फार्मिंग" पर व्याख्यान
- दिनांक 23 फरवरी, 2017 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में राज्य मात्स्यिकी विभाग के नव-नियुक्त मात्स्यिकी प्रसार अधिकारियों के लिए 'मात्स्यिकी विकास हेतु प्रसार प्रबंधन युक्तियां' पर आयोजित इन्डक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम में "मार्केटिंग स्ट्रैटजीज टू इनकीज दि फिशरीज बिजनेस" पर व्याख्यान
- दिनांक 13 जुलाई, 2016 एवं 26 जुलाई, 2016 को हैदराबाद, तेलंगाना में राज्य कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (SAMETI) द्वारा राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद के पीजीडीईएम के लिए पंजीकृत कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के प्रसार अधिकारियों के लिए "कृषि प्रसार में अनुसंधान विधियां" पर पाठ्यक्रम की अनुबंध कक्षा
- दिनांक 30 सितम्बर, 2016 को हैदराबाद में राज्य कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (SAMETI), आन्ध्र प्रदेश द्वारा राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद के पीजीडीईएम के लिए पंजीकृत कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के प्रसार अधिकारियों के लिए "कृषि में टिकारु आजीविका" पाठ्यक्रम पर अनुबंध कक्षा

कल्पना शास्त्री, आर.

- संसाधन व्यक्ति –कृषि डोमेन में वरिष्ठ फेलोशिप के लिए 50 आवेदनों के 2015–2016 फुलब्राइट आवेदकों और मूल्यांकनकर्ताओं के लिए प्रोत्साहन कार्यशाला, संयुक्त राज्य – इंडिया एजुकेशनल फाउण्डेशन (USIEF)

- दिनांक 26 जनवरी, 2017 को इनक्यूबेटर्स, एक्सीलेरेटर्स के लिए इंडियन STEPs एंड बिजनेस इनक्यूबेटर्स एसोसिएशन (स्टार्ट अप इनेबलर्स प्रशिक्षण श्रृंखला में ISBAO (प्रोफेशनल कोर्स लेवल 1") द्वारा शीर्षक "एग्रीबिजनेस इनक्यूबेशन" सत्र के लिए अतिथि वक्ता
- दिनांक 18 अक्टूबर, 2016 को विलग्रो के साथ मिलकर a-IDEA, NAARM TBI द्वारा आयोजित एक कृषि उद्यम का निर्माण करना : रूझान एवं वित्तीय अवसर पर वक्ता श्रृंखला में "आर एंड डी प्रीपेयरडनेस फॉर एग्री – इनोवेशन्स' पर आमंत्रित वक्ता
- दिनांक 20 अक्टूबर, 2016 को एशियन साइन्स पार्क एसोसिएशन (ASPA) के 20वें अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक सम्मेलन में "साइन्स एंड टेक्नोलॉजी पार्कस : एन इंजन फॉर ग्रोथ" पर प्रारंभिक सत्र में आमंत्रित वक्ता
- दिनांक 14 अप्रैल, 2016 को TIE, हैदराबाद तथा सतगुरु द्वारा आयोजित एग्री इनोवेशन समिट में "ऑपचूनीटीज फॉर इनोवेशन एज ट्रिगर फॉर एग्री – स्टार्ट अप्स" पर आमंत्रित वक्ता

करीमुल्ला, के.

- दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIMR), हैदराबाद में सोरघम पर मॉडल प्रशिक्षण कार्यक्रम में "वैल्यू चेन्स फॉर मिलेट्स"
- दिनांक 10 दिसम्बर, 2016 को CII – AP चैप्टर, गुन्टूर में CII – AP TEC में "फाइनेन्स फॉर फार्मिंग"
- दिनांक 25 मई, 2016 को एनआईआरडी, हैदराबाद में देशों के कार्यक्रम विकसित करने हेतु जलसंभर विकास में "वाटर शेड्स एंड नेचुरल रिसोर्स मैनेजमेन्ट इन डेवलपिंग कन्ट्रीज"

कृष्ण, एम.

- दिनांक 10 नवम्बर, 2016 को एनआईआरडी, हैदराबाद में खाद्य एवं पोषणिक सुरक्षा के संदर्भ में "इकोनॉमिक्स ऑफ फिशरीज डेवलपमेन्ट" पर अतिथि व्याख्यान

कृष्ण, पी.

- दिनांक 10 – 11 नवम्बर, 2016 के दौरान मात्स्यिकी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, पराक्कई, केके जिला, तमिल नाडु में तमिल नाडु मात्स्यिकी विश्वविद्यालय (TNFU) द्वारा "जैव विविधता एवं जलजीव संसाधनों का संरक्षण" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में "करन्ट ट्रेन्ड्स इन कोस्टल जोन मैनेजमेन्ट – इनपुट्स फॉर इवीडेन्स बेस्ड कन्जरवेशन प्लानिंग" पर मुख्य नोट सम्बोधन प्रस्तुत किया।
- दिनांक 24 जनवरी, 2017 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय वन्य अकादमी (IGNFA), देहरादून में वरिष्ठ आईएफएस अधिकारियों के लिए मध्यवर्ती कैरियर प्रशिक्षण (MCT) कार्यक्रम में "इनवायरनमेन्टल क्लीयरेन्स प्रोसेस इन इंडिया-लीगल कानटेक्स्ट, कन्सर्न एंड वे फारवर्ड" पर आमंत्रित व्याख्यान

मंजू गेरार्ड

- दिनांक 22 – 23 फरवरी, 2017 को उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में सूक्ष्मजीव जैव प्रौद्योगिकी में फ्रण्टियर्स विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार UGC – DRS – 1 (SAP) में "इनोवेशन, आईपीआर एंड टेक्नोलॉजी मैनेजमेन्ट" पर व्याख्यान

मूर्ति, जी.आर.के.

- दिनांक 3 – 4 जून, 2016 को भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - IARI), पूसा, नई दिल्ली में ज्ञान प्रबंधन पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम
- दिनांक 24 अगस्त, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में प्रशिक्षण कार्यक्रम
- दिनांक 15 नवम्बर, 2016 को MANUU, हैदराबाद में प्रशिक्षण कार्यक्रम

- दिनांक 9 नवम्बर, 2016 को EEI, हैदराबाद में प्रशिक्षण कार्यक्रम
- दिनांक 8 – 9 मार्च, 2017 को कृषि इंजीनियरिंग कॉलेज, बापटला (आन्ध्र प्रदेश) में सहायक संकाय
- दिनांक 27 मार्च, 2017 को VNR VJIT, हैदराबाद में ओपन शिक्षा सप्ताह
- दिनांक 17 अक्टूबर, 2016 को भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद में “पॉलिसी फ्रेमिंग फॉर अपस्केलिंग फार्म मशीनरी कस्टम हायरिंग” पर ब्रेनस्टॉर्मिंग कार्यशाला
- दिनांक 8 – 9 अगस्त, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में “भारत में कृषि शिक्षा पर आईसीटी का प्रभाव” विषय पर परामर्शी कार्यशाला

रविचन्द्रन, एस.

- दिनांक 29 जून, 2016 को भारतीय सांख्यिकी संस्थान, चेन्नई में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर मुख्य सम्बोधन
- दिनांक 24 मार्च, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में कृषि परियोजना पर कार्यशाला
- दिनांक 28 – 31 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में ‘पोषण संवेदी कृषि : प्रसार की परिवर्तनशील भूमिका’ विषय पर आयोजित राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस (NEEC)
- दिनांक 29 जून, 2016 को भारतीय सांख्यिकी संस्थान, चेन्नई में राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस

सेन्थिल विनयागम, एस.

- दिनांक 24 – 25 नवम्बर, 2016 को तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय में कृषि में टिकाऊ विकास (ODLSDA) के लिए ओपन एवं दूरस्थ लर्निंग पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में प्रमुख वक्ता
- दिनांक 6 अप्रैल, 2016 को हैदराबाद में एनएफडीबी द्वारा मात्स्यिकी के विकास में अटारी की भूमिका पर आयोजित ब्रेन-स्टॉर्मिंग कार्यशाला
- दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को आईआईसीटी, हैदराबाद में जीआरआई बैठक
- दिनांक 21 सितम्बर, 2016 को भाकृअनुप – भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIMR), हैदराबाद में सोरघम की खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ क्रियाविधियां एवं मूल्य वर्धन का महत्व
- दिनांक 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2016 को CRISP एवं भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबादद्वारा संयुक्त रूप से प्रसार अनुसंधान एवं मूल्यांकन में बेहतर रीतियां विषय पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 30 – 31 दिसम्बर, 2016 को हैदराबाद में राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE) द्वारा “दलहन आधारित फसलचक्र प्रणालियों पर विशेष बल देते हुए बारानी क्षेत्रों में किसानों की स्थिति” विषय पर आयोजित कार्यशाला एवं नीति वार्ता
- दिनांक 28 – 30 जनवरी, 2017 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी (ICAR - NAARM), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद में SEE (आगरा) द्वारा ‘पोषण संवेदी कृषि : प्रसार की बदलती भूमिका’ विषय पर आयोजित 8वीं राष्ट्रीय प्रसार शिक्षा कांग्रेस – 2017
- दिनांक 25 जनवरी, 2017 को हैदराबाद में राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE) द्वारा प्रमाणित फार्म परामर्शक कार्यक्रम के आधारभूत माड्यूल (पशु पालन सेक्टर) हेतु विषय वस्तु की पहचान करने के लिए परामर्शी बैठक
- दिनांक 30 मार्च, 2017 को तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर द्वारा “नवोन्मेषी मॉडल्स के माध्यम से कृषि उद्यमशीलता को बढ़ावा देना” विषय पर आयोजित पारस्परिक कार्यशाला

सोम, एस.के.

- दिनांक 28 अगस्त, 2016 को एसवीपीयूएटी, मेरठ में कृषि जैव प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केन्द्र में कृषि जैव प्रौद्योगिकी में आईपीआर
- दिनांक 8 दिसम्बर, 2016 को हैदराबाद में बीवीबी, जुबली हिल्स द्वारा 'स्कूली बच्चों के लिए कृषि जैव विविधता' विषय पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 25 जुलाई, 2016 को भुवनेश्वर में राज्य डब्ल्यूटीओ सेल, कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओड़िशा सरकार द्वारा विश्व व्यापार संगठन (WTO) तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 25 जुलाई, 2016 को भुवनेश्वर में राज्य डब्ल्यूटीओ सेल, कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओड़िशा सरकार द्वारा TRIPS एवं ओवरव्यू पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 25 जुलाई, 2016 को भुवनेश्वर में राज्य डब्ल्यूटीओ सेल, कृषि एवं खाद्य उत्पादन निदेशालय, ओड़िशा सरकार द्वारा ओड़िशा पर विशेष फोकस करते हुए किसानों के लिए जीआई एवं इसके निहितार्थ विषय पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 20 – 23 अप्रैल, 2016 को तनुवास (TANUVAS), चेन्नई में VCRI, नामक्कल, ऑफ-कैम्पस DWRP कार्यक्रम द्वारा आयोजित प्रोजेक्ट लॉजिकल फ्रेमवर्क / AHP एनालाइजर / स्टैकहोल्डर एनालिसिस (T + P)
- दिनांक 23 मई, 2016 को हैदराबाद में राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE) द्वारा आयोजित लॉजिकल फ्रेमवर्क एप्रोच
- दिनांक 14 जून, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद द्वारा कृषि एवं ट्रिप्स (TRIPS) पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 15 जून, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद द्वारा आयोजित भारतीय किसानों के लिए जीआई एवं इसके निहितार्थ पर कार्यशाला
- दिनांक 15 जून, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद द्वारा एसपीएस तथा टीबीटी पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 10 सितम्बर, 2016; 9 नवम्बर, 2016 एवं 4 जनवरी, 2017 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद द्वारा कृषि जानकारी की प्रभावी भागीदारी के लिए सोशल मीडिया पर आयोजित कार्यशाला

सोन्ताकी, बी.एस.

- दिनांक 4 – 5 जुलाई, 2016 को डेयरी विज्ञान कॉलेज (KVAFSU), कलाबुर्गी में "अनुसंधान प्रस्ताव लिखना" विषय पर आयोजित कार्यशाला
- दिनांक 4 – 5 जुलाई, 2016 को पशु चिकित्सा विज्ञान कॉलेज, हैदराबाद में "वैज्ञानिक अनुसंधान करने हेतु युवा प्रसार पेशेवरों को प्रोत्साहित करना" विषय पर इण्डियन वेटेनरी एक्सटेंशन फोरम (IVEF) की क्षेत्रीय कार्यशाला में "पुरस्कार जीतने वाले अनुसंधान प्रस्तावों को तैयार करना" विषय पर व्याख्यान
- दिनांक 7 – 8 जुलाई, 2016 के दौरान भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई में "विज्ञान का संचार करना" पर आयोजित कौशल विकास कार्यक्रम में "कम्यूनीकेशन विद दि पब्लिक आर्ट एंड साइन्स ऑफ पब्लिक स्पीकिंग"
- दिनांक 8 अगस्त, 2016 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंध केन्द्र (ICAR - NCIPM), पूसा, नई दिल्ली में भाकृअनुप – राष्ट्रीय समेकित नाशीजीव प्रबंध केन्द्र (ICAR - NCIPM) के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों के लिए आईपीएम में उपयोग होने वाले सांख्यिकी टूल्स पर पाठ्यक्रम में "कम्यूनीकेटिंग एक्सपेरीमेन्टल डाटा"
- दिनांक 27 सितम्बर, 2016 को बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, बागलकोट में सहायक प्राध्यापकों के लिए चतुर्थ संकाय विकास कार्यक्रम में "बागवानी अनुसंधान एवं प्रसार परियोजनाओं का अनुसंधान परियोजना निरूपण एवं M & E "

- दिनांक 01 जनवरी, 2016 को गृह विज्ञान कॉलेज, PJTSAU, हैदराबाद में 'संचार विकास हेतु नई मीडिया : गृह विज्ञान में CAFT पर टूल्स एवं तकनीकों का मापन करना' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "ऑन-लाइन पत्रिकाओं के लिए डिजिटल मीडिया लेख लिखना"
- दिनांक 20 नवम्बर, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में 'मात्स्यिकी विकास के लिए प्रसार प्रबंधन युक्तियां' पर राज्य मात्स्यिकी विभाग के नव नियुक्त मात्स्यिकी प्रसार अधिकारियों के लिए इन्डक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम में "प्रसार सेवाओं में प्रक्रिया प्रलेखन पर अभि-उन्मुखता"
- दिनांक 26 नवम्बर, 2016 को प्रसार शिक्षा संस्थान, हैदराबाद में 'प्रसार पेशेवरों के लिए प्रोसेस मॉनीटरिंग एवं प्रलेखन दक्षता' पर ऑन-कैम्पस प्रशिक्षण में 'रिपोर्ट लेखन दक्षता'
- दिनांक 19 जनवरी, 2017 को एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में विकास पेशेवरों के लिए प्रशिक्षण कार्यप्रणाली पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में "प्रशिक्षण विधियां : संकल्पना को समझना"
- विश्वविद्यालयों के संकाय एवं अनुसंधान स्कॉलरों के लिए पेशेवर विकास कार्यक्रम (अल्पावधि पाठ्यक्रम)
- दिनांक 15 मार्च, 2017 को मौलाना आजाद उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद में वैज्ञानिक विषय-वस्तु लेखन
- दिनांक 7 जनवरी, 2017 को कृषि विज्ञान केन्द्र, विजयापुर में 'किसानों के सशक्तिकरण के लिए ग्रामीण उद्यमशीलता विकास' पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अल्पावधि पाठ्यक्रम में "एग्री क्लीनिक एंड एग्री बिजनेस सेन्टर स्कीम" पर व्याख्यान

संध्या शिर्नाय, एन.

- दिनांक 23 फरवरी, 2017 को एनआईआरडी एंड पीआर, हैदराबाद में सीआईसीटी, एनआईआरडी द्वारा ग्रामीण विकास के लिए सूचना संचार प्रौद्योगिकी पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिवारमने, एन.

- दिनांक 30 सितम्बर, 2016 को राज्य कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (SAMETI), तेलंगाना सरकार, हैदराबाद में "कृषि के लिए आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम "सप्लाई चैन मैनेजमेन्ट इन एग्रीकल्चर एंड एलॉइड कम्पोजीटिज" पर व्याख्यान प्रस्तुतिकरण
- दिनांक 17 नवम्बर, 2016 को प्रशासनिक स्टॉफ कॉलेज, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय (MAJU), हैदराबाद में "सामाजिक विज्ञान हेतु विश्लेषणात्मक तकनीकें" पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "एडवांस्ड स्टैटिस्टिकल एनालिसिस यूजिंग एसपीएसएस" पर व्याख्यान प्रस्तुतिकरण

सूर्या राठौर

- दिनांक 15 फरवरी, 2017 को जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान में गृह विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, जेएनवी विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा टिकाऊ विकास के लिए परियोजना नियोजन विषय पर कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए यूजीसी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
- दिनांक 10 फरवरी, 2017 को विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान, हैदराबाद में 'ग्रामीण विकास के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण' पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम

श्रीनिवास, के.

- दिनांक 10 अप्रैल, 2016 को भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान (ICAR - CIAE), भोपाल में अभियांत्रिकी संभाग की जेडटीएमसी बैठक में "प्रौद्योगिकियों का मूलीकरण एवं एबीआई पर जागरूकता"
- दिनांक 30 अगस्त, 2016 को भाकृअनुप – भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IHR), बंगलुरु में आईपी एवं व्यावसायीकरण पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में "प्रौद्योगिकियों का मूलीकरण"

थम्मी राजू, डी.

- दिनांक 27 सितम्बर, 2016 को CAFT, गृह विज्ञान कॉलेज, द्वारा PJTSAU, हैदराबाद में 'संचार विकास के लिए नई मीडिया – टूल्स एवं तकनीकों का मापन' पर आयोजित कार्यक्रम में "न्यू मीडिया फॉर एनीमल हस्बैन्डरी इन प्रमोशन ऑफ Ah टेक्नोलॉजीज"
- दिनांक 27 सितम्बर, 2016 को CAFT, गृह विज्ञान कॉलेज, द्वारा PJTSAU, हैदराबाद में 'संचार विकास के लिए नई मीडिया – टूल्स एवं तकनीकों का मापन' पर आयोजित कार्यक्रम में "इनोवेटिव टीचिंग मेथड्स"

वेंकटेशन, पी.

- दिनांक 29 सितम्बर, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में "कृषि विकास में युवाओं के लिए अवसर" विषय पर परामर्शी कार्यशाला
- दिनांक 28 नवम्बर, 2016 को राष्ट्रीय कृषि प्रसार प्रबंधन संस्थान (MANAGE), हैदराबाद में 'एफपीओ में परामर्श सेवाओं के लिए संस्थागत इनोवेशन्स' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के सत्र में "प्रसार में संस्थागत इनोवेशन्स"
- दिनांक 7 जनवरी, 2017 को कृषि विज्ञान केन्द्र, विजयपुरा में 'भारत में उत्पादक कम्पनियां – अनुभव एवं प्रासंगिक निहितार्थ' पर आयोजित सत्र में "किसानों के सशक्तिकरण के लिए ग्रामीण उद्यमशीलता विकास" पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद अल्पावधि पाठ्यक्रम
- दिनांक 20 – 21 मार्च, 2017 को कृषि प्रसार एवं ग्रामीण समाज विज्ञान विभाग, AC & RI, तमिल नाडु कृषि विश्वविद्यालय, मदुरै में "किसान प्रोड्यूसर कम्पनियां : टिकाऊ कार्यप्रणाली के लिए स्थिति एवं रणनीतियां" विषय पर आयोजित पारस्परिक कार्यशाला में दिनांक 21 मार्च, 2017 को "तमिल नाडु में किसान प्रोड्यूसर कम्पनियों की कार्यप्रणाली का विश्लेषण"
- दिनांक 13 मार्च, 2017 को इक्कीसेट, हैदराबाद में "एफपीओ की स्थापना में दृष्टिकोण एवं सीख" पर आयोजित कार्यशाला

चित्र

अध्याय – 8

कार्मिक

8.कार्मिक

(दिनांक 31.03.2017 तक अद्यतन)

अनुसंधान प्रबंधन पद

1. डॉ. डी. रामा राव, निदेशक (दिनांक 30.09.2016 तक)
2. डॉ. आर. कल्पना शास्त्री, संयुक्त निदेशक (एवं निदेशक (कार्यकारी) दिनांक 01.10.2016 से)

वैज्ञानिक स्टाफ

कृषि व्यवसाय प्रबंधन संभाग

3. डॉ. रंजीत कुमार
अध्यक्ष, कृषि व्यवसाय प्रबंधन संभाग (दिनांक 31.12.2016 से)
4. डॉ. जी.पी. रेड्डी
प्रधान वैज्ञानिक
5. डॉ. बी. गणेश कुमार
प्रधान वैज्ञानिक (एवं अध्यक्ष प्रभारी, एबीएम संभाग (दिनांक 01.10.2016 से 30.12.2016))
6. डॉ. एन. शिवारमने
वरिष्ठ वैज्ञानिक
7. डॉ. प्रेम चन्द मीणा
वरिष्ठ वैज्ञानिक
8. डॉ. संजीव कुमार
वैज्ञानिक

शिक्षा प्रणाली प्रबंधन संभाग

9. डॉ. एम. कृष्णन
अध्यक्ष, ईएसएम संभाग (दिनांक 01.10.2016 से)
10. डॉ. जी.आर.के. रामकृष्ण मूर्ति
प्रधान वैज्ञानिक
11. डॉ. डी. थम्मी राजू
प्रधान वैज्ञानिक
12. डॉ. एस. सेन्थिल विनयागम
प्रधान वैज्ञानिक
13. डॉ. वी.वी. सुमन्त कुमार
वैज्ञानिक (इकीसेट में प्रतिनियुक्ति पर)

प्रसार प्रणाली प्रबंधन संभाग

14. डॉ. भरत एस. सोन्ताकी
अध्यक्ष, प्रसार प्रणाली प्रबंधन संभाग (दिनांक 20.09.2016 से)
15. डॉ. (श्रीमती) संध्या शिर्नाय
प्रधान वैज्ञानिक (एवं अध्यक्ष प्रभारी प्रसार प्रणाली प्रबंधन संभाग दिनांक 19.09.2016 तक)
16. डॉ. वी.के. जयराघवेन्द्र राव

प्रधान वैज्ञानिक

17. डॉ. (श्रीमती) सूर्या राठौर
प्रधान वैज्ञानिक
18. डॉ. पी. वेंकटेशन
वरिष्ठ वैज्ञानिक

मानव संसाधन प्रबंधन संभाग

19. डॉ. आर.वी.एस. राव
प्रभारी अध्यक्ष, मानव संसाधन प्रबंधन संभाग
20. डॉ. पी. रमेश
प्रधान वैज्ञानिक (एवं अध्यक्ष प्रभारी, ईएसएम एवं एबीएम संभाग दिनांक 30.09.2016 तक)
21. डॉ. के.एच. राव
प्रधान वैज्ञानिक
22. डॉ. आलोक कुमार
प्रधान वैज्ञानिक (दिनांक 01.10.2016 से)

सूचना एवं संचार प्रबंधन संभाग

23. डॉ. एस.के. सोम, अध्यक्ष, आईसीएम संभाग
24. डॉ. ए. दण्डापानी, प्रधान वैज्ञानिक
25. डॉ. एस. रविचन्द्रन, प्रधान वैज्ञानिक
26. डॉ. एम. बालाकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक
27. डॉ. एन. श्रीनिवास राव, प्रधान वैज्ञानिक
28. डॉ. पी.डी. श्रीकांत, वरिष्ठ वैज्ञानिक
29. श्री बी.एस. यशवन्त, वैज्ञानिक

अनुसंधान प्रणाली प्रबंधन संभाग

30. डॉ. आई सेकर, अध्यक्ष, आरएसएम संभाग
31. डॉ. के. श्रीनिवास, प्रधान वैज्ञानिक
32. डॉ. के. करीमुल्ला, प्रधान वैज्ञानिक
33. डॉ. एम.बी. दस्तागिरी, प्रधान वैज्ञानिक
34. डॉ. पी. कृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक (दिनांक 30.09.2016 से)
35. डॉ. (श्रीमती) मंजू गेरार्ड, प्रधान वैज्ञानिक (दिनांक 14.10.2016 से)
36. श्री एस.पी. सुभाष, वैज्ञानिक

प्रशासनिक स्टाफ

संयुक्त निदेशक (प्रशासन) एवं रजिस्ट्रार

1. श्री आशीष राय

मुख्य वित्त व लेखा अधिकारी

2. श्री एस. जॉर्ज

सहायक निदेशक (राजभाषा)

3. डॉ. जे. रेणुका

प्रशासनिक अधिकारी

4. श्री डब्ल्यू. श्रीनिवास भट्ट

सहायक प्रशासनिक अधिकारी

5. श्री पी.जी. कोहाद

6. श्री पी. नीलकंठम

7. श्री के.आर. घनश्याम

निजी सचिव

8. श्री एन. रघुनाथ

9. श्री पी. आनंद कुमार

10. श्रीमती ए. मर्सी

कनिष्ठ लेखा अधिकारी

11. श्रीमती एन. विजयलक्ष्मी

सहायक

12. श्री एम. दिनेश

13. श्री टी. श्रीनिवास

14. श्री जी. राज रेड्डी

15. श्री सी. फनी राज

16. श्रीमती बी. पदमा सरोजा

17. श्री पी. श्रीनिवासु

18. श्रीमती जी. जेसी इक्लीसिया

19. श्री आर. चन्द्र बाबू

20. श्री सी. जूलियस सैम्युल

निजी सहायक

21. श्री एम. वेंकटेश

22. श्री टी.वी. रामदास

23. श्रीमती टी. वाणीश्री (UIDAI के साथ प्रतिनियुक्ति पर)

24. श्रीमती वाई. अनुराधा

25. श्रीमती एस. सेशा साई

26. श्रीमती रुक्मिणी अम्मल

वरिष्ठ लिपिक

27. श्री एम. श्रीधर (UIDAI के साथ प्रतिनियुक्ति पर)

28. श्रीमती वाई. गायत्री
29. श्री पी. वेंकटेश
30. श्री एम.के. सैम्सन
31. श्रीमती राजश्री बोकडे
32. श्री के. सूर्यनारायण

आशुलिपिक ग्रेड – 3

33. श्रीमती के. राधा सुजाता
34. श्रीमती एस. शान्ति
35. श्रीमती वी. शैलजा

कनिष्ठ लिपिक

36. श्री. पी. स्वामी
37. श्री एम. नरसिंग राव
38. श्री एम. अशोक
39. श्री सी. भिक्षापति

तकनीकी

ग्रेड टी-9 (श्रेणी-3)

1. डॉ. वी. मुरली, मुख्य तकनीकी अधिकारी (उद्यान अधीक्षक)
2. डॉ. ए. देबनाथ, मुख्य तकनीकी अधिकारी (चिकित्सा अधिकारी)
3. श्री जमीर अहमद, मुख्य तकनीकी अधिकारी (मैनेजर (एचएस))
4. डॉ. Ch. जनार्दन राव, मुख्य तकनीकी अधिकारी (वीडियो कैमरामैन)
5. डॉ. एम.ए. बासित, मुख्य तकनीकी अधिकारी (कनिष्ठ फार्म अधीक्षक)

ग्रेड टी (7-8) (श्रेणी-3)

6. श्री के.वी. कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (सांख्यिकीय सहायक)
7. श्री पी. नामदेव, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (ग्राफिक एवं विज्युलाइजर)
8. श्री पी. विजेन्द्र रेड्डी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (अनुसंधान सहायक)
9. श्री सोहैल अहमद खान, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (कनिष्ठ इंजीनियर – सिविल)

ग्रेड टी-6 (श्रेणी-3)

10. श्रीमती जी. अनीजा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (सहायक सम्पादक)
11. श्री पी. मोहन सिंह, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (कम्प्यूटर सहायक)
12. श्री श्याम बहादुर, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (कैटरिंग प्रभारी)
13. श्री एम. शेखर रेड्डी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (डार्क रूम सहायक)
14. डॉ. अहीर लक्ष्मण महारू, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (बागवानी तकनीकी सहायक)
15. श्री एम. रवि, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (फोटोग्राफर व आर्टिस्ट)
16. श्री रवि विश्वनाथन, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (सम्पादक एवं सूचना अधिकारी)

ग्रेड टी-5 (श्रेणी-2)

17. श्री एन. नरेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (वीसीआर एवं टेलि साइन ऑपरेटर)
18. श्रीमती सावित्री मुरली, तकनीकी अधिकारी (कैटरिंग प्रभारी)
19. श्री बी.एस.एन. मूर्ति, तकनीकी अधिकारी (तकनीशियन इलेक्ट्रीकल)
20. श्री के. ओबुलापति, तकनीकी अधिकारी (तकनीशियन इलेक्ट्रीकल)
21. श्री एम.के. सोनकुसारे, तकनीकी अधिकारी (इलेक्ट्रीकल)
22. श्री एम.के. शम्सुद्दीन, तकनीकी अधिकारी (तकनीशियन इलेक्ट्रीकल)
23. श्री के. शिवय्या, तकनीकी अधिकारी (तकनीशियन)
24. श्री डी. राजगोपाल राव, तकनीकी अधिकारी (मीडिया ऑपरेटर)
25. श्री एस. राजकुमार, तकनीकी अधिकारी (इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर ऑपरेटर)
26. श्री एस. सुन्दर राज, तकनीकी अधिकारी (मीडिया ऑपरेटर)
27. श्री टी. लक्ष्मण, तकनीकी अधिकारी (ड्राइवर)

ग्रेड टी-4 (श्रेणी-2)

28. श्री ACPरामा नागेश्वर राव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (लाइनमैन)
29. श्री पी. श्रीनिवास, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्रूफ रीडर)
30. श्री जी. मुथायलु, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (ड्राइवर)
31. श्री एन. अशोक, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (ड्राइवर)
32. श्री पी. गायकवाड, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (बाइन्डर)
33. श्री एन. प्रभाकर, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (प्लम्बर)
34. श्री एम. श्रीनिवास राव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (पम्प ड्राइवर)
35. श्री के.वी. नरसिम्हा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (कारपेन्टर एवं पेन्टर)

ग्रेड टी-3 (श्रेणी-2)

36. श्री बी.के. वेंकटराम, तकनीकी सहायक (पम्प ड्राइवर)
37. श्री आर. सिवा प्रसाद, तकनीकी सहायक (ड्राइवर)

कुशल सहायी स्टाफ

1. श्री एस. स्वामी, सहायक गेस्टेटनर ऑपरेटर
2. श्री श्रीगिरि वेंकटेशम (जेरॉक्स मशीन ऑपरेटर)
3. श्री फूल कुमार
4. श्री पी. बलराज
5. श्रीमती बी. सन्थम्मा
6. श्रीमती एस. शकुंतला
7. श्रीमती बी. भरतम्मा
8. श्री एस. जंगैय्या
9. श्री कुम्बा सत्यनारायण
10. श्री के. पेन्टाह
11. श्री पी. यादह
12. श्री जी. पेन्टय्या
13. श्री जे. चन्द्रय्या

14. श्री एम. कृष्णय्या
15. श्री आर. सतय्या
16. श्रीमती इन्दिरापति भरतम्मा
17. श्री सी. चन्द्रमौलि
18. श्री जी. दसरथ
19. श्रीमती नाजिया परवीन
20. श्री एल. सत्यनारायण
21. श्रीमती एन. सुकुनम्मा
22. श्रीमती एम. यादम्मा
23. श्रीमती सी. नरसुबाई
24. श्रीमती सी. कौसल्या
25. श्री एम. गणेश कुमार
26. श्री चिलुमुला वेंकटेशम
27. श्री श्रीगिरि नरसिम्हा
28. श्री क्यासम सत्यनारायण
29. श्री बी. प्रेमदास
30. श्रीमती ए. सरोजा
31. श्री एस. नायब रसूल
32. श्री बी. अशोक
33. श्री के. डेनियल

स्थानान्तरण

1. श्री बी.डी. फंसल
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का स्थानान्तरण दिनांक 07.06.2016 (पूर्वाह्न) से भाकृअनुप – केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CRIDA), हैदराबाद किया गया।
2. श्री डी.डी. वर्मा
लेखा नियंत्रक का स्थानान्तरण दिनांक 10.06.2016 (अपराह्न) से भाकृअनुप – राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (ICAR - NDRI), करनाल में किया गया।
3. श्री देबाशीस मोइत्रा
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी का स्थानान्तरण दिनांक 13.06.2016 (अपराह्न) से भाकृअनुप – भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR - IVRI), इज्जतनगर में किया गया।
4. डॉ. मनोज पी. सैम्युल
प्रधान वैज्ञानिक (कृषि व्यवसाय प्रबंधन – रणनीतिपरक प्रबंधन) का स्थानान्तरण दिनांक 18.07.2016 (अपराह्न) से भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान (ICAR - CIFT), कोच्चि में अध्यक्ष, इंजीनियरिंग संभाग के परचयन होने पर किया गया।

नियुक्ति/नया कार्यभार ग्रहण

1. श्री डब्ल्यू. श्रीनिवास भट्ट
प्रशासनिक अधिकारी ने भाकृअनुप – भारतीय तेल ताड़ अनुसंधान संस्थान (ICAR - IIOPR), पेदवेगी से स्थानान्तरण होने पर दिनांक 17.05.2016 (पूर्वाह्न) को कार्यभार ग्रहण किया।

2. श्री आशीष राय
संयुक्त निदेशक (प्रशासन) एवं रजिस्ट्रार ने भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई से स्थानान्तरण होने पर दिनांक 30.05.2016 (पूर्वाह्न) में कार्यभार ग्रहण किया।
3. श्री एस. जॉर्ज
मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी ने भाकृअनुप – राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (ICAR - NDRI), करनाल से स्थानान्तरण होने पर कार्यभार ग्रहण किया।
4. श्री यशवंत बी.एस.
वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी) ने दिनांक 05.07.2016 को कार्यभार ग्रहण किया।
5. डॉ. भरत एस. सोन्ताकी
प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) ने अध्यक्ष, प्रसार प्रणाली प्रबंधन संभाग के पद पर चयन होने पर दिनांक 20.09.2016 (पूर्वाह्न) को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
6. डॉ. नकेल्ला श्रीनिवास राव
वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR - IASRI), नई दिल्ली से संस्थान में प्रधान वैज्ञानिक (प्रसार सूचना प्रणाली) के रूप में चयन होने पर दिनांक 26.09.2016 (पूर्वाह्न) को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
7. डॉ. पी. कृष्णन
वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप – केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (ICAR - CIARI), पोर्ट ब्लेयर ने प्रधान वैज्ञानिक (कृषि अनुसंधान प्रबंधन) के रूप में चयन होने पर दिनांक 30.09.2016 (पूर्वाह्न) को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
8. डॉ. एम. कृष्णन
प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप – केन्द्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान (ICAR - CIFE), मुम्बई ने अध्यक्ष, शिक्षा प्रणाली प्रबंधन संभाग के रूप में चयन होने पर दिनांक 01.10.2016 (पूर्वाह्न) को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
9. डॉ. आलोक कुमार
वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान (ICAR - IINRG), रांची ने प्रधान वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) के रूप में चयन होने पर दिनांक 01.10.2016 (पूर्वाह्न) को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
10. डॉ. मंजू गेराई
एसोसिएट प्रोफेसर, SHIATS, इलाहाबाद ने प्रधान वैज्ञानिक (प्रौद्योगिकी/प्रबंधन) के रूप में चयन होने पर दिनांक 14.10.2016 को अपना कार्यभार ग्रहण किया।
11. डॉ. रंजीत कुमार
प्रधान वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र) ने अध्यक्ष, कृषि व्यवसाय प्रबंधन संभाग के रूप में चयन होने पर दिनांक 31.12.2016 (पूर्वाह्न) से अपना कार्यभार ग्रहण किया।

पदोन्नति

1. डॉ. एम. बालाकृष्णन, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि में कम्प्यूटर अनुप्रयोग) की पदोन्नति सीएस के तहत दिनांक 29.12.2014 से प्रधान वैज्ञानिक के पद पर की गई।
2. श्री बी.के. वेंकटराम, वरिष्ठ तकनीशियन (पम्प ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2014 से तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
3. श्री आर. सिवा प्रसाद, वरिष्ठ तकनीशियन (ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2015 से तकनीकी सहायक के पद पर की गई।

4. श्री एस. सुन्दर राज, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (मीडिया ऑपरेटर) की पदोन्नति दिनांक 19.02.2016 से तकनीकी अधिकारी के पद पर की गई।
5. श्री टी. लक्ष्मण, वरिष्ठ तकनीकी सहायक (ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से तकनीकी अधिकारी के पद पर की गई।
6. श्री के. वीरा नरसाह, तकनीकी सहायक (कारपेन्टर एवं पेन्टर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
7. श्री एम. श्रीनिवास राव, तकनीकी सहायक (पम्प ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
8. श्री एन. प्रभाकर राव, तकनीकी सहायक (प्लम्बर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
9. श्री प्रशान्त गायकवाड़, तकनीकी सहायक (बाइन्डर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
10. श्री जी. मुथायलु, तकनीकी सहायक (ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
11. श्री एन. अशोक, तकनीकी सहायक (ड्राइवर) की पदोन्नति दिनांक 29.06.2016 से वरिष्ठ तकनीकी सहायक के पद पर की गई।
12. श्री के.आर. घनश्याम, सहायक की पदोन्नति सीमित विभागीय प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से दिनांक 30.09.2016 से सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर की गई।

सेवानिवृत्ति

1. श्री एल. रमेश, तकनीकी अधिकारी (इलेक्ट्रीशियन एवं प्लम्बर) दिनांक 30.06.2016 को सेवानिवृत्त हुए।
2. श्रीमती जी. अनसुया, कुशल सहायी स्टाफ दिनांक 30.06.2016 को सेवानिवृत्त हुईं।
3. श्रीमती टी. जंगम्मा, कुशल सहायी स्टाफ दिनांक 31.08.2016 को सेवानिवृत्त हुईं।
4. डॉ. डी. रामा राव, निदेशक दिनांक 30.09.2016 को सेवानिवृत्त हुए।

प्रतिनियुक्ति

1. श्री पी. वेंकटेश, वरिष्ठ लिपिक को दो वर्ष की अवधि के लिए भाकृअनुप – अटारी, हैदराबाद में प्रतिनियुक्ति पर सहायक के पद पर कार्यभार ग्रहण करने के लिए दिनांक 14.12.2016 (अपराह्न) को कार्यमुक्त किया गया।

शोक संदेश

1. श्री खालिद, कुशल सहायी स्टाफ का दिनांक 08.08.2016 को आकस्मिक निधन हुआ।

नार्म

naarm

ट्रेडमार्क संख्या : 2630991
